॥ ओ३म् ॥

वैदिक संसार

वर्ष : ७ अंक : ५ मार्च : २०१८ मूल्य : २५/-

योगश्चित्त वृत्ति निरोधः

चित्त की वृत्तियों का निरोध करना ही योग है...

निर्णय करें : मन के वशीभुत होने में भलाई है या मन को वशीभुत करने में?

क्योंकि : मन के हारे हार है, मन के जीते जीत-**मन साधे : स्वास्थ्य सधे**

समस्त मनुष्यों को मन को वशीभुत करने का एक मात्र उपाय

महर्षि पतंजलि द्वारा प्रणित अष्टांग सूत्रानुसार **क्रियात्मक योगाभ्यास**

आर्य जगत् की सम्पन्न विविध गतिविधियों की चित्रावली

स्वामी शान्तानन्द जी सरस्वती, गुरूकुल भवानीपुर (गुज.) द्वारा गोवा के मडगांव में वैदिक सत्संग शिविर के माध्यम से वैदिक नाद गुंजाया गया, चित्रों में स्वामी जी प्रवचन करते हुवे एवं उपस्थित शिविरार्थीगण

महर्षि दयानन्द मठ रोहतक, हरियाणा में आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के आयोजन में मुख्य वक्ता के रूप में प्रवचन करते हुए आचार्य सोमदेव जी अजमेर

दिनांक २४ से २८ फरवरी तक ५ दिवसीय श्री भगवत वेद कथा का आयोजन नगर कानड,जिला आगर (म.प्र.) के बस स्टेण्ड पर हुआ। जिसमें प्रसिद्ध भजनोपदेशिका सुश्री अंजलि जी आर्या के द्वारा संगीतमय वेद कथा प्रस्तुत की गई। कथा में मधुर भजनों के साथ वेदानुकुल उपदेश प्रस्तुत किये गए । कथा का श्रवण करने नगर सहित आसपास के ग्रामीण क्षेत्र से बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया। २८ फरवरी को हुए समापन पर समिति के सदस्य मोहनलाल आर्य, विरेन्द्रसिंह ठाकुर, दरबारसिंह आर्य, मनोज गुप्ता, कन्हैयालाल परमार, मनोहरलाल शर्मा, रामचंद्र वर्मा, जगदीश आर्य, महेश आर्य, आदि के द्वारा दीदी का शाल व श्रीफल से सम्मान किया गया। समिति अध्यक्ष मोहनलाल आर्य के निवेदन पर आगामी वर्ष में पुनः १ से ५ फरवरी २०१९ तक अंजलि आर्य की कथा आयोजित करने का आग्रह किया । जिसमें दीदी के द्वारा स्वीकृती दी गई। कथा आयोजक समिति के अलावा स्थानीय आर्य समाज का भी सराहनीय सहयोग रहा।

क्षेत्र में आर्य समाज को जागृत करने वाले श्री शिवसिंह जी आर्य व पं.काशीराम जी आर्य अनल के साथ आर्य वीर।

सुश्री अंजलि आर्या का सम्मान भगवत वेद कथा के समापन पर समिति सदस्यों द्वारा किया गया

कथा में उपस्थित बड़ी संख्या में महिला व पुरूष।

प्रस्तुति देते सुश्री अंजलि जी आर्या।

अंजलि जी का स्वागत करते हुए वैदिक संसार के प्रकाशक।

प्राणी मात्र के हितकारी वैदिक धर्म का सजग प्रहरी

वैदिक संसार

आरएनआई-एमपीएचआईएन २०१२/४५०६९
डाक पंजीयन-एमपी/आईसीडी/१४०५/२०१५-१७
वर्ष-७, अंक-५
अवधि-मासिक, भाषा-हिन्दी
प्रकाशन आंग्ल दिनांक : २५ मार्च, २०१८
आर्ष तिथि-चैत्र मास, शुक्ल पक्ष, अष्टमी
सृष्टि संवत्-१,९७,२९,४९, ११९
शक संवत्- १९३९
विक्रम संवत्- २०७४, दयानन्दाब्द-१९४

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक
सुखदेव शर्मा, इन्दौर- ०९४२५०६९४९१
(सायं ६ बजे से प्रात: ८ बजे तक मौन काल)

सम्पादक
गजेश शास्त्री, इंदौर (म.प्र.)

आवरण एवं शब्द संयोजन
लक्ष्य ग्राफिक्स - ९३०१४३३२११

प्रकाशन स्थल एवं पत्र व्यवहार का पता
१२/३, संविद नगर, इंदौर-१८, मध्यप्रदेश

वैदिक संसार का आर्थिक आधार

संरक्षक (१५ वर्ष)	२५०००/-
आजीवन सहयोग (१५ वर्ष)	२१००/-
त्रैवार्षिक सहयोग	६००/-
वार्षिक सहयोग	२५०/-
एक प्रति	२५/-

अन्य सहयोग-स्वैच्छानुसार
बैंक खाता धारक - वैदिक संसार
भारतीय स्टेट बैंक, शाखा-ओल्ड पलासिया, इन्दौर
करंट खाता क्र. ३२८५९५९२४७९
आईएफएस कोड-एसबीआईएन-०००३४३२

अध्यात्म के विषय में व्याप्त अन्धकार को दूर करने एवं वेदोक्त ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशमान करने में सहायक ज्योति पुंज-वैदिक संसार

अनुक्रमणिका

विषय	शब्द संग्रहकर्ता	पृष्ठ.क्र.
वेद मन्त्र-भावार्थ	वैदिक संसार	०४
महत्वपूर्ण पर्व, दिवस एवं जयन्ति-पुण्यतिथि	श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम्	०४
वैदिक संसार के उद्देश्य	वैदिक संसार	०५
धन की तीन गति-उपभोग, दान अन्यथा...	सम्पादकीय	०५
बाबा गान्धी की पाती	आर्य मोहनलाल दशौरा	०५
लघुकथा-रद्दी वाला लड़का	ओमप्रकाश बजाज.	०६
रावण नहीं मरा	आर्य पी.एस. यादव	०७
बाबाओं ने अच्छे सन्तों की भद्द कर दी	देशराज आर्य	०८
आर्य मन की पीड़ा	नन्दराम आर्य	०९
अन्तिम प्रार्थना	डॉ. लक्ष्मीनिधि	१०
हमारी महान् विभूतियां- वीरांगना झलकारी...	डोंगरलाल पुरुषार्थी	११
आचार्य ज्ञानेश्वर आर्य-मेरे सर्वश्रेष्ठ मित्र	महात्मा चैतन्य मुनि	१३
ऋषिवर दयानन्द के उपकार	सत्यप्रकाश आर्य	१६
स्त्रियों को वेदाध्ययन का अधिकार है-ऋग्वेद	शिवनारायण उपाध्याय	१७
वैज्ञानिक दृष्टि से वेदमन्त्र की व्याख्या-भूमि...	बाबूलाल जोशी	१९
शूचिर्यज्ञ रूप मम जीवन बने	दयाशंकर गोयल	१९
स्वप्न	शान्ति स्वरूप गुप्त	२०
आध्यात्मिक जिज्ञासा-समाधान	आ.सोमदेव आर्य	२३
मन साधे : स्वास्थ्य सधे	डॉ. जीवनलाल गान्धी	२४
प्रेमचन्द का शनिश्चरी प्रसंग	सुरेश सिंह	२७
पुस्तक समीक्षाएं-वेद पथ एवं वैदिक...	संकलित	२८
पूर्णता की ओर अग्रसर हम सब	उम्मेदसिंह विशारद	२९
स्वर्ग कामो यजेत	नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'	३१
क्या आपने नेत्रदान किया?	श्रीमती विमलादेवी	३२
ठूंठ के ठाठ और बंदर बांट	देवनारायण भारद्वाज	३३
बांझ कार्यशैली: दिखावटी व्यवस्तता	रामनिवास गुणग्राहक	३५
गलत सोच	आ. श्रुति भास्कर	३७
खुशहाल लेखावली- संक्षिप्त परिचय	खुशहालचन्द्र आर्य	३८
आर्य परिवार युवक-युवती परिचय सम्मेलन	अर्जुनदेव चड्ढा	३९
प्रस्तावित एवं सम्पन्न गतिविधियां	संकलित	४०
शोक-सूचनाएं	संकलित	४२

वेद मन्त्र एवं भावार्थ

ओ३म् य एकश्चर्षणीनां वसूनामिरज्यति।
इन्द्रः पञ्च क्षिती नाम्।। ऋ.- १.७.९

भावार्थ- जो सबका स्वामी अन्तरर्स्यामी व्यापक और सब ऐश्वर्य का देने वाला, जिसमें कोई दूसरा ईश्वर और जिसको किसी दूसरे की सहाय की इच्छा नहीं है, वहीं सब मनुष्यों को इष्ट बुद्धि से सेवा करने योग्य है। जो मनुष्य उस परमेश्वर को छोड़ के दूसरे इष्टदेव को मानता है, वह भाग्यहीन बड़े-बड़े घोर दुःखों को सदा प्राप्त होता है।

श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम् अनुसार आर्यावर्त्त के माह अप्रैल २०१८ के महत्वपूर्ण पर्व एवं दिवस

११ गते	माधव मास	१९४० शक स.	चैत्र कृष्ण प्रतिपदा २०७५	१ अप्रैल	चित्रा-१८:३३, गुरु तेग बहादुर जयन्ति
१३ गते	माधव मास	१९४० शक स.	चैत्र कृष्ण तृतीया २०७५	३ अप्रैल	छत्रपति शिवाजी पुण्यतिथि
१७ गते	माधव मास	१९४० शक स.	चैत्र कृष्ण सप्तमी २०७५	७ अप्रैल	पूर्वाषाढ़-२५:०७, विश्व स्वास्थ्य दिवस
१८ गते	माधव मास	१९४० शक स.	चैत्र कृष्ण अष्टमी २०७५	८ अप्रैल	मंगल पाण्डे एवं बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय पुण्यतिथि
२० गते	माधव मास	१९४० शक स.	चैत्र कृष्ण दशमी २०७५	१० अप्रैल	पंचक प्रारम्भ-२१:४५, मोरार जी देसाई पुण्यतिथि
२१ गते	माधव मास	१९४० शक स.	चैत्र कृष्ण दशमी २०७५	११ अप्रैल	महात्मा ज्योति बा फूले जयन्ति
२३ गते	माधव मास	१९४० शक स.	चैत्र कृष्ण द्वादशी २०७५	१३ अप्रैल	प्रदोष व्रत
२४ गते	माधव मास	१९४० शक स.	चैत्र कृष्ण त्रयोदशी २०७५	१४ अप्रैल	डॉ. भीमराव आम्बेडकर जयन्ति, महर्षि रमण पुण्यतिथि
२५ गते	माधव मास	१९४० शक स.	चैत्र कृष्ण चतुर्दशी २०७५	१५ अप्रैल	गुरु नानकदेव, गुरु अर्जुनदेव तथा दानवीर भामाशाह (जैन) ज.
२६ गते	माधव मास	१९४० शक स.	चैत्र कृष्ण अमावस्या २०७५	१६ अप्रैल	क्षय तिथि प्रतिपदा-२९:४९, पंचक समाप्त - २१:४२
२७ गते	माधव मास	१९४० शक स.	वैशाख शुक्ल द्वितीया २०७५	१७ अप्रैल	डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन पुण्यतिथि
२९ गते	माधव मास	१९४० शक स.	वैशाख शुक्ल चतुर्थी २०७५	१९ अप्रैल	महात्मा हंसराज जयन्ति
३० गते	माधव मास	१९४० शक स.	वैशाख शुक्ल पंचमी २०७५	२० अप्रैल	मृगशिरा-१६:३८, वृषभ सक्रान्ति-०८:४३, आ. शंकर जयन्ति
०१ गते	शुक्र मास	१९४० शक स.	वैशाख शुक्ल षष्ठी २०७५	२१ अप्रैल	महात्मा हंसराज पुण्यतिथि
०२ गते	शुक्र मास	१९४० शक स.	वैशाख शुक्ल सप्तमी २०७५	२२ अप्रैल	पृथ्वी दिवस
०३ गते	शुक्र मास	१९४० शक स.	वैशाख शुक्ल अष्टमी २०७५	२३ अप्रैल	पुष्य -२२:२६
०४ गते	शुक्र मास	१९४० शक स.	वैशाख शुक्ल नवमी २०७५	२४ अप्रैल	रामधारी सिंह दिनकर पुण्यतिथि, राष्ट्रीय पंचायत राज दिवस
०६ गते	शुक्र मास	१९४० शक स.	वैशाख शुक्ल एकादशी २०७५	२६ अप्रैल	पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जयन्ति
०८ गते	शुक्र मास	१९४० शक स.	वैशाख शुक्ल त्रयोदशी २०७५	२८ अप्रैल	हस्त-२५:५७, चित्रा-२६:४०
०९ गते	शुक्र मास	१९४० शक स.	वैशाख शुक्ल चतुर्दशी २०७५	२९ अप्रैल	भारतरत्न पं. मदनमोहन मालवीय पुण्यतिथि
१० गते	शुक्र मास	१९४० शक स.	वैशाख शुक्ल पूर्णिमा २०७५	३० अप्रैल	बुद्ध पूर्णिमा, वैशाख पूर्णिमा

भारत के एकमात्र वैदिक पंचांग से

नया पंचांग छप चुका है कृपया सम्पर्क करें

किसी भी शंका समाधान एवं पंचांग प्राप्ति हेतु आ. दार्शनेय लोकेश, ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.) से मो. ०९४१२३५४०३६ पर सम्पर्क करें।

अन्य दैन्नदिनियों से प्राप्त कुछ विशेष दिवस

०१ अप्रैल बैंक वार्षिक दिवस
०६ अप्रैल महाशय राजपाल बलिदान दिवस
०७ अप्रैल अन्ध रोग निवारण दिवस
०८ अप्रैल विश्व बंजारा दिवस
१० अप्रैल गुरु हरकिशन पुण्यतिथि, डॉ. हेनीमेन एवं हाटकेश्वर जयन्ति
१३ अप्रैल जलियांवाला बाग नृशंस हत्याकाण्ड दिवस
१४ अप्रैल अग्निशामक दिवस
१७ अप्रैल गुरु अंगददेव जयन्ति
१८ अप्रैल विश्व धरोहर दिवस, तात्या टोपे बलिदान दिवस
२० अप्रैल सन्त सूरदास जयन्ति
२३ अप्रैल विश्व क्षय रोग दिवस
२४ अप्रैल सन्त भूरा भगत जयन्ति
२६ अप्रैल सिक्किम राज्य स्थापना दिवस
२८ अप्रैल छत्रपति शिवाजी जयन्ति

गोवा में वैदिक सत्संग शिविर सम्पन्न

सन्त श्री ओधवराम वैदिक गुरुकुल भवानीपुर के आचार्य एवं **दर्शन योग महाविद्यालय** आर्यवन रोजड़ के स्नातक **स्वामी शान्तानन्द जी सरस्वती** के नेतृत्व में पाटीदार भवन, दवरलीम, मडगांव, गोवा में **त्रिदिवसीय वैदिक सत्संग शिविर** का सुन्दर आयोजन किया गया। इस शिविर में अहमदाबाद, भुज, राजकोट, मोडासा, मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तरप्रदेश आदि स्थानों से लगभग २५० शिविरार्थियों ने भाग लिया। राजकोट से पधारे श्री अमृतभाई परमार के संयोजन में एवं अहमदाबाद के श्री संजयभाई प्रजापति (वैदिक संस्थान ओढ़व) के सहयोग से तथा श्री लालचन्द आर्य के संचालन में शिविरार्थियों ने स्वामी शान्तानन्द जी से ईश्वर वैदिक स्वरूप, जीवात्मा का शुद्ध स्वरूप, संसार उत्पत्ति की प्रक्रिया, क्रियात्मक योग-ध्यान का प्रशिक्षण, आत्म निरीक्षण आदि दार्शनिक विषय में ज्ञान प्राप्त किया। छत्तीसगढ़ से पधारे श्री वल्लभमुनि वानप्रस्थी से सुमधुर भजनों का रसपान भी किया। वेद मन्त्रों की सुन्दर व्याख्या, श्लोकों का मधुर गायन, आसन, व्यायाम, प्राणायाम एवं हवन (यज्ञ) के प्रशिक्षण होकर अनेक शिविरार्थियों ने दैनिक साप्ताहिक, पाक्षिक अथवा मासिक यज्ञ करने का तथा सभी ने नियमित योग-ध्यान उपासना का संकल्प लिया। शिविर की सुचारू रूप से व्यवस्था श्री शान्तिभाई पटेल व उनके सुपुत्र किरणभाई व उनके सहयोगियों ने की।

वैदिक संसार के उद्देश्य

■ महान् योगी, संन्यासी, महर्षि, अखण्ड ब्रह्मचारी, वेद प्रतिष्ठापक, तत्वज्ञानी, युगदृष्टा, स्व राष्ट्रप्रेमी, स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक, नवजागरण के सूत्रधार, शोषित-पीड़ित वर्ग एवं महिला उद्धारक, समाज सुधारक, खण्डन-मण्डन के प्रणेता, अन्धविश्वास नाशक, पाखण्ड खण्डनी ध्वजा वाहक, आर्य समाज संस्थापक, अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश एवं वेदानुकूल सद्साहित्य के रचयिता, दयालु, दिव्य, अमर बलिदानी दयानन्द के समस्त मानव जाति पर किए गए उपकारार्थ कार्यों को गतिमान बनाए रखने हेतु प्रयत्न करना।

■ वेदों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने हेतु वैदिक सिद्धान्तों, ऋषि-मुनियों एवं ऋषि दयानन्द प्रणीत सन्देशों को प्रकाशित करना।

■ आमजन में व्याप्त अज्ञानता, धर्मान्धता, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियों के विरुद्ध जन जागरण कर उन्मूलन हेतु प्रयास करना।

■ आर्य (श्रेष्ठ) विद्वान् महानुभावों के मन्तव्यों, सन्देशों का प्रचार-प्रसार कर प्रतिजन को उपलब्ध करवाना।

■ आवश्यक सूचनाओं, गतिविधियों, समाचारों को प्रतिजन तक पहुंचाने का प्रयास करना। ●

सम्पादकीय

धन की तीन गति उपभोग, दान अन्यथा विनाश

दानवीरों की भूमि पर हड़पबाजों ने जन्म ले लिया

ललित मोदी, विजय माल्या और अब नीरव मोदी, मेहुल चौकसी गत दिनों के वे चर्चित नाम हैं जो थोड़े बहुत नहीं! बल्कि हजारों करोड़ रुपए का चूना लगाकर, कानून को धता बताकर, बेबश भारत सरकार को मुंह चिढ़ाते हुए विदेशों में मजे मार रहे हैं ये तो वे बड़ी मछलियां हैं जो कुछ अधिक ही कुख्यात हो गई हैं, वैसे तो ये वे नाम है जो व्यवसायी है, किन्तु राजनीति क्षेत्र के भारत के पूर्व प्रधानमन्त्री राजीव गांधी के दामाद राबर्ट वाडरा, पूर्व केन्द्रीय वित्त मन्त्री पी. चिदम्बरम के पुत्र कार्ति चिदम्बरम, पंजाब के मुख्यमंत्री अमरिन्दर सिंह के पुत्र, तमिलनाडू के पूर्व मुख्यमंत्री करुणानिधि की पुत्री कनिमोझी, पूर्व दूरसंचार मंत्री ए.राजा, बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव के परिवार का संभवत: कोई ही सदस्य ऐसा हो, जिस पर दोषारोपण न हो आदि कइयों के नाम भी समय-समय पर चर्चा में आ चुके हैं। ये तो वे चेहरे हैं जो उजागर हो चुके हैं हो सकता है कि इनसे भी बड़े-बड़े जादूगर हो जो परदे के पीछे आज भी सक्रिय हो और इनके अतिरिक्त ऐसे भी अनेक होंगे जिनके साथ कोई सुप्रसिद्ध हस्ती का सम्बन्ध न होने से वे समाचार पत्रों की सुर्खियों में स्थान नहीं पा पाये। वैसे इस धरा पर पूर्व में नटवरलाल और हर्षद मेहता जैसे ठग और घोटालेबाज भी हुए हैं। नटवरलाल ने तो इतनी ख्याति अर्जित की है उसका नाम ठगों के साथ में उपाधि रूप में आज भी प्रयुक्त होता है तथा उस पर चित्रपट कथा (फिल्म) भी बन चुकी है किन्तु वर्तमान के घोटालेबाजों के समक्ष ये सब बौने हो गए हैं। इन्हें तो ठीक देश के दुश्मन मुम्बई हमलों का मास्टर माइंड दाऊद इब्राहिम, मसूद अजहर, हाफिज सईद जैसे कुख्यात अपराधियों को वर्तमान घोटालेबाजों ने नेपथ्य में धकेल दिया है। वर्तमान घोटालेबाजों ने इतनी ख्याति अर्जित कर समाचार पत्रों में अपना कब्जा इस प्रकार जमा लिया है कि भारत सरकार की पकड़ से दूर बैठे कुख्यात अपराधियों को सरकार ही नहीं आम जन भी भूलने लगा है।

चर्चा के प्रारंभ में लिखे गए नाम तो वे लोग हैं जो व्यवसायी कहलाते हैं ये लोग धन्धे में धर्म को नहीं घसीटते। जिन्होंने अपना धर्म धन को बना रखा है। इनके लिए उचित-अनुचित की कोई परिभाषा नहीं है। ना ही इनमें कोई संवेदनाएं होती हैं कि जो धन में हड़प रहा हूं वह मेरे देश का धन है, वह मेरे देश के विकास को बाधित करेगा अथवा मेरे कृत्य से मेरे देश में अव्यवस्था उत्पन्न होगी, अनेक लोग बेरोजगार होकर

बाबा गांधी की पाती

मेरे प्यारे देश के कर्णधारों, भारत माता के सपूत भाई।
तुम्हारे पूर्वजों ने व हमने मिलकर आजादी पाई।।
उन्होंने खून बहाया, हमने बगावत की चलाई आंधी।
पाकर स्वतन्त्रता मुझे घोषित किया, राष्ट्रपिता गांधी।
मुझे चाह न थी पद, नाम की लालसा, सिर्फ सपना था,
हो देश में राम राज, क्योंकि अब सब अपना था।।
अंग्रेजों ने मुझे खूब झेला, आप झेल न पाये।
विभाजन में खून खराबा, भाईचारा सह न पाये।।
मुझे जाने का गम नहीं, पर विश्वास था आप पर।
हो अमन और सू-राज का सब भार, है आप पर।।
परन्तु चारो तरफ हाहाकार, कोई सुरक्षित नहीं है।
आतंकवाद, भ्रष्टाचार, बम ब्लास्ट कोई रक्षित नहीं है।।
महंगाई, गबन और घोटालों से सभी त्रस्त हैं।
इस पर भी नेता-अभिनेता, लुटेरे सभी मस्त हैं।।
भारत माता की जय बोल झण्डे फाड़े जा रहे हैं।
तोड़ फोड़, बंद जाम के मन्त्र पढ़े जा रहे हैं।।
इतना चरित्र गिर जाएगा, कभी सोचा न था।
अपराधी होकर चुनाव लड़ सकेंगे सोचा न था।।
संसद, विधानसभा और धर्मस्थल अखाड़े बन गए।
जिन्हें होना था जेल में वे ही कर्णधार बन गए।।
चारों तरफ लूट हत्या और अराजकता मची है।
हजारों, करोड़ों में कुछ ही की साख बची है।।
हे राम! इन सभी बातों पर मुझे बड़ा गम है।
हो सके तो इन्हें सद्बुद्धि दो, आपमें दम है।

मोहनलाल दशोरा 'आर्य'
नारायणगढ़, जिला-मन्दसौर
चलभाष- ०९५७५७९८४१२

दो जून की रोटी को तरसेंगे आदि-आदि। इनकी तो एक ही अभिलाषा होती है कि सम्पूर्ण दुनिया का धन मेरी तिजोरी में आ जावे। ऐसे लोगों को ईश्वर का कोई भय नहीं होता, क्योंकि इनका ईश्वर केवल और केवल पैसा होता है। इन्हें भ्रम होता है कि पैसा ही सब कुछ है। पैसे से सब कुछ क्रय किया जा सकता है। इस भ्रम का कारण है कि ये प्रत्येक समय कुछ न कुछ खरीदते ही रहते हैं। प्रापर्टी और विलासिताओं के साधन तो खिलौनों की तरह क्रय करते ही है, अवसर आने पर राजनेताओं, अधिकारियों को खरीदकर समूची व्यवस्था को, कानून तक को भी खरीदकर अपनी झोली में डाल लेते हैं और तो और पाप की काली कमाई के बूते पर ईश्वर को भी खरीदने का भरपूर प्रयास कर यह भ्रम पाल लेते हैं कि ईश्वर भी हमारी क्रय शक्ति में है। कहीं उस पत्थर के जड़ ईश्वर को बनवा देते हैं तो कहीं जड़ ईश्वर जो कुछ भी करने में असमर्थ है का घर (मन्दिर) बनवा देते हैं और जो सब जग को खिला रहा हैं उसे छप्पन भोग की पार्टी दे देते हैं, जो सदा से है, कभी जन्मता नहीं उसका बर्थ-डे बड़े-बड़े होर्डिंग, डीजे आदि के माध्यम से मनाकर उस पर अपना उपकार थोंप देते हैं, जो चिंटी से लेकर हाथी तक के उदर पोषण करता है के नाम पर बड़े-बड़े भण्डारे करते हैं जो सब जगत् को तन ढंकने के वस्त्र हेतु रेशम, बाल, रूई आदि की उत्पत्ति कर रहा है उसे लम्बी से लम्बी चुनरी चढ़ाने की प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। अपने कर्म पर ध्यान देवें या नहीं देवें, किन्तु हाई वोल्टेज डीजे लगाकर सारी रात उसकी चापलूसी कर विद्यार्थियों के भविष्य को चौपट कर रोगियों के प्राण हर उन्हें मुक्ति प्रदान करते रहते हैं, जिसने मोती-मूंगे, हीरे-जवाहरात आदि बहुमूल्य वस्तुएं बनाई उसे हीरे जड़ित मुकुट पहनाकर जगत् स्वामी का मजाक उड़ाते हैं। इन्हें बेईमान बनाने में बहुत कुछ जिम्मेदार शासकीय नीतियां हैं।

ये तो बात हुई व्यवसाइयों की किन्तु अपने आपको जन सेवक का तमगा लगाए घुमने वाले राजनेता भी इनसे पीछे नहीं है। विशुद्ध रूप से घोटालेबाजों का संरक्षण प्रदाता यही वर्ग है। ऐसे समाचार है कि वर्तमान में चार-चार मुख्यमंत्री जेल की सिखचों के भीतर हैं तो अनेक राजनेता कृष्ण जन्म गृह जाने की बाट जोह रहे हैं। यह वर्ग भी कुछ अपवाद छोड़कर अत्यन्त धूर्त-मक्कार होता है। पैसे और पद के प्रभाव में यह भी मनुष्यों की न्यायकारी व्यवस्था को खिलौने की तरह अपनी जेब में रखता है और न्याय व्यवस्था में लगने वाली देर को अन्धेर में बदलने में माहिर होता है। सड़क छाप कंगला व्यक्ति भी साम-दाम-दण्ड भेद की नीति में निपुण हैं। या यूं कहें कि जिसे कोई धर्म-अधर्म से लेना-देना नहीं है, कोई ईश्वर की न्यायकारी व्यवस्था का भय नहीं वह वर्तमान की राजनीति के क्षेत्र में सफल है। इस क्षेत्र में प्रवेश करते ही उसका भाग्य उसके हाथ में होता है, देश को खूब रगड़-रगड़कर धोता है और इसका भाग्य दिन दुना रात-चौगुना चमकता चला जाता है, देखते-देखते पीढ़ियां दर पीढ़ियां इसकी तर जाती हैं। कहने को तो यह जनता का सेवक और देशभक्त होता है। इस कारण जनता और देश पर इसका पूर्ण अधिकार होता है, जनता की सेवा और देश की भक्ति करे या नहीं करें, किन्तु जनता और देश को खूब भोगता है। पारिश्रमिक (वेतन) भत्ते, पेंशन का निर्धारण, इसके स्वयं के हाथ में होता है। देश की जनता बेरजोगारी, महंगाई, भूखमरी से त्रस्त चाहे जितनी रहे और रहनी भी चाहिए नहीं तो चुनावों के समय लालीपाप किसे चुसायेंगे और अपनी काली कमाई की जुठन का टुकड़ा किसके सामने डालेंगे?

ईश्वर के विषय में व्यवसायिक वर्ग की तरह यह वर्ग भी भ्रम में होता है और व्यवसायिक वर्ग के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर वह सब करता है जो व्यवसायिक वर्ग करता है, क्योंकि इसने राजनीति को भी विशुद्ध फायदे का व्यवसाय बना लिया है। अब तो दिनों-दिन हमारे

लघु कथा-वह रद्दी वाला लड़का

लगभल दो, अढ़ाई साल हो गए होंगे, एक पतला-दुबला सा लड़का महीने-दो महीने में आकर रद्दी ले जाता था, धीरे-धीरे उसने अपनी पारिवारिक परेशानियां भी हमें बता दीं थी, हमारे पूरे परिवार को उससे सहानुभूति थी, उस पर भरोसा भी हो गया था, वह खुद ही रद्दी निकालता, तौलता, हिसाब लगाता, पैसे देता और चला जाता। मेरी पत्नी उसे जिद्द करके चाय-नाश्ता भी करा देती।

एक दिन बाजार से लौटते हुए मेरी पत्नी को एक तराजू लेने का ध्यान आ गया, कभी-कभार ही सही तराजू की जरूरत पड़ ही जाती थी, हमने एक तराजू और कुछ बांट ले लिए, दूसरे दिन रविवार था, बच्चों ने तराजू का उद्घाटन करने की ठान ली, तय हुआ कि रद्दी ही तौल ली जाए, खुले हाथ से तौलने पर १३ किलो निकली।

संयोग से कुछ देर बाद वह रद्दीवाला लड़का भी आ गया, हमेशा की तरह उसने रद्दी उठायी, तौली और ७ किलो वजन बता कर हिसाब करने लगा।

यकीन मानिये बहुत गुस्सा आया, हमारे भरोसे और सहानुभूति का यह इनाम! फिर भी मात्र यह कह कर कि आज रहने दो, उसे जाने को बोल दिया, वह बार-बार हठ करने लगा कि क्या बात हो गई, तब उसे बताया, अचानक उसने माथा ठोकते हुए कहा- **'बाबूजी गलती हो गई, मैंने २ किलो का बाट रखा था और गलती से १ किलो का हिसाब लगा लिया।** बहुत माफी-वाफी मांगने लगा, मन खट्टा हो गया था उसे जाने दिया और बोल दिया कि दोबारा वह न आए। शायद धंधे में आकर सीधे सादे लोग भी सारे हथकण्डे सीख जाते हैं फिर उनके लिए धंधा ही सब कुछ हो जाता है।

- ओमप्रकाश बजाज -
कालिंदी कुंज, पिपलिया हाना, इंदौर
चलभाष- ९८२६४-९६९७५

राजनेता अत्यंत धार्मिक दिख रहे हैं, किसी न किसी बाबा के डेरे से इनका सम्बन्ध होता ही होता है। अब तो धार्मिक गतिविधियों का यह वर्ग ठेकेदार बन गया है। व्यवसायिक वर्ग की पोल पट्टी का लाभ उठाकर उसे डरा धमकाकर चन्दे के नाम पर खूब धन ऐंठता है और मजे करता है। यह भी इसने एक नया व्यवसाय विकसित कर लिया है। इस वर्ग की कृपा दृष्टि से भारत देश का नाम भ्रष्टाचारी देशों की पायदान पर चढ़ता जा रहा है। यह किसी विशेष दल के न होकर इनका अपना ही दलदल है। कुछेक अपवाद छोड़कर सभी चोर-चोर मौसेरे भाई की कहावत को चरितार्थ करते हैं। दल तो इनके लिए सत्ता रूपी चाशनी को चाटने का चम्मच मात्र है, जहां चम्मच रूपी दल में चाशनी आना कम हुई उस दल को तन के वस्त्र की तरह बदलने में देर नहीं करते हैं। इस वर्ग का दोष नहीं मनुष्य मात्र स्वार्थी होता है, सब चलती वातानुकूलित गाड़ी में बैठना पसंद करते हैं धक्का प्लैट, खटारा गाड़ी में कौन बैठता है?

इसके बाद नम्बर आता है धर्म को धन्धा बनाने वालों का। आज ऐसे लोगों की भरमार है। कथनी से तो ये लोग अन्यों को त्याग-तपस्या, सदाचार का उपदेश देते हैं, किन्तु कर्म से सदा दूर रहते हैं। जिस बाबा के चेले जितनी ज्यादा संख्या में बड़े व्यापारी, राजनेता और अधिकारी होंगे उस बाबा का उतना बड़ा नाम और बड़े-बड़े, स्थान-स्थान पर वातानुकूलित अड्डे (डेरे-आश्रम) तथा विदेशी लक्झरी वाहनों का काफिला और चेले-चेलियों की फौज उसके पास होगी। पहले राजाओं को शास्त्रोक्त नीति-अनीति का उपदेश करने वाले राजपुरोहित तथा वनों में वास करने वाले तीनों ऐषणाओं से मुक्त धर्म धुरन्धर ऋषि-मुनि होते थे। इनका मान-सम्मान शासनाध्यक्षों से भी अधिक होता था। शासनाध्यक्ष भी इनके आगमन पर अपने स्थान से खड़े होकर इनका स्वागत करते थे। अनीतिपूर्वक कार्य करने पर ये निर्भयतापूर्वक शासनाध्यक्षों तथा राज्याधिकारियों को भी डपट दिया करते थे।

चक्रवर्ती सम्राट अश्वपति का प्रसंग जग प्रसिद्ध है कि एक बार ऋषि उद्यालक उनके राज्य में पधारे। राजा अश्वपति ने ऋषि उद्यालक का अभिनन्दन किया तथा उनसे भोजन ग्रहण करने का आग्रह किया। ऋषि उद्यालक ने प्रत्युत्तर में अपनी असमर्थता प्रकट करते हुए कहा कि राजन मैं आपके यहां भोजन नहीं कर सकता, क्योंकि आपके राज्य कोष में अनेक प्रकार के लोगों का धन आता है, जिसमें अनैतिक कार्य करने वाले भी होते हैं। इस पर राजा अश्वपति ने कहा था- महाराज मेरे राज्य में कोई भी व्यक्ति चोर नहीं है, व्याभिचारी नहीं है। इतने अच्छे चरित्र के धर्माधिकारियों, शासनाध्यक्षों और आम लोगों का परिचय हमें इस धरा पर मिलता है, किन्तु वर्तमान में राजनेताओं को उनके पापों से मुक्ति दिलवाने हेतु धार्मिक अनुष्ठान करवाने वाले धर्माधिकारियों की कोई कमी नहीं, दोनों एक दूसरे के पूरक हो गए हैं अर्थात् हम तुम्हारा ध्यान रखें, तुम हमारा ध्यान रखो, भगवान वगैरा से डरने की कोई आवश्यकता नहीं, उसे हम सम्हाल लेंगे।

धर्म क्षेत्र के अनेक नामीगिरामी जेलों में बन्द हैं और हमारी सरकारें सख्ती से काम लेवें और थोड़ा सा कानून सख्त हो तो धूर्त-पाखण्डियों से जेल भरने में देर नहीं लगे, जो ईश्वर धर्म और ईश्वरीय कर्मफल व्यवस्था से अनभिज्ञ भोले-भाले जन सामान्य को ईश्वर के कुपित होने का भय दिखा अथवा ईश्वर के प्रसन्न होने का लाभ देकर दिन-रात धर्म नहीं, अधर्म रूपी लूट के धन्धे में सक्रिय हैं। **'हिंग लगे न फिटकरी रंग चौखा'** अनुसार ये लोग धर्म के बगैर कुछ निवेश किए, और बगैर किसी श्रम के १०० प्रतिशत लाभ का धन्धा बनाकर सामान्य लोगों की समस्याओं (**वो चाहे किसी भी तरह की समस्या हो लड़के की नौकरी नहीं लग रही, लड़के-लड़की की शादी नहीं हो रही है, प्रेम-प्रसंग में सफलता नहीं मिल रही, व्यापार-व्यवसाय नहीं चल रहा, महामृत्युंजय मंत्र जाप से मृत्यु पर विजय, शत्रु पक्ष को मजा चखाना, कोर्ट कचहरी में सफलता, पति-पत्नी अथवा प्रेमी-प्रेमिका को वश में करने का उपाय, कर्ज मुक्ति, पाप मुक्ति, चुनाव जीतना हो, जुए-सट्टे, लाटरी में मुनाफा, ईश्वर प्रसन्नता, भूमि में गड़ा हुआ धन प्राप्ति, मनचाही सन्तान प्राप्ति, बगैर पढ़े परीक्षा में पास होने की ग्यारंटी आदि कोई भी समस्या हो**) के समाधान का ठेका इस प्रकार

रावण नहीं मरा

रावण को मारा है, आज रावण को मारा है।
हर गलियों और चौराहों पर, ये ही नारा है।।
वह तो दूसरा ही युग था, जब रावण था एक।
आज तो वह कलियुग है जब रावण हुए अनेक।।
रावण का शरीर नहीं, पर गुण से मौजूद आज भी है।
रावण का दिया आतंक, सर्वत्र मौजूद आज भी है।।
कृत्य राक्षसी आज रात-दिन, होते रहते हैं,
नहीं जटायू से कोई प्रहरी, आज सब सोते रहते हैं।।
नहीं कोई लाज बचाने जाता, कृत्य सभी होते रहते हैं।
दुष्टों से कर लेते दोस्ती, और खुश होते रहते हैं।।
छद्म वेशधारी रावण से, हर सीता खतरे में है।
रावण मरा नहीं है, आज, वो तो कतरे-कतरे में है।।
रावण को तो दिल में बसाया, पुतला आज जलाते हैं।
खुद ही रावण बनकर के, रावण मरा बताते हैं।।
रावण घूमता दिखता है, अब रथ की जगह कारों से।
सीता भी हर ली जाती है देखो भरे बाजारों से।।
नहीं राक्षस पहले ही थे, आज भी है हजारों से।
सभ्य मानव मरते रहते, लुटेरे हत्यारों से।।
सभी राक्षस बनते जाते, रावण को मारेंगे क्यों?
सारी बस्ती राक्षस नगरी, राम राज आएगा क्यों।।
जब तक नहीं बनेंगे दशरथ, और कौशल्या जैसी माँ।
अब राम तो पैदा भी नहीं, हो सकते तब तक यहां।

- आर्य पी.एस. यादव -
आर्य समाज मण्डीदीप,
रायसेन, (म.प्र.),
चलभाष- ९४२५००४३७९

लेते हैं जैसे परमपिता परमात्मा ने अपनी फ्रेन्चाइजी इन्हीं को दे रखी हो। मुख्य रूप से इनके फलने-फूलने का कारण शिक्षित वर्ग का अपनी बुद्धि का उपयोग न कर लोभवश जो वस्तु अप्राप्य है जो अपनी पहुंच से दूर है उसे बगैर परिश्रम आदि के प्राप्त करने के स्वप्न देखना, विशेषकर ईश्वर की न्यायकारी व्यवस्था से अनभिज्ञ अधिकारियों, व्यवसायियों, राजनेताओं का इनके अन्धभक्त बनना।

भ्रष्टाचार के गंगौत्री में आकण्ठ डूबा शासकीय तन्त्र है ऐसा नहीं है कि सरकार अपने कर्मचारियों-अधिकारियों को कम वेतन देती है या इनकी सुविधाओं का ध्यान नहीं रखती, किन्तु यह वर्ग सरकार के दामाद की तरह होता है। कार्य के प्रति समर्पण तथा निष्ठा तो दूर किन्तु वेतन-सुविधाओं के लिए इसका मुख सुरसा के मुख की भाँति हमेशा खुला ही रहता है। वैसे इस वर्ग का दोष अधिक नहीं है, क्योंकि लार्ड मैकाले के मानस पुत्र इस वर्ग को जीवन में मुफ्त कोई वस्तु मिली नहीं तो वह मुफ्त किसी को कोई वस्तु क्यों दे? जब इसका प्रसव हुआ तब इसके पिता को निजी चिकित्सालयों में भारी-भरकम खर्च करना पड़ा। फिर प्ले स्कूल से लगाकर इसकी शिक्षा में भारी निवेश किया गया। शिक्षा के पश्चात् कई जोड़ी चप्पलें घीसने के बाद राजनेताओं और अधिकारियों की भेंट-पूजा, प्रसन्नता पश्चात् नौकरी प्राप्त हुई और अपनी भावी पीढ़ी का भी तो भविष्य देखना है, उन्हें खुले आसमान के नीचे तो नहीं छोड़ सकते। वैसे इस वर्ग का भ्रष्टाचार राजनेताओं के भ्रष्टाचार रूपी खाद-पानी से फलता-फूलता है। स्वच्छ- ईमानदार राजनेताओं के सत्ता संभालते ही यह वर्ग गिरगिट की तरह रंग बदलकर कर्मठ-सेवाभावी और ईमानदार बन जाता है।

हमने ऊपर जितने वर्गों की चर्चा की इन वर्गों की उत्पत्ति तो सामान्य जन से ही होती है, भ्रष्टाचार और अव्यवस्था का मूलतः जिम्मेवार अगर कोई है, तो सामान्य वर्ग है। कहा जाता है इस युग में ईमानदार वही है जिसे बेईमानी का अवसर प्राप्त नहीं हुआ।

उपरोक्त दशा उस विश्वगुरु की ख्याति प्राप्त धरा की है जहां दान की महत्ता सर्वोपरि है। चाणक्य नीति में धन की तीन दशा उपभोग, दान अन्यथा विनाश बताया गया है। उपभोग से आशय अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति मात्र से था। अगर आय सीमित है तो आवश्यकताओं को भी व्यक्ति सीमित कर लेता था। भ्रष्टाचार चोरी आदि अनैतिक कार्यों से धन जुटाकर आवश्यकताओं की पूर्ति करना तो घोर पाप माना ही जाता था, कर्ज लेना भी प्रतिष्ठा के विरुद्ध माना जाता था, किन्तु वर्तमान में कर्ज लेकर घी पीकर (प्रदर्शन) व्यक्ति फूला नहीं समा रहा। कबीर का दोहा सर्वविदित है- **'सांई इतना दीजिए जामें कुटुम्ब समाय, मैं भी भूखा न रहूं और अतिथि भी भूखा न जाए।'** यहां सांई से आशय जगत् नियन्ता परमपिता परमात्मा से है ना कि शिर्डी के सांई बाबा से जो जीवन पर्यन्त फटेहाल एक फकीर

बाबाओं ने अच्छे सन्तों की भद्द कर दी

इन तथाकथित बाबाओं ने, अच्छे संतों की भद्द कर दी।
ऐषणाओं में संलिप्त हो, सब मर्यादाओं की हद कर दी।।
एक समय था बाबा जी, सत्य उपदेश दिया करते,
वन कदंराओं और घास-फूस की कुटियों में रहा करते,
यम नियम का पालन कर, संयम में जीया करते,
वांछा तृष्णा सब तजकर, भक्ति में रत रहा करते,
संकट सहा करते सब, चाहे गर्मी हो या सर्दी।।१।।

इन तथाकथित...

मोह माया और ममता से, वे दूर रहा करते,
पाप कर्म और पाखण्डों से, परहेज किया करते,
त्याग दिया सो त्याग दिया, नहीं पश्चाताप किया करते,
अवसर मिलने पर भी नहीं, कभी नीयत से डिगा करते,
पर आज के बाबाओं ने झोली, पापकर्म से अपनी भर दी।।२।।

इन तथाकथित...

एक स्थान पर नहीं रहकर, भ्रमण वे किया करते,
मठ ओर डेरे नहीं बनाकर, विचरण सदा किया करते,
फाकाकशी व रुग्ण होने पर, नहीं प्रण से हटा करते,
सब दुनियादारी लाग लपेट से, वे दूर रहा करते,
पाजीपन, दुष्टकर्मों से, बाबाओं ने अपनी इज्जत खाक कर दी।।३।।

इन तथाकथित...

अब तो बाबा बड़े-बड़े भव्य भवनों में रहते हैं,
ढोंग और स्वांग रचकर, खुद को ईश्वर कहते हैं,
गुरुडम और नामचर्चा से, जनता की बुद्धि हरते हैं,
ऐय्याशी का जीवन जीते, नहीं वे ईश्वर से डरते हैं,
निकृष्टता और कामाग्नि संलिप्तता की सब सीमा पार कर दी।।४।।

इन तथाकथित...

ऐशो आराम का सामान जुटा, जीवन का आनंद लेते हैं,
भूमिगत कुटियाओं में स्त्रियों को माफी देते हैं,
दुराचार और पापकर्म की, सीमा लांघ देते हैं,
शरण में जो आ जाता, उसे वे फांस लेते हैं,
नये-नये दुष्कर्म उजागर होते, फेहरिस्त लम्बी इन्होंने कर दी।।५।।

इन तथाकथित...

बाबा बनने से पहले इन्हें, वेदाध्ययन करना चाहिए,
यम नियम अष्टांग सूत्र निभाकर, आत्मचिन्तन करना चाहिए,
इच्छा, तृष्णा और पापाचार से, सदा दूर रहना चाहिए,
पापों का दण्ड अवश्य मिलेगा, ईश्वर से उन्हें डरना चाहिए,
ऋषि दयानन्द से लो प्रेरणा जिसने मानवता हित जान फना कर दी।।६।।

इन तथाकथित...

- देशराज आर्य - सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य
सेक्टर-४, रेवाड़ी, हरियाणा
चलभाष - ०९४१६३३७६०९

(भिखारी) रहा, किन्तु "**अक्ल के अन्धे और गांठ के पूरे**'' लोग वर्तमान में उसकी पत्थर की बनी मूर्ति को स्वर्ण और हीरे जवाहरातों से जड़ित आभूषणों को पहना रहे हैं और अकूत धन-सम्पदा उसके नाम पर लूटा रहे हैं, इन अक्ल के अन्धों को देश का अभाव ग्रस्त निर्धन वर्ग नहीं दिखता।

कबीर के दोहे में परिवार की सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति की याचना परमेश्वर से है न कि विलासितापूर्ण साधनों की। वैदिक संस्कृति हमें अपरिग्रह की शिक्षा देती है अर्थात् आवश्यकता से अधिक संचय न करना। कोई भी वस्तु हो, भूमि हो, धन-सम्पदा हो अथवा दैनिक उपयोग की वस्तुएं हम आवश्यकता से अधिक संग्रहित करेंगे तो निश्चित रूप से उसका अभाव उत्पन्न होगा और अभाव उत्पन्न होगा तो अव्यवस्था फैलेगी, लूट मचेगी। सीधा-सरल गणित है कि एक व्यक्ति करोड़पति बनता है तो १०० लोग निर्धन बनेंगे।

समानता के सिद्धान्त के बगैर सर्वत्र सुख शान्ति की कल्पना नहीं की जा सकती। नंगे-भूखे लोगों के मध्य अति सम्पन्न समृद्ध व्यक्ति निश्चितता-निर्भयतापूर्वक अधिक दिवस जीवन व्यतीत नहीं कर सकता। उपभोग के पश्चात् अगर आपके पास कुछ शेष रहता है तो उसका परिग्रह (संग्रह) न करते हुए दान देने की हमारी सर्वोच्च परम्परा रही है। मेवाड़

ऋषि बोध दिवस पर आर्य मन की पीड़ा

बोध दिवस ऋषिवर का, सभी आर्य जन जागे। मिलकर काम करें सब, मन और मतभेदों को त्यागें।।

ऋषिवर ने जो काम दिया था, उसको छोड़ दिया है
उनसे किए हुए वादे को हमने तोड़ दिया है,
वचन दिया था कि आर्य जाति का हम उद्धार करेंगे,
जग के हर मानव में मानव के प्रति प्यार भरेंगे,
ओरों को छोड़ों पहले हम आपस के बैर तो त्यागें।।

बोध दिवस...

जिस धन और पद के पीछे हम धोकर हाथ पड़े हैं
कुकर की भाँति सूखी हड्डी के लिए लड़े हैं,
कितना धन और पद हम अपने लेकर साथ जाएंगे,
याद रहेंगे गर हम ऋषि के रंग में रंग जाएंगे,
दोहराएं अतीत अपना पद के पीछे ना भागें।।

बोध दिवस...

आपस में लड़ रहे आर्य यह बात अनार्य बताते,
सिंहों के झगड़ों का निर्णय स्यारों से करवाते,
क्या इस दिन के लिए दयानन्द ने विष पान किया था,
छोड़ समाधी का सुख हम आर्यों के लिए जिया था,
अब सुधर जाएं, ऋषिवर से निज कर्मों की माफी मांगे।।

बोध दिवस...

केवल पास हमारे है उस परमेश्वर की वाणी,
जो है इस सारे जग के मानव के लिए कल्याणी,
फिर भी पाखण्डी यहां अपना कर व्यापार रहे,
सत्य है पास हमारे, लेकिन हम ही हार रहे,
जग को आर्य बनाने वाले खुद तो बनके दिखा दे।।

बोध दिवस...

आपस की फूट से ही महाभारत संग्राम हुआ था,
आपस की फूट के कारण यह देश गुलाम हुआ था,
इसी फूट की पीड़ा को हम अब तक भोग रहे हैं,
पुनरपि लड़ आपस में हम कर वही उद्योग रहे हैं,
ऋषिवर के कार्यों के लिए अपना अभिमान भूला दे।।

बोध दिवस...

हम ही अगर लड़ेंगे तो फिर प्रेम कौन बाँटेगा?
अंध विश्वासों के बढ़ते जंगल को कौन काटेगा?
भाषावाद और प्रांतवाद की खाई कौन भरेगा?
कहो तड़पती मानवता का कौन उद्धार करेगा?
दयानन्द के पावन वचनों को जग में गूंजा दे।।

बोध दिवस...

एक-दूसरे के विरुद्ध हम बंद करें चालाकी,
अब भी संभल जाए, क्योंकि थोड़ा सा समय है बाकी,
आने वाली पीढ़ी को हम क्या मुंह दिखाएंगे,
क्या उनको मुकदमें विरासत में देकर जाएंगे,
वैमनस्य के वन को प्रेम दावानल से जला दे।।

बोध दिवस...

सुन ले खुद को दयानंद का सैनिक कहने वाले,
सुधर जाए या नाम से अपने आर्य समाजी हटा ले,
अपने स्वार्थ हित, जाति को हम कर बदनाम रहे,
होकर आर्य, अनार्यों जैसे हम काम कर रहे,
नकाबपोशी आर्यों के चेहरों से, नकाब हटा दे।।

बोध दिवस...

बोध दिवस पर शपथ उठाएं, ऋषिवर दयानन्द की,
अंध विश्वासों और कुरीतियों के, विरुद्ध जंग की,
करें प्रतिज्ञा हम आपस के सब मत भेद भुला दें,
कृण्वन्तो विश्वं आर्यम् इस वाक्य को सत्य बना दें,
मिलकर दयानन्द के सारे सपने हम साकार बना दे।।

बोध दिवस...

नन्दराम सगीतरा
२१ सगीतरा गली
गांधी मार्ग, खाचरौद, जिला-उज्जैन (म.प्र.)
चलभाष - ९२२९४५८८८२

राज्य के प्रमुख व्यवसायी भामाशाह (जैन) ने अपने कोष के दरवाजे राष्ट्र के विपत्तिग्रस्त अवस्था में महाराणा प्रताप के लिए खोल दिए थे।

प्रसंग पौराणिक ही सही किन्तु है तो प्रेरणास्पद-धन-सम्पदा तो ठीक महर्षि दधिचि ने देवों और दैत्यों के युद्ध में देवों के लिए शस्त्र निर्माण हेतु अपनी अस्थियों को दान कर दिया।

दानवीर कर्ण, बलि आदि अनेक दानवीरों के वृतान्तों से हमारा इतिहास भरा पड़ा है, केवल दानी नहीं बल्कि दानवीर के रूप में सुविख्यात होते थे। धन-सम्पदा तो कोई भी दे सकता है किन्तु राष्ट्र के लिए, धर्म के लिए तथा मानवता के लिए अनेक वीरों ने अपना सुख, चैन, परिवार यहां तक कि अपना जीवन तक न्यौछावर कर दिया और वे बलिदानी के रूप में इतिहास में अमर हो गए। महर्षि दयानन्द ने विष पीकर हमें वेदों का अमृत दान किया।

बात ज्यादा पुरानी नहीं मात्र दो सौ वर्ष पूर्व इस धरा पर चोर-लुटेरे, भ्रष्टाचारी तो दूर लार्ड मैकाले को कोई भिखारी तक नहीं दिखा और आज जिधर देखो, उधर भिखारी ही भिखारी दिखाई दे रहे हैं। कोई आरक्षण की भीख मांग रहा है तो कोई सरकार से सब्सीडी, भावान्तर योजना मुआवजा, मुफ्त आवास, मुफ्त बिजली, मुफ्त तीर्थ दर्शन, मुफ्त यात्रा, मुफ्त विवाह, सस्ता अनाज, लड़की पैदा की तो सरकार पर उपकार आदि-आदि माध्यमों से प्रत्येक व्यक्ति कहीं न कहीं मुफ्त का पाने भिखारी की तरह जुगाड़ में लगा हुआ है, जिसे अन्नदाता कहा जाता था वह भी कटोरा लिए घूम रहा है। बात ज्यादा पुरानी नहीं मेरे जीवन में मेरा सम्बन्ध कृषक क्षेत्रों से रहा है, हमारे यहां फल-सब्जियों के ढेर के ढेर कृषक लोग दे जाते थे, कोई भी अपरिचित आ जावे उसे प्रसन्नतापूर्वक खेत में उपलब्ध खाने-पीने की वस्तुएं खिलाते थे और परिवार में बच्चों के लिए बांध भी देते थे। छाछ (मट्ठा) का तो कोई मोल ही नहीं था। वक्त जरूरत पर दूध के भी पैसे नहीं लेते थे। अब तो पीने को पानी भी कोई नहीं देता। कोई यह विचार करने को तैयार नहीं कि सरकार देगी कहां से? सरकार भी हमसे १०० रुपए करों का बोझ लादकर लूटेगी और ८४ पैसे उसके भ्रष्ट तन्त्र की भेंट चढ़ जाएंगे और हमें मिलेंगे मात्र १६ पैसे। यत्र-तत्र सर्वत्र लूट का वातावरण बना हुआ है। ऐसे में किसी अभावग्रस्त आवश्यक मन्द को नि:स्वार्थ भाव से बगैर किसी सम्बन्ध के उदार रूप से देने की भावना एक दिवास्वप्न ही प्रतित होती है।

यहां यह भी ध्यान देने योग्य है कि उसी का दिया हुआ दान की श्रेणी में स्थान पा सकता है, जिसने किसी भी प्रकार से पाप रहित कमाई की हो अर्थात् जिसका जीवन शुद्ध, सात्विक हो जो अपनी तथा अपने परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति के पश्चात् नि:स्वार्थ भाव से किसी आवश्यक मन्द की पूर्ति कर दे। इन सबका कारण वैदिक ब्रह्मचर्य आश्रम की समाप्ति है, जब बालक को नि:शुल्क वैदिक शिक्षा के माध्यम से मानव जीवन की महत्ता, लक्ष्य, ईश्वर का सत्य स्वरूप, न्यायकारी कर्मफल व्यवस्था, नाशवान सृष्टि आदि का ज्ञान प्राप्त नहीं होगा तो वह लुटेरा तो बन सकता है, दानवीर नहीं। दान देने में भी यह ध्यान रखना होगा कि नि:स्वार्थ भाव से केवल और केवल परमार्थ के लिए सुपात्र को दान दें अर्थात् एक हाथ से दे तो दूसरे हाथ को पता न चले अन्यथा धन की अन्तिम गति विनाश ही होती है। झूठे मान-सम्मान अर्थात् लोकेषणा की भूख के चलते किसी कुपात्र को दान दे दिया तो धन का विनाश तो होगा ही, कुपात्र द्वारा दुरुपयोग किए गए पाप के भी भागी भी आप ही बनेंगे और उपभोग के बाद शेष धन को सद्कार्यों में नहीं लगाया तो अत्यधिक अनुपयोगी धन होने पर वह विलासिता की वृत्ति को उत्पन्न करेगा जो धन के विनाश के साथ पाप की गठरी भी बंधवाएगा। कोई उधार ले जाएगा तो लौटाएगा नहीं, चोर-डाकू लूट ले जाएंगे, ठग-ठगकर ले जाएंगे। सन्तान को बगैर परिश्रम-संघर्ष के धन विरासत में प्राप्त होगा तो उसके लिए उस धन का कोई मोल नहीं होगा, फलत: वह भोगी-विलासी हो नष्ट-भ्रष्ट होगी, इस प्रकार धन अपनी तीसरी गति विनाश को प्राप्त होगा तथा सम्बन्धित को दारुण दु:ख भी देवेगा।

अंतिम प्रार्थना

पहले हम देखते थे,
गांव में किसी का घर गिर जाए,
तो लोग, उसके छप्पर को
हाथों-हाथ उठा लेते थे,
अब तो अपना बेटा भी,
अपने बाप की अर्थी में
कंधा देने से कतराता है
माजरा क्या है, समझ में नहीं आता है!
इसलिए, हे परमेश्वर!
हे करुणा निधान!
कृपा कर मेरी प्रार्थना पर
दीजिए अपना ध्यान, जब मैं मरूं,
तो इतना करना चमत्कार
मैं अपना कफन खरीदने के लिए
खुद ही चला जाऊं बाजार!
यदि मैं बाजार नहीं जाऊंगा,
तो बिना कफन दफनाया जाऊंगा!
हे दयालु! हे कृपालु!
इतनी शक्ति देना।
कि मैं अपनी चिता खुद सजाऊ,
और उस पर खुद ही जाकर लेट जाऊ,
अपनी चिता में खुद ही आग लगाऊ!
अगर ऐसा नहीं हुआ तो,
मेरा बेटा मेरा दाह संस्कार नहीं करेगा,
और मेरी लाश को,
गिद्ध नोंच-नोंच कर खा जाएगा।
अब, अपने माँ-बाप के लिए,
कहां कोई बेटा रोता है।
'जल्दी से बुढ़वा मर जाये
और घर खाली हो जाये',
उसके मन में यही होता है।
बाप के मरने पर,
बेटा-बाप का बटुआ टटोलता है,
देखो! दुनिया के लोगों देखो!
कैसी जलती चिता में,
बाप की कमर से बेटा
बाप की तिजोरी की चाभी खोजता है।

- डॉ लक्ष्मीनिधि -
पो. साकची,
जमशेदपुर (झारखण्ड)
चलभाष- ९९३४५२१९५४

पुण्यतिथि ०४ अप्रैल पर विशेष प्रस्तुति

वीरांगना झलकारी की कुर्बानी

- डोंगरलाल पुरुषार्थी -
पूर्व प्रधानाध्यापक, प्रधान-आर्य समाज
कसरावद, जिला-खरगोन (म.प्र.)
चलभाष-८९५९०५९०९९

चमक उठी सन् सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी,
बुन्देले हर बोलो को मुंह हमने सुनी कहानी थी।।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।

-सुभद्रा कु. चौहान

भूत प्रायः भविष्य में दहाड़ता है, इतिहास साक्ष् देता है कि राजा-महाराजा, नवाब-शहंशाह के युद्ध के बाद कवि वीर रस और अतिश्योक्ति अलंकार में विजय यात्रा की गाथाओं को खूब गढ़ते हैं, किन्तु राजाओं के हम कदम चलते हुए सैनिक और जनता अपने कर्त्तव्य और देशभक्ति के खातिर प्राणों की कुर्बानी हो जाने पर भी इनके नाम, स्थान ऐसे लुप्त हो जाते हैं जैसे गधे के सिर से सिंग। वहीं दूसरे पहलू के अन्तर्गत राजा-महाराजा दुर्व्यवसनों में-'शराब, कबाब और शबाब का चढ़ता है इनको उबाल। नहीं होता है इनका ख्वाब। पहन लेते नामर्द गुलामी का ताज, फलतः विदेशी आक्रान्ताओं के साम्राज्य तले जनता को दासता का पहनाना पड़ता है हार। अंग्रेजों की सदियों तक गुलामी के बाद अन्ततः दिनांक १५.७.१९४७ को आजादी मिलने पर गांधी जी पर क़सीदे- **दे दी आजादी तूने बिना खड्ग बिना ढाल। साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल।।** याने गांधीजी ने बड़ी आसानी, सहजता से आजादी का कान पकड़कर गुलाम भारतीयों के कदमों में रख दी हो। जबकि यह सच है आजादी शहीदों की लाशों पर चलकर आई है। यह भी सच है ऐसे गीतों ने शहीदों की कुर्बानी को दफनायी है। गांधीजी ने जीवन भर अहिंसा की खूब तूती बजाई, किन्तु किसी काम न आई। शहीदों की हिंसक क्रान्ति की बहुत मजाक उड़ाने के बाद- सब कुछ लुटा के होश में आए तो क्या हुआ? उक्ति को सार्थक करते हुए क्रान्तिकारियों का हिंसक कदम- **'करो या मरो'** को शर्मसार होकर अपनाया। जिसके कारण दिनांक ०८-०८ १९४२ से सम्पूर्ण भारत में लाखों जनता को अपने प्राणों की आहुतियां देने पड़ी। यदि गांधीजी ने बहुत पहले ही क्रान्तिकारियों के कार्यों को सराहा गया होता तो क्रान्तिकारी अनेक यातनाएं, काला पानी और गले की फांसी की रस्सियों से बच जाते। यथार्थता के आईने से देखा जाए तो गांधीजी की अहिंसा की नीति स्वरूप भारत में गुलामी फलती-फूलती रही और अंग्रेजी हुकूमत अपना साम्राज्यवाद का पैर अंगद की भाँति जमाती रही। गांधीजी की भांति एक और बड़बोले कवि ने तवारीख दिसम्बर १९११ में अपनी चाटुकारी नीति के तहत क्रूर, अत्याचारी, तानाशाही शासक अधिनायक पंचम जार्ज को **'भारत भाग्य विधाता'** बताकर तमगों से अलंकृत हुआ।

सन् १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम के अन्तर्गत रानी लक्ष्मीबाई पर सुभद्रा कुमारी चौहान ने ऐसी कविता वीररस और अतिश्योक्ति अलंकार में लिखी। जो कि भारत के कोने-कोने में विख्यात है। किन्तु लक्ष्मी बाई की मृत्यु के पूर्व उसकी रक्षिका, सलाहकार की योग्यता, दक्षता, वीरता आदि से परिपूर्ण होने पर वीरता की देवी से चन्द व्यक्ति ही वाकिफ हैं-

बुन्देले हरबोलों ने घड़ ली थी अधूरी कहानी को।
रण में खूब जूझी झलकारी, गाया लक्ष्मी रानी को।।
काली बन अंग्रेजों पर किलकारी मारी थी।
गोलियों से छलनी हुई, वह झलकारी थी।।
खूब लड़ी भवानी वह, भोजला गांव की बेटी थी।
बुन्देले हर बोलो के मुंह, यह सुनी नहीं कहानी थी।।
वीरता की चमत्कारी नारी, दलित पिता की वीर बेटी थी।
चमक उठी थी सत्तावन में, बन्दूक, तोपों की कहानी थी।।
अंग्रेजों का संहार कर, वह बनी महाकाली थी।
खूब लड़ी भवानी वह, बुन्देले हरबोलो के मुंह सुनी नहीं कहानी थी।।

पंजाबे शेर दिल रणजीतसिंह के साथ किशोरावस्था में एक जंगल में एक शेर से आमने-सामने से जंग हुई। रणजीतसिंह ने अपनी कटार की मदद से शेर को मौत के घाट उतार दिया, किन्तु इस लड़ाई में रणजीत सिंह को अपनी एक आंख गंवानी पड़ी। सन् १८५७ की क्रान्ति के दौरान गरीबों के मसीहा जनजनायक टन्ट्या मामा ने अंग्रेजों की नाक में दम करके अंग्रजों के लोहे के चने चबा दिए थे। अंग्रेज, सेठ-साहूकार, जमींदारों, टन्ट्या मामा को मार डालने के प्रयास में जमींदार हिम्मत पटेल ने अपने षड्यंत्र में एक बहुत बड़े कमरे में एक पागल पाड़ा छोड़ रखा था। कमरे को खोल टन्ट्या मामा जैसे ही अन्दर पहुंचा तुरन्त हिम्मत पटेल ने बाहर निकल दरवाजा बन्द कर दिया। मन ही मन बहुत खुश हुआ कि पाड़ा टन्ट्या का काम तमाम कर देगा, किन्तु हुआ उल्टा कि टन्ट्या ने निहत्थे होकर अपनी अपार ताकत के बल पाडे को मौत

के घाट उतार दिया और दरवाजा तोड़ पटेल को भी मौत की नींद...। ऐसी ही साहसिक एवं वीरता की घटना एक बालिका द्वारा भी घटित हुई। जो कि एक झाड़ी में छिपा चीता बालिका पर झपटा, बचाव में बालिका ने अपने पशुओं को हांकने वाली लाठी से ऐसा वार किया जो चीते की नाक पर लगा, जिससे चीता अचेत हो गया, किन्तु बालिका ने हिम्मत न हारते हुए लगातार वार पर वार करती रही, जब तक चीता मर न गया। इस घटना से बालिका को नव जीवन तो मिला, साथ ही उसकी वीरता, साहस की कीर्ति पताका बहुत दूर-दूर तक फैल गई। यही बालिका वीरांगना झलकारी थी। इसका जन्म झांसी राज्य के भोजला गांव में एक वीर कृषक श्रमिक सदोबासिंह कोरी (दलित) जाति के यहां दिनांक २२-११-१८३० में हुआ था। माँ का नाम जमुनादेवी था। बीहड़ जंगल पास में होने के कारण पिता ने अपनी बेटी को घुड़सवारी, अस्त्र-शस्त्र चलाने की शिक्षा दी। बालिका की छोटी उम्र में ही मां का साया उठ गया। पिता ने अपनी इकलौती बेटी का पालन-पोषण एक पुत्र की भाँति किया। जाति और सामाजिक विषमता के कारण वीर बेटी झलकारी को स्कूली शिक्षा से वंचित रहना पड़ा। घह -गृहस्थी संचालन का सारा भार झलकारी पर आ पड़ा। फिर भी पिता ने वीरोचित शिक्षा से ओतप्रोत कर दिया। झलकारी को दौड़ लगाना, लाठी, तलवार, बन्दूक आदि चलाने के पीछे पिता का एकमात्र उद्देश्य ही था कि आसपास के क्षेत्र में डाकुओं का उत्पात फैला था। कालान्तर में झलकारी का विवाह अपने गुण, कर्म स्वभाव के अनुसार एक वीर योद्धा नवयुवक पूरनसिंह के साथ हुआ। जैसे-

''चित्रा ने अर्जुन को पाया, शिव से मिली भवानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुंह, नहीं सुनी वह कहानी थी।
खूब लड़ी भवानी वह, भोजला गांव की झलकारी थी।।''

पूरनसिंह लक्ष्मीबाई के तोपखाने में तोपों का संचालन का कार्य करता था। तोपची पूरनसिंह के माध्यम से ही झलकारी की शौर्यगाथा का परिचय लक्ष्मीबाई से कराया गया। जिससे महारानी, झलकारी की वीरता से बहुत हर्षित और गर्वित हुई। झलकारी की दक्षतानुसार उसे महिला फौज की सैनिक बनने का अवसर प्राप्त हुआ। लक्ष्मीबाई से मिलती-जुलती पक्तियां-

कानपुर के नाना की मुंह बोली बहन छबीली थी।
लक्ष्मीबाई नाम पिता की वह संतान अकेली थी।।
नाना के संग पढ़ती थी, वह नाना के संग खेली थी।
करछी, ढाल, कृपाण, कटारी, उसकी यही सहेली थी।
बुन्देले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।।

झलकारी की गाथा-

'शाला में वह न पढ़ी थी, वन में पशु चराती थी।
गृहस्थी के काम जानती थी, शस्त्र-संचालन खूब करती थी।।
घुड़ सवारी करना, बन्दूक-तोप चलाना, नारी फौज की सैनिक थी।
शत्रु सेना का राज जानती थी, लक्ष्मी की जान बचानी थी।
भोजला ग्राम की वासिनी थी, अद्‌भुत चमत्कारी नारी थी।
झलकारी नाम था उसका, पिता की इकलौती बलिहारी बेटी थी।
बुन्देले हरबोलों ने यह घड़ ली अधूरी कहानी थी।
गोलियों से जो छलनी हुई वह लक्ष्मी नहीं झलकारी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुंह, सुनी नहीं वह कहानी थी।
खूब लड़ी भवानी वह, भोजला गांव की बेटी झलकारी थी।।

जब झांसी पर अंग्रेजों के काले घने बादलों को मंडराते देख एक बार लक्ष्मीबाई ने आपात-कालीन- युद्ध परिषद की बैठक का आयोजन किया। इस आयोजन में फिरंगी सेना से सामना करने के लिए योजनाएं निहित थी। लक्ष्मीबाई की सलाहकार झलकारी ने अपनी ओर से लक्ष्मीबाई को एक सेनापति की भाँति अभिवादन करते हुए भविष्य में आने वाली चुनौतियों से संघर्ष करने के सम्बन्ध में कहा-बाई साहब! हमारे सैनिकों की संख्या में कमी निरन्तर आ रही है। खाद् सामग्री के भण्डार में कमी होते हुए सामग्री का स्तर गिरता जा रहा है। बगैर पौष्टिक आहार के सैनिकों में शारीरिक शक्ति क्षीण होना स्वाभाविक है। मेरे पति द्वारा मालूम हुआ कि हमारे तोपचियों में गद्दारी की बू आ चुकी है। परिणाम स्वरूप उनकी गद्दारी के कारण ये तोपची अंग्रेज सेना को निशाना न बनाते हुए खाली स्थानों में गोले दाग रहे हैं। ऐसी स्थिति में शत्रु सेना किसी भी समय किसी भी दिशा से किले की दीवारों को तोड़कर प्रवेश हो जाने पर आमने-सामने के युद्ध में हमारी सेना की ही तबाही होगी। हम यह नहीं चाहते कि हम पर शत्रु सेना का संकट आ पड़े। झलकारी द्वारा अनेक महत्वपूर्ण और पते की बातें बताने के बाद लक्ष्मीबाई ने कहा-झलकारी! ऐसे आने वाले संकटों से निपटने के लिए तुम्हारे पास क्या-क्या योजनएं हैं? झलकारी ने कहा- बाई साहब! अब सबसे पहले आपको इस किले से येनकेन प्रकारेण बाहर होकर किसी सुरक्षित स्थान पर जाना आवश्यक है। इसके लिए शत्रु सेना को धोखे में डालने का अब यही उचित है कि मैं आपका वेश धारण करके पहले एक टुकड़ी को अपने साथ लेकर किसी मोर्चे से भागने का प्रयत्न करूंगी। मुझे महारानी समझकर अंग्रेज सेना पूरी शक्ति के साथ आपको पकड़ने या मार डालने की कोशिश करेगा। इसी बीच दूसरी ओर से आप साधारण वेशभूषा में किले से बाहर हो जाइए। शत्रु भ्रम में पड़ जाएगा कि असली महारानी कौन-सी है। इस प्रकार स्थिति का लाभ लेते हुए आप सुरक्षित स्थान पर पहुंच सकती है। तत्पश्चात हम मजबूत सैन्य संगठन का निर्माण कर अंग्रेज सेना पर आक्रमण कर सकते हैं। झलकारी की ये विवेक और तर्कपूर्ण योजनाएं लक्ष्मी बाई को बहुत पसंद आई। और स्वयं रानी किले के बाहर जाने की योजना बनाने लगी। झलकारी की योजनानुसार लक्ष्मीबाई और झलकारी दोनों ही अलग-अलग स्थानों से किले से बाहर हो गईं। झलकारी की वेशभूषा का तामझाम बहुत उच्च कोटि का होने के कारण अंग्रेज सेना द्वारा उसे घेरने का प्रयत्न किया जा रहा था। तथा शत्रुओं से घिरी झलकारी उनके साथ बराबर भीषण युद्ध कर रही थी। इस

दौरान किसी एक भेदिये ने झलकारी को पहचान लिया। भेदिये द्वारा भेद खोलने के पहले झलकारी ने उसे अपनी गोली का निशाना बनाया, किन्तु गोली एक अंग्रेज सैनिक को लगी जिससे वह घोड़े से गिर कर यमलोक जा पहुंचा। झलकारी शत्रुओं से लगातार युद्ध करते-करते अन्ततोगत्वा शत्रु सेना द्वारा घेर ली गई और गिरफ्तार कर लेने के बाद अंग्रेज सेनापति जनरल रोज ने झलकारी को डाटते हुए कहा-झलकारी! तूने महारानी का वेश धारण करके हमें बहुत बड़ा धोखा दिया है। तुमने महारानी को बचाकर और हमारे सैनिकों का संहार किया है इसलिए मैं तुम्हारी जान ले लूंगा। झलकारी ने अपने गर्वित अंदाज में कहा- जनरल रोज! मैंने अपने कर्त्तव्य एवं देशभक्ति में जो भी मुझे करना था कर दिया। अब आप मेरी वीरता को खत्म करने का कार्य करो या नारी पर प्रहार का कायरता का कार्य करो। मेरे दोनों हाथों में लड्डू हैं, लोकप्रियता मेरी ही बढ़नी है और बदनामी आपकी ही होनी है। झलकारी आपके समक्ष निर्भिक होकर उपस्थित है, आपकी प्रतिष्ठा कदापि बढ़ने वाली नहीं है। एक अन्य अंग्रेज अफसर ने कहा- जनरल रोज! यह स्त्री तो मुझे पागल प्रतीत हो रही है। रोज ने कहा - यदि भारत की एक प्रतिशत नारियां इस प्रकार पागल नजर आती रहीं तो निश्चित ही एक दिन हम अंग्रेजों को यहां सब कुछ छोड़कर भारत से इण्लैण्ड रवाना हो जाना पड़ेगा।

वीरांगना झलकारी को एक तम्बू में बंद करके एक पहरेदार को बिठा दिया गया। किन्तु अवसर पाकर रात में चुपके से झलकारी नौ दो ग्यारह हो गई। जनरल रोज का क्रोध बहुत बढ़ चुका था। अस्तु सुबह किले पर भयंकर आक्रमण किया तो रोज क्या देखता है कि झलकारी एक तोपची के पास खड़ी है और वहां से बेशुमार गोलियों की वर्षा किए जा रही है। मानो अकेली ही फिरंगी सेना का खात्मा करके रहेगी। तभी एक अंग्रेज तोपची की तोप से एक गोला झलकारी के पास स्थित तोपची को लगा जो कि झलकारी का पति पूरनसिंह था, शहीद हो गया। झलकारी ने समय की नजाकत देखते हुए फौरन अपने अदम्य साहस और जीवटता का परिचय देते हुए स्वयं ने तोप संचालन का कार्य संभालते हुए शत्रु-सेना को तहस-नहस करने में जुट गयी। इधर झलकारी पर काबू पाने के लिए शत्रु सेना ने अपनी सारी शक्ति झलकारी पर केन्द्रित कर दी। गोलियों की वर्षा झलकारी पर होने लगी जिससे झलकारी का शरीर छलनी हो गया। अन्त में सिंहनी झलकारी 'जय भावनी' कहते हुए वीरगति को प्राप्त हुई। यह वीरता का पालन दिवस ०४-०४-१८५७ का था जो विरले ही शूरमा ऐसे सौभाग्य को प्राप्त करते हैं। अस्तु पुनश्च

'बुन्देले हरबोलों ने घड़ ली थी अधूरी कहानी को।
झलकारी रण में खूब जूझी गाया, लक्ष्मी रानी को।
चण्डी बन कर अंग्रेज पर, किलकारी मारी थी।
गोलियों से जो छलनी हुई वह लक्ष्मी नहीं झलकारी थी।

श्री बी.एल. वर्मा द्वारा १९५१ में **'झांसी की रानी'** पर उपन्यास लिखा उसमें श्री वर्मा ने झलकारी को विशेष स्थान दिया है। झलकारी कोरी जाति की थी जो लक्ष्मीबाई की सलाहकार थी। श्री रामचन्द्र हेरन द्वारा लिखा उपन्यास **'माटी'** में झलकारी को उदात्त और वीर शहीद कहा है। सन १९६४ में भवानी शंकर विशारद् द्वारा झलकारी पर पहला **''आत्म चरित्र''** लिखा गया। जिसमें झलकारी की कहानी को सामाजिक और राजनैतिक महत्ता प्रदान की गई। बहुत-सी संस्थाओं द्वारा झलकारी के **'मृत्यु दिवस'** को **'शहीद दिवस'** के रूप में मनाया जाता है। भारत सरकार ने झलकारी के नाम पर पोस्ट, टेलीग्राम, स्टेम्प भी झांसी के किले में झलकारी का भी उल्लेख किया है। झलकारी की बहादुरी पर राष्ट्र कवि गुप्त जी की पंक्तियां-

जाकर रण में ललकारी थी, वह तो झांसी वाली झलकारी थी,
गोरों से वह लड़ना सीखा गई, है इतिहास में वह झलक रही
वह भारत की ही नारी झलकारी थी।

इतिहास का हकीकते सबक-

जात पात की खोरापातों में, हकीकतें सबक कफ़न पहन लेता है।
आमखास की कालिख़ में, कुर्बानी, शहादत दफ़न हो जाता है।।

(जय भारती)

आचार्य ज्ञानेश्वर जी आर्य
मेरे सर्वश्रेष्ठ मित्र

- महात्मा चैतन्यमुनि -
महादेव, सुन्दरनगर, जिला-मण्डी , हिमाचल प्रदेश,
चलभाष - ९४१८०५३०९२

२७ सितम्बर १९४९ के दिन बिकानेर राजस्थान में समृद्ध सोनी परिवार में माता श्रीमती पार्वतीदेवी और पिता श्री द्वारिकादास जी के यहां एक बालक ने जन्म लिया। बालक बचपन से ही अपने पूर्वजन्म के संस्कारों के कारण इतना वैरागी वृत्ति का था कि जैन कालेज से एम.काम करने के बाद अचानक एक दिन घर से निकल पड़ा। यही बालक आगे चलकर आचार्य ज्ञानेश्वर आर्य के नाम से यशस्वी हुआ। यह एक अच्छी बात थी कि अपने शिक्षाकाल में ही उसका सम्पर्क एक आर्य विचारधारा के

सज्जन पण्डित ठाकुर प्रसाद आर्य जी से हो चुका था। आर्य जगत् की विभूति योगनिष्ठ स्वामी सत्यपतिजी महाराज से सम्पर्क होना इनके जीवन की सर्वोत्तम उपलब्धि है। उन्हीं की प्रेरणा से इन्होंने गुरुकुल कालवा के आचार्य बलदेवजी से व्याकरण महाभाष्य का अध्ययन किया। गुरुकुल कांगडी के उप कुलपति प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार से निरुक्त पढ़ा तथा लगभग १९८६ में स्वामी सत्यपतिजी महाराज से विधिवत् दर्शनों का अध्ययन किया। स्वयं दर्शनों का अध्ययन करने के बाद इन्होंने रोजड़ में ही दर्शन योग महाविद्यालय में दर्शनों का ज्ञान देकर अनेक सुयोग्य आचार्य समाज को दिए।

कालान्तर में जब वानप्रस्थ साधक आश्रम की परिकल्पना को साकारता देने का अवसर आया जो आचार्य जी ने अपनी पूरी शक्ति और सामर्थ्य से इस आश्रम के लिए स्वयं को आत्मना समर्पित कर दिया और भव्य आश्रम का निर्माण किया। आज साधक आश्रम का जो भी स्वरूप हम देखते हैं इसके पीछे आचार्य जी का अथक परिश्रम और प्रतिभा ही है...। जहां उन्होंने दर्शन योग महाविद्यालय के माध्यम से संसार को सुयोग्य आचार्य दिए वहीं वैदिक विचारधारा के प्रचार-प्रसार के अद्‌भुत कार्य किए। सैकड़ों ही योगशिविरों का आयोजन किया। साहित्य प्रकाशन की दिशा में भी उन्होंने महत्वपूर्ण कार्य किया है जिसमें गुजराती भाषा में अनेक पुस्तकें तथा वेदभाष्य भी उल्लेखनीय है। योग और आध्यात्म विषयों पर अनेकशः पुस्तकें प्रकाशित की। हजारों फोल्डर, चार्ट, कलैण्डर, पत्रक आदि छपवाकर निःशुल्क वितरित किए। योगेश्वर श्री कृष्ण और मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामजी तथा ऋषि दयानन्द के चित्र छपवाकर तथा प्राचीन ऋषि मुनियों के चित्र एवं परिचय खोजकर और छपवाकर इन महापुरुषों की सही-सही पहचान प्रचलित की। अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र का निर्माण करके उसके माध्यम से यज्ञ का प्रशिक्षण देकर सैकड़ों ही लोगों को प्रतिदिन यज्ञ करने के लिए प्रेरित किया, अनेक नगरों में यज्ञ प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए। युवाओं के व्यक्तित्व निर्माण, शिविर आयोजित किए। इसके अतिरिक्त वैदिक आध्यात्मिक न्यास तथा विश्व कल्याण धर्मार्थ न्यास द्वारा भी अनेकशः सार्थक कार्य किए। विचार टी.वी. की सक्रियता देना भी इनका एक महत्वपूर्ण कार्य है। लगभग अट्ठारह बार इन्होंने विदेशों में भी प्रचार किया।

हमसे उनका सम्पर्क लगभग १९८०-८१ से रहा, जबसे वे गृह त्याग कर आए थे। उस समय के तथा बाद के भी अनेक ही संस्मरण हैं जो हमारे व्यक्तिगत अधिक हैं। उनमें से कुछ का कहीं अन्यत्र या अपनी आत्मकथा में लिखने का प्रयास करूंगा। अन्तिम दिनों तक हमारे एवं हमारे परिवार के साथ उनकी वैसी ही आत्मीयता रही.... सत्यप्रियायतिजी में वे अपनी माँ की छवि देखा करते थे... वे सभी के साथ मुझे अपना विश्वनीय, अभिन्न एवं परममित्र कहा करते थे। १९८३ से लेकर उनके साथ निरन्तर पत्र व्यवहार भी होता रहता था। वे पत्र आज भी मेरी फाईल में हमारी आत्मीयता की थाती है। वे जो भी कार्य करते थे या करना चाहते थे, मुझसे विस्तार के साथ चर्चा करते थे। अपने हर अच्छे कार्य व उनमें आए संघर्षों की मुझसे खुलकर चर्चा करते थे। यह उनका बड़प्पन ही था कि मुझे वे अपना भगवान कहा करते थे। मेरी सम्मति को अक्षरशः मानते थे। (आचार्य, वैद्य हंसराजजी और मैं एक ही कार्य करना चाहते थे...।) हालांकि अन्तिम दिनों तक उनका हमारे परिवार के साथ अत्यधिक स्नेहिल सम्बन्ध बना रहा, मगर उन दिनों संभवतः उनकी वृत्ति में कुछ व्यवधान पैदा हुआ होगा अतः वे अपने दिनांक २४ अगस्त १९८३ के पत्र में लिखते हैं- '**विगत डेढ़-दो वर्षों में पहली बार किसी परिवार में वास किया और घर जैसी स्थिति बन गई, विशेषकर बहिनजी को देखकर अपनी माता की। अब भी जब आपकी स्मृति किसी कार्यवशात् आती है तो सत्यप्रियाजी को तो याद करते ही घर की माता आंखों के आगे उपस्थित हो जाती है। संभव है भविष्य में आपके घर न आऊँ।**' इसी पत्र में उन्होंने रिवालसर के आसपास जो स्थान हमने आश्रम के लिए देखे थे, उनके बारे में भी लिखा है कि आप स्वयं चयन कर लें। मगर वहां तक गाड़ी जाती हो आदि...।

कुछ पत्रों में सुन्दर नगर में शिविर आदि लगाने के बारे में चर्चा की गई। (कालान्तर में हमने पूज्यपाद स्वामीजी महाराज के शिविर लगाए भी थे) दिनांक १-२-१९८७ के पत्र में उन्होंने षड्दर्शन एवं योग प्रशिक्षण शिविर के सम्बन्ध में विस्तृत ब्यौरा दिया था तथा क्योंकि हमारी अपने तीनों ही बच्चों को ब्रह्मचारी रखकर वैदिक धर्म का विद्वान बनाने की कामना थी, अतः इस पत्र में उन्होंने उसी सम्बन्ध में चर्चा की थी। इधर हम विशषेतः सत्यप्रियाजी तो पहले ही तीनों बेटों को ब्रह्मचारियों के रूप में वैदिक विद्वान बनाने का संकल्प लिए हुए थे, अतः हमने बड़े बेटे अखिलेश भारतीयजी के बारे में उनसे चर्चा की। वि. सम्बत् २०४५ के लिखे पत्र में उन्होंने विस्तार से बताया कि श्री अखिलेश जी को अलग से संस्कृत आदि का प्रशिक्षण देकर बाद में प्रवेश दिलाया जाएगा। उसे क्या-क्या सामान आदि लाना है इस सम्बन्ध में भी दिशा निर्देश था। दिनांक ८-४-८७ को पुनः प्रेरणात्मक एक लम्बा पत्र आया तथा उसमें बताया गया था कि यहां रोजड़ में एक योजना बन रही है, जिसमें तीन वर्ष का एक कार्यक्रम बनाया जाएगा। इस काल में ६ दर्शन तथा वैदिक सिद्धान्तों के साथ-साथ उच्च स्तर का योगाभ्यास का भी प्रशिक्षण दिया जाएगा। १०-१०-८८ को मैंने स्वामी सत्यपतिजी को पत्र लिखा जिसमें तीनों बच्चों को वैदिक विद्वान बनाने के बारे में लिखा तथा वर्तमान में बड़े बेटे अखिलेश के लिए जो उस समय बी.एस.सी. में पढ़ रहा था, प्रवेश हेतु प्रार्थना की। हमें जब स्वीकृति मिल गई तो हमें अत्यधिक प्रसन्नता हुई तथा २५-१०-८८ को हमने एक पत्र लिखा जिसमें प्रिय अखिलेश को प्रवेश की स्वीकृति पर प्रसन्नता व्यक्त की गई थी। साथ ही मैंने लिखा कि हमने अखिलेश जी के लिए समस्त सामानादि लेकर सारी तैयारियां कर ली हैं तथा १३ या २० नवम्बर को एक विशेष आयोजन करके अखिलेश भारतीय को स्वामीजी महाराजजी के साथ ही रोजड़ भेज देंगे। स्वामीजी की अस्वस्थता के कारण उनका समय हमें नहीं मिला। स्वामीजी का पत्र आया कि जब मैं स्वस्थ न हो जाऊं, आप बेटे को न भेजें.... बाद में अखिलेश जी भयंकर रूप से बीमार हो गए थे।

२४ जून १९९२ को लिखे पत्र में उन्होंने लिखा- 'आपकी सरलता,

निष्कपटता, सेवा भाव तथा अन्य अनेक धार्मिक प्रवृत्तियों के कारण मेरी आप तथा आपके परिवार के प्रति विशेष श्रद्धा रही। मैं एक बात आपसे पूछना चाहता हूं आशा है आप परमेश्वर को सर्वज्ञ, न्यायकारी मानकर सत्य ही उत्तर देंगे, क्या 'हिमालय की गोद में' नामक पुस्तिका आपने लिखी है? मुझे यह पुस्तिका कल ही पढ़ने को मिली।' असल में वह पुस्तक एक व्यक्ति ने लिखी थी और लेखक के रूप में मेरा नाम छाप दिया था, जबकि मैंने वह पुस्तक नहीं लिखी थी। बल्कि तब तक देखी भी नहीं थी। पुस्तक में आचार्यजी के बारे में कुछ अनर्गल चर्चा भी थी। मैंने उत्तर दे दिया कि मैंने कोई ऐसी पुस्तक नहीं लिखी है, बल्कि देखी तक भी नहीं है। उनका ११-७-९२ का पत्र आया जिसमें लिखा था- ' आपने सत्य का ही प्रतिपादन किया, ऐसा जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। यदि आप असत्य का अंगीकार करते तो आपकी आत्मा मर जाती, आप आत्मघाती बन जाते, जीवन भर विश्वास नष्ट हो जाता, बहुत उत्तम किया। ईश्वर आपको परमशन्ति, साहस, बल, धैर्य, ज्ञान-विज्ञान व दिव्य आनन्द प्रदान करे, यही मेरी प्रार्थना है, अस्तु....! इसी पत्र में उन्होंने उस व्यक्ति के गिरते स्तर के सम्बन्ध में बहुत कुछ लिखा है, जिसने यह पुस्तक लिखी व छपवाई थी। दिनांक ३०-८-१९९९ के पत्र में स्वामी सत्यपतिजी का २१ नवम्बर को ५१ लाख रुपए से सार्वजनिक अभिनन्दन के बारे में लिखा और कुछ कूपन भी भेजे, मगर साथ ही यह भी लिखा गया था कि किसी से भी आग्रहपूर्वक धन नहीं मांगना है, बल्कि अपनी योजना बतानी है और जितना स्वेच्छा से कोई धन दे उतना ही लेना है।

जब वे हमारे यहां से आ गए थे उसके बाद हम लगभग २० वर्ष के बाद उनसे रोजड़ में आकर मिले थे। वह मिलन भी वास्तव में ही अद्भुत था। वहां के ब्रह्मचारियों ने बताया कि वे हमसे कहते थे कि आज मेरे परम मित्र आ रहे हैं तथा स्वयं बार-बार उस कुटिया का निरीक्षण करते थे, जिसमें हमें ठहराना था। उसके बाद हम सपरिवार भी उनसे तथा पूज्यपाद स्वामीजी महाराज से मिलने जाते रहे और अजमेर, दिल्ली, मोगा तथा लुधियाना आदि में कार्यक्रमों में तथा अन्यन्त्र भी मिलना होता रहता था। रोजड़ और अजमेर में हुई गोष्ठियों में भी मिलना होता था और घंटों बहुत ही अन्तरंग बातें होती रहती थी। अप्रैल २०१५ में अन्तिम बार वे हमारे यहां बहिन जयाबेन आर्या वानप्रस्था तथा अपने कुछ अन्य श्रद्धालुओं के साथ सुन्दर नगर आए थे। समूचा परिवार जैसे प्रसन्नता से झूम सा उठा था और स्वयं आचार्य जी तो बस... इसी वर्ष १९ अक्टूबर को उनका अमेरिका से फोन आया था और वहां की परिस्थितियों से अवगत कराया था तथा कहा था कि अब मैं अकेला विदेश नहीं आऊंगा, बल्कि आपके साथ ही आऊंगा। उन्होंने इस बात पर अपनी व्यथा भी व्यक्त की थी कि कुछ विद्वान और संन्यासी (कुछ के नाम भी उन्होंने बताए) यहां केवल धन एकत्रित करने के उद्देश्य से आते हैं, जिससे भारत की विशेषत: आर्य समाज की छवि धूमिल होती है। उसी दिन उन्होंने यह भी कहा था कि मैं जनवरी में आपके यहां आऊंगा, मगर इस शर्त पर कि जनवरी में ही आप भी रोजड़ आएंगे और दूरदर्शन के लिए प्रवचनों की रिकार्डिंग भी कराएंगे...। (प्रवचनों की रिकार्डिंग के लिए वे बहुत काल से मेरे पीछे पड़े हुए थे।) मैंने उन्हें वचन दिया कि हम भी जनवरी में अवश्य ही आएंगे।

१४ नवम्बर को रात्रि दो बजे फोन की घण्टी बजी तो लगा कि गलती से इतनी रात को फोन लगा दिया है, मगर जब आचार्य संदीपजी ने अपने भर्राए हुए गले से बताया कि आचार्य ज्ञानेश्वरजी अब संसार में नहीं रहे तो जैसे कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ। फोन कट गया था, मगर मेरे लिए यह समाचार बहुत ही वेदना देने वाला था, क्योंकि आचार्य जी मेरे परम मित्र थे। अत्यधिक व्यस्तताओं के होते हुए भी सत्यप्रियायति तथा मोगा की बहिन इन्दु पुरीजी के साथ उनके अन्तेष्टि संस्कार में भी गए। उनके पार्थिव शरीर को स्वयं अपनी आंखों से आग की लपटों में धू-धू कर जलते देखा, श्रद्धांजलि सभा में भरे मन से अपने सीमित उद्गार व्यक्त किए, मगर मन आज भी विश्वास करने के राजी नहीं है कि हमने एक अत्यधिक स्नेहिल व्यक्ति को खो दिया है, वे एक कर्मठ कार्यकर्त्ता, योगी, चिन्तक और लेखक तो थे ही मगर एक बहुत ही अच्छे इन्सान भी थे। उनमें कार्य करने की अद्भुत क्षमता थी। एक बात जब ठान लेते थे तो उस कार्य को पूर्णता देकर ही रहते थे। उनकी सहृदयता और संवेदना एवं व्यवहारकुशलता अनुपम थी, वे अद्भुत ऊर्जावान व्यक्तित्व थे। मैंने श्रद्धांजलि सभा में भी कहा था कि आचार्य ज्ञानेश्वरजी के रूप में हमने आज एक उच्च कोटि के चिन्तक, कर्मठ कार्यकर्ता और सहृदय इन्सान को खो दिया है।

मनीषियों की यह बात सत्य है कि जीवन की सार्थकता मानव सेवा करने और यशस्वी बनने में ही है। आचार्य जी ने मनीषियों की इस उक्ति को चरितार्थ किया है, इसलिए वे धन्य हैं! उपनिषद् के ऋषि का सार्थक जीवन के बारे में कहना है- **'अहं ब्रह्म, अहं यज्ञ, अहं लोकाः।'** अर्थात् हम महान् बनें, हमारा जीवन यज्ञमयी भावनाओं से परिपूर्ण हो और हम संसार में यशस्वी बनकर जीएं। आत्मीय आचार्यजी ने अपने जीवन में इस सार्थकता को परिपूर्ण किया है... आज जबकि उनकी देश व समाज को और अधिक आवश्यकता थी वे हममें से अकस्मात चले गए हैं। उनकी कमी की भरपाई होना तो एकदम असंभव ही है, मगर फिर भी हमें उनके जीवन से यही प्रेरणा लेनी है कि हम भी अपने मिशन के लिए समस्त ऐषणाओं को त्याग कर आत्मना समर्पण भाव से कार्य करते रहें...। १२ अक्टूबर २०१७ को उन्होंने जो अपना अन्तिम पत्र म्यांमार से लिखा है उसी में हम लोगों को प्रेरणा दे दी है कि आर्य समाज का उत्थान कैसे हो सकता है।

पतंजलि योग साधना कुटी का होगा निर्माण

वेदयोग महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम केहलारी, जिला-खण्डवा में महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मदिवस के उपलक्ष्य में योग शिविर का आयोजन १० से १४ फरवरी तक किया गया एवं महर्षि दयानन्द बोधोत्सव के उपलक्ष्य में स्वामी अमृतानन्द सरस्वती जी द्वारा पतंजलि योग साधना कुटी का निर्माण कराया जाएगा, जिसका भूमिपूजन पूज्य आचार्य विद्यादेव जी ने किया। धन्यवाद गुरुकुल प्राचार्य आचार्य सर्वेश जी एवं गुरुकुल परिवार ने किया।

ऋषिवर दयानन्द के उपकार

जांगिड कुलश्रेष्ठ
- सत्यप्रकाश आर्य -
उपमन्त्री, वेद प्रचार मण्डल
जिला-रेवाड़ी (हरियाणा)
चलभाष- ९४१६२३१६२७

द्वापर और कलियुग के सन्धिकाल के समय आर्यवर्त्त की पावन धरा पर महाभारत का युद्ध हुआ। यह युद्ध प्रलयकारी सिद्ध हुआ। आर्यावर्त्त भू-भाग से वेद विद्या विलुप्त होने लगी। कला-कौशल, ज्ञान-विज्ञान के कार्यों व शिक्षा पर विराम लगने लग गया। कुछ समय पश्चात् बौद्ध और जैन धर्म के अर्विभाव से सत्य सनातन वैदिक धर्म को गहरा आघात झेलना पड़ा। गुरुडमवाद व पाखण्डवाद के पुजारियों के द्वारा वेद विद्या, विरुद्ध आचरण करने से सत्य सनातन धर्म को बड़ी हानि हुई। जगद्गुरु आदि शंकराचार्य ने सत्य सनातन धर्म को पुनः प्रतिष्ठित करने के लिए पूरे देश की पदयात्रा कर चार पीठों की स्थापना की। आदि शंकराचार्य का सद्प्रयास रहा कि वैदिक मान्यताओं को अंगीकार किया जाए। शंकराचार्य ने परापूजा में मूर्तिपूजा का खण्डन किया है। निज स्वार्थवश पाखण्डियों ने मूर्तिपूजा को महिमा मण्डित किया, जबकि मूर्तिपूजा जैन व बौद्ध धर्म की देन है। धर्म के प्रतिनिधियों ने उस समय मूर्तिपूजा को सत्य सनातन धर्म के आधार के रूप में स्वीकार कर लिया। इस अवैदिक कर्म से हम बार-बार युद्धों में पराजित हुए और गुलामी का दंश झेलना पड़ा। वैज्ञानिक युग में भी हम यह नहीं समझ पा रहे कि धातु, पत्थर या लकड़ी की मूर्ति जो जड़ पदार्थ है वह न हमें वरदान दे सकती है और न श्राप।

लगभग २३०० वर्ष पहले महान् कहे जाने वाले सिकन्दर ने हमारे स्वाभिमान पर चोट की ओर देश को दासता की बेड़ियां पहना कर चला गया। उसी समय से दासता का युग आरम्भ हो गया। यवनों ने हमें गुलाम बनाकर हमारे ऊपर राज किया और हमें हिन्दू या हमारे प्यारे देश को हिन्दुस्तान नाम दे दिया। हमने आंखें बन्द कर उसे स्वीकार कर लिया। उसके पश्चात् अंग्रेजी शासन तन्त्र ने हमें दोहरी गुलामी का उपहार दिया। राजा और नवाब अंग्रेजों के गुलाम और इन राजकुलों की गुलाम प्रजा! इस उपहार के अतिरिक्त भी अंग्रेजों ने हमें इण्डियन और देश को इण्डिया नाम प्रदान कर दिया। हमने इसे भी अपना अहो भाग्य मानकर स्वीकार कर लिया। कम से कम अब तो देश को खड़ा होना चाहिए कि अब कोई और हमें नया नाम प्रदान न कर दे।

दासता व पाखण्डवादी काल में छुआछूत अपने चरम् पर थी, जिससे सामाजिक संरचना में भारी बिखराव आ चुका था। देशभक्ति और राष्ट्रीय विचारों की भावना राजकुलों को उस समय आत्म मन्थन करने के लिए विवश करती थी, जब विदेशी शासन तन्त्र शासक राजवंशों पर नई नकेल डालती थी। देशवासियों की दशा अति दयनीय थी। शोषण, उत्पीड़न, अत्याचार व अनाचार न केवल विदेशी शासकों द्वारा किया जाता था, अपितु अपने कहे जाने वाले राजकुल भी वही सब कुछ करते थे जैसा विदेशी तन्त्र करता था।

दयनीय स्थिति के काल-खण्ड में पीड़ित मानवता का उद्धार करने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती, गुरु विरजानन्द से संकल्पबद्ध आशीर्वाद लेकर सोए भारत को जगाने आए। सम्पूर्ण वेद ज्ञान की ज्योति से उन्होंने सर्व-समाज में नव चेतना का संचार किया। स्वदेशी शासन व्यवस्था विदेशी शासन व्यवस्था से सदैव अच्छी रहती है। सन् १८५७ के पश्चात् स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए यह प्रथम उद्घोष था। गुरुडमवाद, पाखण्डवाद, अविद्या और अन्धकार के भ्रमजाल में भारतवासी उलझे हुए थे। अपने देवताओं को छोड़कर नौ गजे पीरों की पूजा करने और कब्रों में सिर पटक कर अपने भले की आशा करने वाले विवेकहीन समाज को सन्मार्ग दिखलाने का कार्य देव दयानन्द ने किया। **कालजयी धर्मग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश की रचना कर विश्व को एक सन्देश दिया कि सत्य सनातन वैदिक धर्म सर्वश्रेष्ठ धर्म है।** जीव, ब्रह्म और प्रकृति त्रैतवाद के सिद्धान्त को वैज्ञानिक व तर्क आधार पर प्रभाणित किया। आर्य समाज की स्थापना कर वैदिक विचारों के प्रचार-प्रसार की व्यवस्था प्रदान की। रेवाड़ी (हरियाणा) में सन् १८७९ में विश्व की प्रथम गौशाला स्थापित करवाई। गौरक्षा के लिए उनका यह क्रान्तिकारी कदम था। **कृण्वन्तो विश्व मार्यम्** और **विश्व कुटुम्बकम्** का उद्घोष कर विश्व शान्ति का सन्देश दिया।

देव दयानन्द निःस्वार्थभाव से जन जागृति अभियान में लगे हुए थे और दुष्ट प्रवृत्तियों के लोग उनके जीवन के ग्राहक बन रहे थे। ऋषिवर का उद्बोधन था- **''मैं परम आनन्द की समाधि को छोड़कर तुम्हें जगाने आया हूं,'' परन्तु पापियों ने उन्हें जहर पिला कर चिर निन्द्रा में सुला दिया।** यह हमारे देश का दुर्भाग्य रहा कि अमृत पिलाने वाले को हमने जहर दिया। ऋषिवर ने जिस व्यवस्था के विरुद्ध जीवनभर संघर्ष किया वह व्यवस्था स्वतन्त्र भारत में और अधिक बलवती होकर फलफूल रही है। गुरुडमवाद की घिनौनी छवि के रूप में कथित धर्मगुरुओं की काली करतूते हम सबके सामने हैं। सरल स्वभाव की भोली-भाली जनता इन मठाधिशों के मकड़जाल में उलझ कर अपना सब कुछ खो देती है। **अब पछताए क्या होत है जब चिड़िया चुग गई खेत।** समय पुकार रहा है आर्यवीरो! उठ खड़े हो, समाज से अविद्या व अन्धकार को दूर भगाने के लिए शुद्ध संकल्प से आगे बढ़ें। प्यारे ऋषि को शत्- शत् नमन

स्त्रियों को वेदाध्ययन का अधिकार- ऋग्वेद

- शिवनारायण उपाध्याय -
७३, शास्त्री नगर, दादावाड़ी, कोटा, (राज)
चलभाष-०७४४२५०१७८५

महाभारत के युद्ध के बाद हमारे देश में अध्ययन-अध्यापन का कार्य अत्यन्त शिथिल हो गया था। जब पुरुषों ने ही अध्ययन की उपेक्षा कर दी तब स्त्रियों की शिक्षा पर कौन ध्यान देता। स्त्रियों और शूदों को तो वेदाध्ययन करने पर पाबन्दी ही लगा दी गई। कहा जाने लगा- **'स्त्री शूद्रौ नाधीयतामिति श्रुतेः'** वेद में कहा गया है कि स्त्री और शूद्र विद्याध्ययन न करें, जबकि वैदिक वाङ्मय में यह कहीं भी नहीं कहा गया है। स्वामी दयानन्द पहले महापुरुष हुए हैं जिन्होंने शिक्षा का अधिकार मनुष्य मात्र को दिया है। उन्होंने यजुर्वेद अध्याय २६ के दूसरे मन्त्र को इस विषय में प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत किया-

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानी जनेभ्यः।
ब्रह्म राजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय।।

मन्त्र में परमेश्वर का कथन है कि जैसे मैं सब मनुष्यों के लिए इस कल्याण करने वाली ऋग्वेदादि चारों वेदों की वाणी का उपदेश करता हूं वैसे तुम भी किया करो। फिर मंत्र में स्पष्ट कह दिया गया है कि इसका उपदेश ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्र, वैश्य, घुमक्कड़ जातियां, दास-दासी आदि सभी के लिए है।

फिर स्वामी दयानन्द ने अथर्ववेद ११,५,१८ का प्रसिद्ध मन्त्र **'ब्रह्मचर्य्येण कन्या३ युवानं विदन्ते पतिम्'** भी प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत किया है। इतना ही नहीं उन्होंने **'इमं मंत्र पत्नी पठेत'** श्रौत सूत्रादि के आधार पर लिखकर प्रश्न किया है कि यदि स्त्री अशिक्षित है तो फिर वह मंत्र को कैसे पढ़ेगी अर्थात् वेदों में स्त्री शिक्षा का आदेश है। मुझे ऋग्वेद मन्त्र ७, सूक्त ३४ को देखकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि इसकी प्रथम सात ऋचाओं का विषय ही स्त्री शिक्षा से सम्बन्धित है। इन मन्त्रों के ऋषि भी वैदिक वाङ्मय के शीर्षस्थ ऋषि वशिष्ठ हैं! पाठकों को इन मन्त्रों से परिचित कराना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूं।

प्र शुक्रैतु देवी मनीषा अस्मत्सुतष्टो रथो न वाजी।।१।।

पदार्थ- (**शुक्र**) शुद्ध अन्तःकरण युक्त शीघ्रकारिणी (**देवी**) विदुषी कन्या (**अस्मत्**) हमारे से (**सुतष्टः**) उत्तम कारू अर्थात् कारीगर के बनाए हुए (**वाजी**) वेगवान् (**रथः**) रथ के (**न**) समान (**मनीषाः**) उत्तम बुद्धियों को (**प्रैतु**) प्राप्त होवे।

भावार्थ- इस मन्त्र में उपमालंकार है- सभी कन्याएं ब्रह्मचर्य के नियम की पालना करते हुए विदुषियों से सब विद्या पढ़ें।

विदुः पृथिव्या दिवो जनित्रं शृण्वन्त्यापो अधः क्षरन्तीः।।२।।

पदार्थ- जो कन्या (**अधः क्षरन्तीः**) नीचे को गिरते वर्षते हुए जलों के समान विद्या (**शृण्वन्ति**) सुनती है वे (**पृथिव्याः**) पृथ्वी और (**दिवः**) सूर्य के (**जनित्रम्**) कारण को (**विदुः**) जानें।

इस ऋचा में वाचकलुप्तोमालंकार है- जैसे मेघ से जल वेग से पृथ्वी पर आता है तो सम्पूर्ण प्रजा आनन्दित हो जाती है, इसी प्रकार जो कन्या पढ़ाने वाली विदुषी महिला से विद्या प्राप्त कर पति आदि को निरन्तर सुख देती है वह श्रेष्ठ होती है।

फिर अगली ऋचा इसी विचार को विस्तार देकर कहती है-

आपश्चिदस्मै पिन्वन्त पृथ्वीर्वृत्रेषु शूरा मंसन्त उग्राः ।।३।।

पदार्थ- जो कन्या (**पृथ्वीः**) भूमि और (**आपः**) जल (**चित्**) ही के समान (**अस्मै**) इस विद्या विहार के लिए (**पिन्वन्त**) सिंचन करती हुई और (**वृत्रेषु**) धनों के निमित्त (**उग्राः**) तेजस्वी (**शूराः**) शूरवीरों के समान (**मंसन्ते**) मान करती हैं वे विदुषी होती हैं।

भावार्थ- इस ऋचा में उपमालंकार है- जो कन्या जल के समान कोमल गुण युक्त, पृथ्वी के समान सहनशील, शूरवीरों के समान उत्साहिनी होकर विद्याओं को प्राप्त करती है वह विदुषी कहलाती है। कन्याओं को चाहिए कि वे पूर्ण एकाग्रता से विद्या ग्रहण करें।

आ धूर्ष्वस्मै दधाताश्वानिन्द्रो न वज्री हिरण्यबाहुः।।४।।

पदार्थ- हे कन्याओं! तुम (**अस्मै**) इस विद्या को ग्रहण करने के लिए (**धूर्ष**) रथों के आधार धूरियों में (**अश्वान्**) घोड़े और (**हिरण्यबाहुः**) जिसकी भुजाओं में दान के लिए स्वर्ण विद्यमान उस (**वज्री**) अस्त्र-शस्त्र से युक्त (**इन्द्रः**) सूर्य तुल्य राजा के (**न**) समान (**ब्रह्मचर्य**) को (**आ, दधात**) अच्छे प्रकार धारण करो।

भावार्थ- जैसे सारथी घोड़ों को रथ में जोड़ कर नियम से रथ को चलाता है और जैसे सूर्य के समान तेजस्वी राजा अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित होकर रथ में स्वर्ण लेकर दान देने को उद्यत होता है, ठीक उसी प्रकार कन्या अपनी आत्मा, अन्तःकरण और इन्द्रियों को विद्या की प्राप्ति के लिए जोड़कर नियम से चलावे।

कन्या को विद्या को निरन्तर बढ़ाते भी रहना चाहिए।

अभि प्र स्थातचाहेव यज्ञं यातेव पत्मन्त्मना हिनोत।।५।।

पदार्थ- हे कन्याओं! तुम विद्या प्राप्ति के लिए (**अहेव**) दिनों के समान (**यज्ञम्**) पढ़ने-पढ़ाने रूप यज्ञ के (**अभि प्रस्थात्**) सब ओर से जाओ (**त्मना**) अपने से (**पत्मन्**) मार्ग में (**यातेव**) जाते हुए के समान (**हिनोत**) बढ़ाओ।

भावार्थ- जैसे दिन अनुकूल से क्रम से जाते और आते हैं जैसे पथिक जन नित्य चलते रहते हैं वैसे ही कन्याएं भी अनुकूल क्रम से विद्या प्राप्ति के मार्ग से चलती हुई विद्या प्राप्ति रूप यज्ञ को बढ़ावें।

इसी विषय को विस्तार देती हुई दधात केतुं जनाय वीरम् ।।६।।

पदार्थ- हे कन्याओं! जैसे (**जनाय**) राजा के लिए (**समत्सु**) संग्रामों में (**वीरम्**) पूरा करने वाले जन को प्रेरणा देते हैं वैसे (**त्मना**) अपने से (**केतुम्**) बुद्धि को (**दधात**) धारण करो और (**यज्ञम**) संग करने योग्य विद्या बोध को (**हिनोत**) बढ़ाओ।

भावार्थ- इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालंकार है- जैसे शूर वीर बुद्धिमान राजा लोग उत्तम प्रयत्न के द्वारा संग्रामों में विशेष रूप से विजय प्राप्त करते हैं वैसे ही कन्याओं को अपनी इन्द्रियों को जीतकर विद्या की प्राप्ति रूपी विजय के लिए विशेष प्रयत्न करना चाहिए।

उदस्य शुष्माभ्दनुर्नार्त बिभर्तिभारं **पृथिवी न भूम**।।७।।

पदार्थ- हे कन्याओं! जैसे हम (**भारम्**) भार को (**पृथ्वी**) भूमि (**न**) जैसे और (**भानुः**) किरणयुक्त सूर्य जैसे (**न**) वैसे (**अस्य**) इस विद्या व्यवहार के (**शुष्मात्**) बल से विदुषी (**भूम**) हों अथवा जैसे यह भानु पृथ्वी आदि के भार को (**उद्बिभर्ति**) उत्कृष्टता से धारण करता है समस्त उस व्यवहार को (**आर्त**) प्राप्त करता है वैसे तुम होओ।

भावार्थ- जैसे विद्वान व्यक्ति इस विद्या बोध के बल से सुख को धारण करते हैं, जैसे सूर्य, पृथ्वी आदि ग्रहों के भार को धारण करता है वैसे कन्याएं विद्या बल से आनन्द को धारण करती है।

ऋग्वेद में अन्यत्र यह भी कहा गया है कि कन्याओं को आयुर्वेद का ज्ञान अवश्य कराना चाहिए। अब हम दर्शाना चाहते हैं कि कन्याओं को शिक्षा देने वाली अध्यापिकाएं कैसी हों?

नू रोदसी अभिष्टुते वशिष्ठे ऋतावनो वरुणो मित्रो अग्निः।
यच्छन्तु चन्द्रा उपमंनो अर्कं यूयंपातस्वस्तिभिः सदानः ।।

ऋ. ७.४१.७

पदार्थ- जो पढ़ाने और उपदेश करने वाली (**रोदसी**) आकाश और पृथ्वी के समान (**अभिष्टुते**) सामने पढ़ाती अथवा उपदेश करती वे (**वसिष्ठैः**) अतीव चनाढ्यों के साथ जैसे (**मित्रः**) मित्र के समान प्रिय आचरण करने वाला (**वरुणः**) जल के समान शान्ति देने वाला और (**अग्निः**) अग्नि के समान प्रकाशित प्रसिद्ध जन तथा (**चन्द्राः**) आनन्द देने वाले (**नः**) हमारे लिए (**उपमम्**) उपमा जिसकी दी जाती उसको सिद्ध कराने वाले (**अर्कम्**) सत्कार करने वाले धन धान्य को (**नु**) शीघ्र (**यच्छन्तु**) देवें वैसे हम लोगों को (**ऋतावानः**) सत्य का प्रकाश करने वाली कन्या जन निरन्तर विद्या देवे। हे विदुषी स्त्रियों! (**यूयम्**) तुम (**स्वस्तिभिः**) सुखों से (**नः**) हम लोगों की (**सदा**) सदैव (**पात**) रक्षा करो।

भावार्थ- कन्याओं को विद्या देने वाली अध्यापिकाएं, भूमि के तुल्य क्षमाशील, लक्ष्मी के तुल्य शोभायमान, जल के तुल्य शान्त, सहेली के तुल्य उपकार करने वाली विदुषी होवें।

कन्याओं को शिक्षा में किन विषयों में अधिक ध्यान दिया जावे, इस विषय में ऋग्वेद मण्डल १ सूक्त ७९ की ऋचा प्रथम में कहा गया है-

हिरण्य केशो रजसो विसारे ऽहि र्धुनिर्वातइव ध्रजीमान् ।
शुचिभ्राजाउषसो नवेदायशस्वतीरपस्युवो न सत्याः।।

पदार्थ- हे कुमारी, कन्या लोगों! (**रजसः**) ऐश्वर्य के (**विसारे**) स्थिरता में (**हिरण्यकेश**) हिरण्य स्वर्णवत् (**धुनि**) शत्रुओं को कंपाने वाले (**अहिः**) मेघ के समान (**ध्रजीमान**) शीघ्र चलने वाले (**वात इव**) वायु के समान (**उषसः**) प्रातःकाल के समान (**शुचिभ्राजाः**) पवित्र विद्या विज्ञान से युक्त (**नवेदाः**) अविद्या का निषेध करने वाली विद्या युक्त (**यशस्वतीः**) उत्तम कीर्ति युक्त (**अपस्युवः**) प्रशस्त कर्म करने वाली के (**न**) समान तुम (**सत्याः**) सत्य गुण कर्म स्वभाव वाली होवो।

भावार्थ- इस ऋचा के भावार्थ में स्वामी दयानन्द सरस्वती लिखते हैं कि इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालंकार है जो कन्या लोग चौबीस वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य सेवन और जितेन्द्रिय होकर छः अङ्ग अर्थात् शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष। उपाङ्ग अर्थात् मीमांसा, वैशेषिक, न्याय, योग, सांख्य और वेदान्त तथा आयुर्वेद अर्थात् वैद्यक विद्या आदि को पढ़ती हैं वे सब संसारस्थ मनुष्य जाति की शोभा करने वाली होती है।

स्त्री का शिक्षित होना इसलिए भी आवश्यक है कि उस पर दो कुलों के सम्मान को बनाए रखने का दायित्व है।

उषा आ भाहि भानुना चन्द्रेण दुहितार्दिवः।
आवहन्ती भूर्यस्मभ्यं सोभगं व्युच्छन्ती दिविविष्टषु ।।

ऋ. १.४८.९

पदार्थ- हे (**दिवः**) सूर्य की प्रकाश की (**दुहितः**) पुत्री के समान कन्ये! जैसे (**उषाः**) प्रकाशमान उषा (**भानुना**) सूर्य और (**चन्द्रेण**) चन्द्रमा से (**अस्मभ्यम्**) हम पुरुषार्थी लोगों के लिए (**भूरि**) बहुत (**सोभगम्**) ऐश्वर्य के समूहों को (**आवहन्ती**) सब ओर से प्राप्त कराती (**दिविष्टिषु**) प्रकाशित कान्तियों में (**व्युच्छन्ती**) निवास कराती हुई संसार को प्रकाशित करती है वैसे ही तू विद्या और शमादि से (**आ भाहि**) सुशोभित हो।

भावार्थ- इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालंकार है। जैसे विदुषी कन्या दोनों माता और पति के कुल को उज्जवल करती है वैसे ही उषा दोनों स्थूल और सूक्ष्म वस्तुओं को प्रकाशित करती है। ऋग्वेद में केवल स्त्रियों की विद्या प्राप्ति की चर्चा ही नहीं है, वरन् ऋग्वेद में तो अपाला, आत्रेयी, कुमारी वाग्नेय, लोपामुद्रा, ऋजिस्वा, अदिति, दाक्षायणी, सुवेदा, रेणु, घोषा, काक्षीवती, कुमारी यामायन आदि ने ऋषिकाओं का पद भी प्राप्त किया है।

गौरीर्मिमाय सलिलानितक्षत्येकपदी द्विपदो मा चतुष्पदो।
अष्टपदोनवपदो बभूवुषी सहस्त्राक्षरा परमेश्व्योमन् ।।

ऋ.१.१६४.४१

पदार्थ- हे स्त्री पुरुषो! जो (**एक पदी**) एक वेद का अभ्यास कराने वाली अथवा (**द्विपदी**) जिसने दो वेद अभ्यास किए अथवा (**चतुष्पदी**) चारों वेदों को पढ़ाने वाली वा (**अष्टपदौ**) चार वेद और चार उपवेद की पढ़ाने वाली अथवा (**नवपदौ**) चार वेद, चार उपवेद और व्याकरण आदि शिक्षा युक्त (**बभूवुषी**) अतिशय करके विद्याओं में प्रसिद्ध होती और (**सहस्त्राक्षरा**) असंख्यात अक्षरों वाली होती है हुई और (**परमे**) सबसे उत्तम (**व्योमन्**) आकाश के समान व्याप्त निश्चल परमात्मा के निमित्त प्रयत्न करती है और (**गौरीः**) गौ, स्वर्ण युक्त विदुषी स्त्रियों को (**मिमाय**) शब्द कराती अर्थात् (**सलिलानि**) जल के समान निर्मल वचनों को (**तक्षती**) छांटती अर्थात् अविद्यादि दोषों से अलग करती हुई (**सा**) वह संसार के लिए अत्यन्त सुख करने वाली होती है।

भावार्थ- इस ऋचा में स्पष्ट है कि ऋषिकाएं सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय की जानकर होती थी। महिलाओं को वेदाध्ययन की पूर्ण स्वतंत्रता थी। वे एक वेद, दो वेद अथवा चारों वेदों का अध्ययन कर सकती थीं। कुछ महिलाएं वेदों के साथ-साथ व्याकरण और उपवेदों का भी अध्ययन कराती थी और फिर गुरुकुलों में कन्याओं को उनका अध्ययन भी करती थी। इस ऋचा ने यह व्यक्त कर दिया है कि स्त्रियों को केवल वेदाध्ययन का अधिकार ही नहीं वरन् वे तो इस अधिकार से आगे बढ़कर वेदाध्ययन कराती भी थी। इतिशम् ।

वैज्ञानिक दृष्टि से वेद मन्त्र की व्याख्या-भूमि की स्थिति

- बाबूलाल जोशी -
बी-६२ रविशंकर नगर,
एमआईजी कॉलोनी, इंदौर (म.प्र.)
दूरभाष - ०७३१-२४३२२८५

आधुनिक शिक्षा पद्धति से शिक्षित लोगों को प्राय: यह जिज्ञासा होती है कि क्या वेदों में विज्ञान है? यदि है तो वह किस स्वरूप में है। वेद मन्त्रों की व्याख्याएं प्राय: अधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक स्वरूप में होती है। इसका सहज सरल उत्तर होगा कि इन भाष्यों से कुछ व्याख्याओं में विज्ञान की एक झलक दृष्टिगोचर होती है। वेदों में ऐसी शोध के अन्तर्गत अथर्ववेद जिसका मुख्य विषय विज्ञान है। एतदर्थ पृथिवी सूक्त के कुछ मन्त्र विशेष उल्लेखनीय है। अथर्ववेद के १२वें काण्ड के प्रथम अनुवाद में ६३ मन्त्र हैं, इसका मन्त्र क्रमांक २ अवलोकनार्थ प्रस्तुत है।

असंबाधं मध्यतो मानवानां यस्या उद्वत: समं बहु।
नानावीर्या ओषधीर्या विभर्ति पृथिवी न: प्रथतां राध्यतां न:।। अथर्व. १२-१-२

पृथिवी के सूक्ष्म अवलोकन से मनन की गति बढ़ती है इसका प्रारम्भ इसके स्थलों यथा समतल, गहरे और ऊंचे पर्वत आदि इनके माध्यम से विविध सामर्थ्य बल, औषधियां आदि की धारक यह भूमि हमारे लिए विस्तीर्णता, स्थान और उपलब्धियों से परिपूर्ण हो।

इन बातों का अर्थ एक विविध प्रकार के निर्माण कार्यों में दक्ष सिविल इंजीनियर की दृष्टि में यह होगा- इसके समतल भागों पर विविध प्रकार के निर्माण, आवास-भवन-आवागमन के साधन मार्ग आदि, इंजीनियरिंग संस्थानों के लिए आवश्यक कार्यालय भवन, यन्त्रों के लिए भवन, उद्यान, कृषि भूमि, खेल के मैदान आदि बनाये जा सकते हैं। नहरों का निर्माण जो कृषि कार्यों के लिए आवश्यक हो। निम्न स्थानों जैसे जल संग्रह हेतु तालाब, झील, जल के कुण्ड बहते हुए पानी को रोकने के बांध आदि। उत्तम जल को आवश्यकता के अनुरूप पेय जल संग्रहण के स्थान ऐसे नीचे स्थानों में सरलता से उपलब्ध है, कुछ बनाये भी जा सकते हैं। उच्च स्थानों पर औषधियां जो प्राकृतिक रूप से विद्यमान हैं उनके साथ ही आवश्यक रोपण क्रिया के पश्चात् कई प्रकार की औषधियां उगाई जा सकती है। ऊंचे स्थान से गिरने वाले जल स्त्रोतों से जल विद्युत उत्पन्न की जा सकती है तथा यह शुद्ध पेय जल प्राप्ति का सरलतम साधन भी है।

काव्यानुवाद

मनन, गति बढ़ावे, सम निम्न उच्च स्थाना।
बल औषधि की धारक, विस्तीर्ण भूमि होवे।।
यस्यां समुद्रउत सिन्धुरापो यस्यामन्नं कृष्टय: संबभुवु:।
यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत्सानो भूमि: पूर्व पेये दधातु।।
- अथर्व- १२.१.३

जिस भूमि में समुद्र और नदियों का जल, जिससे कृषकगण अन्न उत्पन्न करते हैं। कृषि कर्म भी एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग कार्य है। उत्पन्न किए गए अन्न प्राणि जगत् का भोजन है। विविध प्रकार के कार्य करने वाले लोग इस भूमि पर निवास करते हैं। सब लोगों के कार्य क्षेत्र अलग-अलग होते हैं, परन्तु भोजन सबको चाहिए, अन्न उत्पन्न करने वाले और उनके सहायक अपने उपभोग के पश्चात् शेष अन्न को जन-जन तक पहुंचावें।

काव्यानुवाद

जिस भूमि में हैं सागर, तालाब, झील, झरने।
भरपूर अन्न होता है इस शस्य श्यामला में।।
आनन्द प्राणी पाते, लख सौख्य प्राप्त सारा।
उद्योग शिल्प कर्मी, सुख से निवास करते।।
रसपान प्राप्त होवे, अधिकार यह हमारा।
उपभोग कर बचे जो अन्यों का अन्न सारा।।

शेष आगामी अंक में..

शुचिर्यज रूप मम जीवन बने

ज्येष्ठयं चमे आधिपत्य च मे, मन्युश्चमे भामश्च मे,
अमश्च में अम्भश्च मे, जेमा च मे महिमा च मे,
वरिमा च मे प्रथिमा च मे, वर्षिमा च मे, द्राधिमा च मे,
वृद्धं च मे वृद्धिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।।
(यजुर्वेद १८/४)

यज्ञरूप प्रभो! शुचिर्यजरूप मम जीवन बने।
कर्म हो मेरे सभी परमार्थमय पुरुषार्थ मय।।
उर्ध्वमुख यज्ञाग्नि की ज्वाला से पा नित प्रेरणा।
सर्वतोदिक उर्ध्वगामी वृद्धि की हो भावना।।
ज्ञान, गुण में श्रेष्ठता, अरु ज्येष्ठता धारण करूं।
मैं सुपथ दर्शक, सुकर्मभियान में सबका बनूं।।
'मन्यु मे' क्रोधाग्नि, सात्विक मम मनस जागे तुरत।
यदि कहीं अन्याय, पापाचार का देखूं कुकृत।।
मेरे अन्दर **'भाम अम'** हो आत्म बल तन बल प्रखर।
'अम्भ' रस माधुर्य हो, शुचि प्रेम जन मन तुष्टिकर।
आन्तरिक अरु बाह्य जीवन के जटिल संग्राम में।
मुझे **'जेमा'** विजय श्री हो प्राप्त **'महिमा'** सुयश मय।।
मम मनस्, तन, हृदय, **'वरिमा'**-शुचिर स्वस्थ उदार हो।
मम धरम, यश, ज्ञान का **'प्रथिमा'** सतत विस्तार हो।।
'वर्षिमा'-वार्धक्य सुख, अरु शतायु को प्राप्त कर।
'द्राधिमां'- मैं दूरदर्शी-दीर्घता पाऊं प्रवर।।
'वृद्धश्च मे- वृद्धिश्च मे' मम ज्ञान, धन विद्यादि की।
हो सतत् सर्व भांति- संवृद्धि सकल सुख साज की।।
सर्व आत्मिक और भौतिक तृप्ति सुख अरु सम्पदा।
यज्ञ धर्मानुष्ठान से मुझको रहे मिलती सदा।।

स्मृति शेष- दयाशंकर गोयल
१५५४ डी. सुदामा नगर इंदौर

स्वप्न

संकलनकर्ता
- मृदुला अग्रवाल -
१९ सी, सरतबोस रोड, कोलकाता
चलभाष- ९८३६८४१०५१

पीछे महर्षि याज्ञवल्क्य और जनक के संवाद में स्वप्न की पर्याप्त व्याख्या की जा चुकी है, किन्तु वेद में तथा नवीन प्रयोगों में स्वप्न पर विस्तार से विचार किया गया है।

ब्राह्य जगत् से इन्द्रियों का सन्बन्ध विच्छेद होने पर मन की अंतर्लीला का नाम स्वप्न है। जन साधारण मानता है कि सोने पर ही स्वप्न आते हैं, लेकिन शास्त्रानुसार तो दिन एवं रात्रि दोनों में ही स्वप्न आया करते हैं। अत: इन्हें दो भागों में विभक्त किया गया है- दिवा-स्वप्न एवं रात्रि-स्वप्न। रात्रि-स्वप्न में मन की अंतर्लीला मुख्य एवं इन्द्रियों का मन से सम्बन्ध-विच्छेद गौण होता है। इसके विपरीत दिवा स्वप्न में मन की अंतर्लीला गौण एवं इन्द्रियों का मन से सम्बन्ध विच्छेद मुख्य होता है। निद्रावस्था में स्वप्न के घटनाक्रम का ज्ञान तो होता है, लेकिन क्यों होता है, कहां से होता है और किसके द्वारा होता है ये शंकाए बराबर उठा करती है। बहुत कम लोग परिचित होंगे कि ये सारी क्रियाएं मन द्वारा ही सम्पादित होती है।

मूल लेखक

- स्मृति शेष -
श्रद्धेय शान्तिस्वरूप जी गुप्त

मन दो होते हैं- एक परम पुरुष परमात्मा का मन जो सर्व शक्ति सम्पन्न होता है, दूसरा मनुष्यादि इतर प्राणियों का मन, जो अपूर्ण शक्तिवाला होता है। भगवान के मन द्वारा ही समस्त मानव मन का निर्माण होता है। इसी सार्वभौम मन से व्यक्ति के मन का निर्माण होता है। अन्तर इतना ही है कि जिस प्रकार भगवान सर्वज्ञ है और जीव अल्पज्ञ, इसी भाँति परमात्मा का मन पूर्ण शक्ति सम्पन्न है एवं मानव का मन अपूर्ण शक्तिवाला।

यह समस्त सृष्टि ही इस मन की उपज है अत: संसार में जो क्रियाएं हो रही हैं, वे सब मन से ही सम्बन्धित है जो-जो क्रियाएं भगवान के मनस्तत्व में होती हैं वे सब व्यक्ति के मन में भी होनी सम्भव है। मन की अनेक क्रियाओं में से स्वप्न भी एक है।

सृष्टि की उत्पत्ति का वर्णन करते समय का विवरण देते हुए वेद में लिखा है-

कामस्तदग्रे समवर्त्ततााधि मनसो रेत: प्रथमं यदासीत् ।

ऋग्वेद १०.१२९/४

(सृष्टि की उत्पत्ति के समय सबसे पहले काम की उत्पत्ति हुई है जो मन का वीर्य है।) काम को संस्कृति में मनोज कहते हैं- 'मनसि जायतीति मनोज:। अत: यह स्पष्ट हो गया कि समस्त संसार मन की उपज है। मन ही ब्रह्मा है जिसके द्वारा सृष्टि की उत्पत्ति होती है।

इस मन की विविध शक्तियों का वर्णन यजुर्वेद के ३४वें अध्याय में बड़ी सुन्दरता से किया गया है-

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैव, तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दुरङ्गं ज्योतिषां ज्योतिरेकन्तन्मे मन: शिवसंकल्पमस्तु।। ३४/१

(जो मन जाग्रत एवं स्वप्न दोनों ही अवस्था में बहुत दूर निकल जाता है- स्थान की दूरी जिसमें किसी प्रकार की बाधा नहीं दे सकती, भूत, भविष्य, वर्त्तमान तीनों काल भी जिसकी गति में बाधा नहीं पहुंचा सकते और जिसकी ज्योति में स्थान की दूरी भी बाधा नहीं दे पाती अर्थात् वह इसी लोक में नहीं, लोक-लोकान्तर में पहुंच, जा सकता है एवं जाग्रत तथा सुप्तावस्था दोनों में ही वह ज्ञान के अन्तिम छोर तक भी पहुंच, जा सकता है ऐसा मेरा मन शुभ संकल्पों वाला हो।

मन की इस काल की जानकारी की शक्ति के बारे में अर्जुन द्वारा पूछे जाने पर गीता में भगवान ने कहा है-

बहूनि में व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन।
तान्यहं वेद सर्वानि न त्वं वेत्थ परंतप।।४।५

(हे अर्जुन! मेरे और तुम्हारे अनेकानेक जन्म हुए हैं। उन सबके बारे में मैं तो जानता हूं तू नहीं जानता।) भगवान क्यों जानते थे और अर्जुन को ज्ञान क्यों नहीं था? इसका कारण यह है कि साधारण मनुष्य अपने वर्त्तमान जीवन के जंजाल में इतना फंसा रहता है कि उसके स्वप्नों में भी जीवन की साधारण बातें ही दृष्टिगोचर होती रहती है, लेकिन जो योगी जन अपनी इन्द्रियों का सम्बन्ध बाह्य जगत् से विच्छिन्न करके अपने मन को अन्तर्मुख कर लेते हैं- उन्हें अपने अंत:पट पर निहित जन्म जन्मान्तरों के संस्कारों की जांच पड़ताल करने का अवसर प्राप्त हो जाता है। महर्षि पतञ्जली ने भी यही बात योगदर्शन में लिखी है-

संस्कार-साक्षात्करणात् पूर्वजातिज्ञानम् ।

(योग-द्वारा जितना चित्त विशुद्ध हो गया है, वे संस्कारों को साक्षात् करके अपने पूर्व जन्म का ज्ञान प्राप्त करने में समर्थ हो जाते हैं) लेकिन यह तभी संभव है जब मनुष्य बाह्य इन्द्रियों से अपना सम्बन्ध विच्छेद करके अपने मन को एक केन्द्र बिन्दु पर स्थित करने में समर्थ हो जाता है। उस समय यह मन आणविक (ऐटोमिक) प्रतिभा सम्पन्न हो जाता है और उस प्रस्फुटित ज्योति के प्रकाश में भूतकाल के अंतराल में निहित सारे रहस्य योगी को विदित हो जाते हैं। वह त्रिकालज्ञ हो जाता है।

एक बार विलायत के एक 'मनोविज्ञान' के प्रोफेसर के मन में (जो

यह समझते थे कि संसार को मनोविज्ञान हमारी ही देन है) भारत के योगियों से, जिनकी विभूतियों की उसने बड़ी प्रशंसा सुन रक्खी थी, साक्षात्कार करके इस विज्ञान को जानने की इच्छा हुई है। अत: वह यहां आकर हिमालय की गुफाओं में रहने वाले अनेक योगियों से मिला। तिब्बत की सीमा पर उसे एक वयोवृद्ध लामा साधु मिले। उनसे उस प्रोफेसर ने जिस भाषा में बात की उसी भाषा में उसने उसे उत्तर दे दिया। वह चार भाषाएं - अंग्रेजी, फ्रांसीसी, जर्मन और स्पेनी जानता था। साधु से इन चारों भाषाओं में उत्तर सुनकर वह आश्चर्यचकित रह गया। उसने प्रश्न किया- 'महाराज! क्या आपने ये सब भाषाएं अध्ययन की है।' साधु ने गर्दन हिलाकर नाही की। महात्मा कहने लगे- तुम्हें इन चार भाषाओं के उत्तर से ही आश्चर्य होता है- मैं संसार के सब मनुष्यों से उनकी भिन्न-भिन्न भाषाओं में तो बात कर ही सकता हूं इसके अलावा प्राणिमात्र-कीट, पतंगा, पशु, पक्षी से भी उनकी भाषा में बात कर सकता हूं। ऐसा ज्ञान तो प्रोफेसर की कल्पना से भी परे था। अत: यह विद्या सिखने के लिए उसने अपनी प्रोफेसरी से त्यागपत्र दे दिया और वह उस महात्मा का शिष्य हो गया। अभी कुछ समय पूर्व इस विषय में उसकी एक पुस्तक भी प्रकाशित हुई है।

प्रोफेसर ही क्यों, इस विषय में साधारणतया अपने देशवासियों को भी आश्चर्य हो सकता है, लेकिन अगर हम अपने धर्म ग्रन्थों के परिशीलन का कष्ट उठावें तो इसका रहस्य तत्काल समझ में आ जावेगा। यह जीव केवल संस्कारों के कारण ही चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करता है, अत: सब प्रकार के जीव-जन्तु, पशु-पक्षी एवं मनुष्यादि समस्य योनियों की भाषा, स्वभाव, कर्म आदि के संस्कार उसके मानस पटल पर अंकित होते ही जाते हैं। अपनी मानसिक शक्ति को उद्‌बुद्ध करके वह सारे ब्रह्माण्ड का ज्ञान प्राप्त कर सकने में समर्थ हो सकता है।

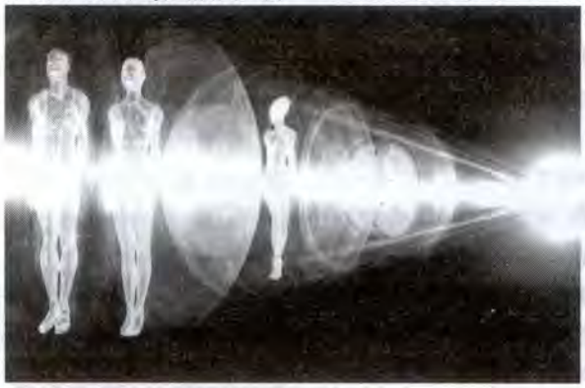

उपर्युक्त बातों से यह ज्ञान हो ही गया कि हमारे मन की शक्तियां महान् हैं। जन्म-जन्मान्तर के संस्कार इस पर अंकित हैं। इसी कारण स्वप्न में भी हम इस प्रकार की कई क्रियाएं करते हैं जो इस शरीर से संभव नहीं है, उदाहरणार्थ हम कभी आकाश में पक्षियों की भाँति उड़ान भरते हैं, कभी जलचरों की भाँति समुद्र के अंतराल की सैर करते हैं। साधना द्वारा मनुष्य अपने अंत:पट को बाह्य आवरणों से स्वच्छ करके अपने जन्म-जन्मातर की घटनाओं का ज्ञान प्राप्त करने में समर्थ हो सकता है।

यह तो हुई विगत घटनाओं के ज्ञान के बारे में। अब हम देखते हैं कि बहुधा मनुष्य को भविष्य में होने वाली बातों का भी सही ज्ञान हो जाता है। एक घटना हमारे अपने घर की है मेरे पिता जी की जिस दिन मृत्यु हुई उस दिन ब्राह्म मुहूर्त में उन्हें स्वप्न आया कि उनकी आयु शेष हो गई है। वे उस समय पूर्णतया स्वस्थ थे। प्रात:काल नित्यकर्म से निवृत्त होकर वे भोजन करने गये, वहां से आने के पश्चात् उन्होंने कहा कि मेरी छाती में दर्द है। डॉक्टर बुलाया गया। कार्डियोग्राम (हृदय परीक्षण यंत्र) से जब वह परीक्षण करने लगा तो वे बोले- 'डॉक्टर! तुम्हारा यह सब परिश्रम व्यर्थ है- मुझे आज प्रात:काल स्वप्न आया था, मेरी आयु शेष हो गई है। छाती में दर्द है- कोई उपाय हो तो करो। डॉक्टर ने सुई दी। पूछा- बाबू जी क्या हाल है- अच्छे हैं! बहुत अच्छे कहकर उन्होंने प्राण छोड़ दिए।

इस मन के भूत, भविष्य, वर्तमान के ज्ञान के बारे में यजुर्वेद के ३४वें अध्याय में बड़ा सुन्दर वर्णन है-

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम् ।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मन: शिवसंकल्पमस्तु।। ३४/४

(जब यह मन परमात्मा से योग युक्त हो जाता है तब इसको भूत, वर्तमान एवं भविष्य में होने वाले सब पदार्थों का ज्ञान हो जाता है।)

अब विचारणीय यह है कि मन को भविष्य की घटनाओं का ज्ञान कैसे हो जाता है। इसमें इन्द्रियों के संयोग की तो कहीं आवश्यकता पड़ती ही नहीं है। घटित होने से पहले फल का ज्ञान हो जाना, यह तो सीधा मानसिक ज्ञान ही है जो मानसिक शक्ति के द्वारा ही प्राप्त हो सकता है। इन्द्रियों द्वारा जो ज्ञान प्राप्त हो उसमें भूल हो सकती है, लेकिन मन से उत्पन्न होने वाला ज्ञान प्राय: सत्य ही होता है। अत: जिस मनुष्य की मानसिक शक्ति जितनी जाग्रत है उसी कोटि के उसे स्वप्न आते हैं। वास्तव में मनुष्य का यथोचित स्वरूप तो उसके आने वाले स्वप्नों से ही ज्ञान हो सकता है। जाग्रत अवस्था में तो मनुष्य का सारा ज्ञान, प्रयास, बुद्धि इसी काम में व्यय होती है कि वह संसार को अपना वैसा स्वरूप दिखावे जो वह वास्तव में नहीं है, लेकिन स्वप्न में तो किसी भी वस्तु पर उसका अधिकार नहीं रहता और उसे उसी कोटि के स्वप्न आते हैं जैसी वास्तव में उनकी मन: स्थिति होती है।

यजुर्वेद में तो इसकी महिमा का यहां तक बखान किया गया है-

यस्मिन्नृच: सामयजूंषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथना भाविवारा:।
यस्मिश्चितं सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मन: शिवसंकल्पमस्तु।। ३४/५

(जिसमें ऋक, साम, यजु और अथर्ववेद रथ के पहियों के आरों की भाँति स्थित है और जिसमें संसार का समस्त ज्ञान सूत में मणि की भाँति पिरोया हुआ है।)

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभिशुभिर्वाजिन इव।।३४/६

(उत्तम सारथी की भाँति यह अतिशय वेगवान मन मनुष्य को अपने नियंत्रण में रखकर जिस ओर चाहता है ले जाता है, इस मन की शक्ति अनन्त है।)

वेदों के अनुसार दिवा-स्वप्न, रात्रि-स्वप्न के अलावा एक स्वप्न और भी है जिसे मृत्युकाल का स्वप्न कहते हैं। वेदों के अनुसार तो मृत्यु भी एक स्वप्न है।

'यमस्य लोकदध्यायभूविथ प्रमदा मर्त्यान् प्र युनक्षि धीरः।
एकाकिना सरथं यासि विद्वान्त्स्वप्नं मिमानो असुरस्य योनौ।।

अथर्व. १९.५६.१

(मृत्यु का स्वप्न यमलोक से आता है।)

विचारों की दृष्टि से स्वप्न दो भागों में विभक्त है- भद्र एवं अभद्र।

इन दोनों प्रकार के स्वप्नों का अथर्ववेद में वर्णन है। षोडशकाण्ड के ५वें सूक्त में दसों मन्त्रों के अन्त में है-

तं त्वा स्वप्न तथा सं विद्म स नः स्वप्न दुष्वप्न्यात् पाहि।

अथर्व. १६.५.१

(हे स्वप्न! हम तेरे भद्र रूप को जानते हैं। वह तेरा भद्र रूप दुःस्वप्न से हमारी रक्षा करे।) दुःस्वप्न के लिए वेद ने लिखा- **'अन्तकोऽसि मृत्युरसि'** अथर्व. (सब चेतनाओं का अन्त करने वाला है, तू मृत्यु है।) अतः वेद कहता है यो **'भद्रं स्वप्नः स मम'** जो भद्र स्वप्न हैं वह मेरा है। सत्व, रज और तम तीन प्रकार की प्रकृतियों के अनुसार स्वप्न भी तीन भागों में विभक्त किये जा सकते हैं। (१) निद्रा, आलस्य, शिथिलता के कारण आने वाले स्वप्न तामसी है। (२) काम-संबंधी स्वप्न वासना-संबंधित होते हैं, अतः रजोगुणी हैं। (३) जिन स्वप्नों में दिव्य शक्ति, नये-नये अन्वेषण, सुन्दर-सुन्दर प्राकृतिक दृश्य दिखाई देते हैं- वे सत्त्वगुणी हैं। ऐसे स्वप्नों से समाधि लगनी भी संभव हो सकती है।

एक बात सभी स्वप्नों में समान है कि स्वप्न के समय बाह्य इन्द्रियों से मन का सम्बन्ध विच्छेद हो जाता है और मुख्यतया मनोव्यापार ही चलता रहता है। अतः स्वप्न का शरीर से नहीं बल्कि मन से सम्बन्ध है। शरीर के नष्ट हो जाने पर भी स्वप्नावस्था बनी रहती है। जीवात्मा मृत्यु के उपरान्त पुनर्जन्म तक स्वप्नावस्था में ही रहता है। जन्म के उपरान्त भी नवजात शिशु को देखिये तो वह स्वप्नावस्था में ही रहता है। उसका अकारण हंसना रोना आदि क्रियाएं इस अवस्था की ही सूचक हैं।

यूरोपीय आचार्यों ने स्वप्न को निद्रित अवस्था की चेतना बताया है। इस संबंध में बहुत प्रयोग करके उन्होंने स्वप्न की स्मृति, स्वप्न की प्रकृति, स्वप्नों का आविर्भाव और क्रम आदि पर शरीर-शास्त्रीय, आयुर्वेदिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टियों से विचार किया है। इस प्रसंग में उन्होंने बालक, वृद्धों, सयानों, पागलों, मूढ़ों, अंधों, बहरों आदि के साथ-साथ अन्य जीवों के स्वप्नों पर भी विस्तार से विचार किया है। (प्लातो) प्लेटो (अफलातून) ने कहा है कि स्वप्न तो जिगर के द्वारा निम्न कोटि की बुभृक्षित आत्मा के माध्यम से प्राप्त भावी दृश्य है जिनकी व्याख्या के लिए बहुत प्रबुद्ध ज्ञान आवश्यक है। प्रसिद्ध दार्शनिक दकार्ते ने और उसके अनुयायियों ने माना है कि मनुष्य का मस्तिष्क निरन्तर सोचता रहता है, इसलिए स्वप्न क्रिया भी निरन्तर होती रहती है। जाग्रत अवस्था में भी और सुषुप्ति अवस्था में भी। लाट ने इसका उत्तर देते हुए कहा है कि मनुष्यों को सदा स्वप्न की चेतना नहीं रहती, इसलिए यह कैसे विश्वास किया जा सकता है कि सोते हुए मनुष्य का आत्मा तो इस समय चिंतन कर रहा है और अगले ही क्षण जाग उठने वाले मनुष्य को यह ध्यान भी नहीं है कि वह क्या स्वप्न देख रहा है। लीबनित्स, कांट, सर विलियम हौमिलन आदि ने इस तर्क का खण्डन करते हुए बड़ा अकाट्य तर्क प्रस्तुत किया है कि स्वप्न कार्यरत मनुष्य निश्चय ही चेतन रहता है, किन्तु जब वह सामान्य स्थिति में आता है तो स्वप्न की अपनी समस्त क्रिया भूल जाता है। कुछ दार्शनिकों का मत है कि स्वप्न में ज्ञान-चेतना के निलंबन होने से ही स्वप्न दिखाई देते हैं। ड्यूउल्ड स्टीवर्ट का कथन है कि स्वप्न की अवस्था में ज्ञान-चेतना पूर्णतः लुप्त तो नहीं रहती, किन्तु ज्ञानेन्द्रियों पर उसका अधिकार नहीं रह जाता और इसीलिए स्वप्न में बहुत से असंगत दृश्य दिखाई देने लगते हैं। के.ए. श्रैनर का कथन है कि जीवन की गति के विकेन्द्रीकरण से ही स्वप्न दिखाई देते हैं। उधर हौब्स का कथन है कि मनुष्य के शरीर के भीतरी अंगों के विक्षोभ से स्वप्न दिखाई देते हैं। उनका सम्बन्ध मस्तिष्क से बना रहता है, इसलिए वे मस्तिष्क को गतिशील बनाए रखते हैं। शौपेनहावर का कथन है कि हमरी स्नायु- प्रणाली के सहानुभूतिपूर्ण सहयोग के कारण शरीर के आंतरिक क्षेत्र जब मस्तिष्क को उद्वेलित करते हैं उस समय स्वप्न दिखलाई पड़ते हैं। इस अवस्था में मस्तिष्क इन अनेक प्रभावों को स्थान, काल, कारण आदि के अनुसार स्वप्न की अद्ध वास्तविकताओं के रूप में प्रकट करता चलता है।

फ्रौयड और उनके सहयोगी लोग अब भी यही मानते हैं कि कामवृत्ति ही मुख्य रूप से निद्रित अवस्था में स्वप्न बनकर अनेक प्रकार के प्रतीकों द्वारा अपने को व्यक्त करती चलती है। किन्तु यह सिद्धान्त सर्वसम्मत नहीं हो पाया है।

स्वप्न भी वैसा ही वास्तविक अनुभव है जैसा जाग्रत अवस्था में होता है, क्योंकि स्वप्न में भी स्वप्न देखने वाला अनेक प्रकार की क्रियाएं और प्रतिक्रियाएं करता चलता है। स्वप्न की अवस्था में शरीर तो सोया रहता है, किन्तु मस्तिष्क का चिंतन कक्ष जाग्रत अवस्था की अपेक्षा स्वप्न में अधिक सक्रिय हो जाता है।

स्वप्न के विषय में जानने के लिए मनोवैज्ञानिक बहुत सचेष्ट रहे हैं किन्तु उनका सारा प्रयास स्वप्न देखने वालों के लिए हुए विवरणों पर ही आश्रित होता है, इसलिए उसके सम्बन्ध में किसी प्रकार की वास्तविक खोज करना असम्भव समझा जाता रहा है, किन्तु अब वैज्ञानिकों ने स्वप्न के विषय में ऐसी-ऐसी विचित्र बातें खोज निकाली हैं जो स्वप्न देखने वाले भी नहीं जानते। अब तो वे स्वप्न के समय की वास्तविक शारीरिक प्रक्रिया का भी अध्ययन करने में सक्षम हो गए हैं। इस अध्ययन के लिए एक इलोक्ट्रो एन्से फालोग्राफ नाम का यन्त्र बना लिया गया है जिसके द्वारा स्वप्न की अवस्था में शरीर और मस्तिष्क में होने वाली छोटी से छोटी विद्युत गतियां अंकित हो जाती है। इस अन्वेषण से सिद्ध हो गया है कि स्वप्न रहित निद्रा से स्वप्न सहित निद्रा पूर्णतः भिन्न होती है।

आध्यात्मिक जिज्ञासा-समाधान एवं पुस्तक समीक्षा

समाधानकर्ता
- आचार्य सोमदेव आर्य -
महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल
ऋषि उद्यान, अजमेर (राजस्थान:
चलभाष- ८६१९६३५३०७

श्रद्धेय आचार्य जी, सादर नमस्ते

कृपया निम्न बिन्दुओं पर शंका समाधान करने का कष्ट करें।

जिज्ञासा - १. काफी समय से यह पढ़ते और सुनते आए हैं तथा पौराणिक लोग कहते है कि वेदों को शंखासुर पाताल में लेकर चला गया इसलिए अब शेष बचे १८ पुराणों से ही काम चलाओ। ऐसी स्थिति में स्वामी दयानन्द जी ने जर्मनी से चारों वेदों को मंगवाकर पण्डितों को दिखाया और सब को बताया। इससे पता चलता है कि स्वामी जी के आने, से पहले चारों वेद भारत में उपलब्ध ही नहीं रह गए थे। इसीलिए तो विदेश से मंगवाने पड़े। अर्थात् आर्ष ग्रन्थों और इतिहास आदि में वेदों के नाम पर चर्चा ही थी और वे संहिताओं के रूप में उपलब्ध नहीं थे। यह हमारी हालत हो चुकी थी। क्या यह बात ठीक है?

इन्द्रसिंह, २९ अनाज मण्डी, भिवानी

समाधान- वेदों के विषय में स्वार्थी लोगों ने जन सामान्य में भ्रान्ति फैला रखी थी। जैसे वेदों को शूद्र और स्त्री पढ़-सुन नहीं सकते। वेदों में केवल कर्मकाण्ड है, वेदों में मानवीय इतिहास है आदि-आदि के साथ यह भी भ्रान्ति फैलाई कि वेदों को शंखासुर राक्षस पाताल में ले गया। इस प्रकार की भ्रान्तियां स्वार्थी लोगों के द्वारा फैलाई गई थीं। महर्षि दयानन्द ने इन सभी भ्रान्तियों को दूर किया। महर्षि ने वेद के प्रमाण से ही सिद्ध किया कि वेद के पढ़ने का अधिकार सभी को है, वेद का मुख्य निहितार्थ परमेश्वर है, वेद में किसी भी प्रकार का मानवीय इतिहास नहीं है और **वेद को हम भारतीयों के आलस्य प्रमाद रूपी शंखासुर ने पाताल में पहुंचा दिया। वेद के विषय में यह विशुद्ध स्पष्टीकरण महर्षि दयानन्द का ही था।**

अब आपकी बात पर आते हैं, महर्षि दयानन्द ने जर्मन से चारों वेदों को मंगवाया। उससे पहले हमारे यहां मूल वेद नहीं थे। यह बात अनेक वक्ता, विद्वान् बोलते व लिखते हैं। जब इस बात के वास्तविक तथ्य को देखते हैं तो कुछ और ज्ञान होता है। महर्षि ने जर्मन से वेद मंगवाया वह भी केवल ऋग्वेद, यह बात तो सत्य है किन्तु यह कहना की इससे पहले हमारे यहां वेद नहीं थे सर्वथा मिथ्या है। महर्षि के द्वारा जर्मन से मंगवाया हुआ वेद अपने यहां उपलब्ध संहिताओं से मिलान करने के लिए था। अन्यथा वेद तो अपने यहां विद्यमान थे ही। आज भी महर्षि दयानन्द के समय व उनसे पूर्व की पाण्डुलिपियां उपलब्ध होती हैं। महर्षि स्वयं अपने जन्म चरित्र में लिखते हैं-'और मुझको यजुर्वेद की संहिता का आरम्भ कराके उसमें प्रथम रुद्राध्याय पढ़ाया गया। इस प्रकार १४वें वर्ष की अवस्था के आरम्भ तक यजुर्वेद की संहिता सम्पूर्ण और कुछ अन्य वेदों का भी पाठ पूरा हो गया था।'-दयानन्द ग्रन्थ माला भाग २, पृष्ठ ७६८। महर्षि के इन वचनों से ज्ञात होता है कि वेद अपने यहां पहले से विद्यमान रहे हैं। दक्षिण के ब्राह्मणों में जो वेद कण्ठस्थ करने की परम्परा आज भी है और महर्षि के समय में व उनसे पूर्व भी थी। कण्ठ किये हुए वेद तो थे ही। जो वेद कण्ठस्थ करते थे निश्चित रूप से ये उनके पास वेद संहिताएं रही होंगी। इसलिए यह कहना कि वेद महर्षि ने जर्मन से मंगवाए उससे पहले यहां वेद नहीं थे सर्वथा अनुचित है। **शेष आगामी अंक में...**

आध्यात्मिक जिज्ञासा-समाधान

प्रश्न आपके
उत्तर मूर्धन्य वैदिक विद्वान के

समस्त पाठकगणों से अनुरोध है कि आपकी ईश्वर, जीवात्मा, प्रकृति, पुनर्जन्म, कर्मफल व्यवस्था, मनुष्य जीवन, धर्म- संस्कृति आदि विषयों से सम्बन्धित कोई जिज्ञासा, शंका, अथवा प्रश्न हो तो लिख भेजें। आपकी जिज्ञासा, शंका अथवा प्रश्नों का समाधान वेद शास्त्रों के मर्मज्ञ मूर्धन्य विद्वान आचार्य सोमदेव जी के द्वारा प्रस्तुत किया जावेगा। अपनी जिज्ञासाएं डाक से **आचार्य सोमदेव जी आर्य,** ऋषि उद्यान, पुष्कर रोड अजमेर (राज.) के पते पर भेजें तथा इसकी एक प्रति वैदिक संसार कार्यालय को भी भेंजे। एक माह में मात्र एक जिज्ञासा, शंका अथवा प्रश्न करें। - **सम्पादक**

वैदिक संसार के प्रकाशन के सम्बन्ध में घोषणा

फार्म-४ (नियम ८ देखिए)

१.	प्रकाशन का स्थान	१२/३ संविद नगर इन्दौर (म.प्र.)
२.	पत्र का नाम	वैदिक संसार
३.	प्रकाशन अवधि	मासिक
४.	मुद्रक का नाम	इन्दौर ग्राफिक्स,
	क्या भारतीय नागरिक है?	हाँ
	पता	२४ कुंअर मण्डली, खजूरी बाजार इन्दौर
५.	सम्पादक का नाम	गजेश शास्त्री
	क्या भारतीय नागरिक है?	हाँ
	पता	12/3 संविद नगर, इन्दौर
६.	प्रकाशक का नाम	सुखदेव शर्मा
	क्या भारतीय नागरिक है?	हाँ
	पता	12/3 संविद नगर, इन्दौर
7.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों -	सुखदेव शर्मा, 12/3 संविद नगर, इंदौर (म.प्र.)

सुखदेव शर्मा एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार दिये विवरण सत्य हैं।

दिनांक - मार्च, 2018 सुखदेव शर्मा- प्रकाशक

मन साधे : स्वास्थ्य सधे

- डॉ. जीवनलाल गान्धी-
मुख्य चिकित्सक- कोरल नेचुरोपैथी एवं
योग केन्द्र, नासिक (महा.)
चलभाष-९४२२६१८२२७

आज हृदयरोग, मधुमेह, कैंसर तथा विविध कष्टसाध्य असाध्य प्राण संघातक, मनोकायिक व्याधियों से पीड़ित रोगियों की संख्या तेज गति से बढ़ती हुई नजर आती है, उन्हें देखकर इस युग को व्याधियुग कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी।

रोग निवारण का दंभ भरते हुए नित्य नए औषधी प्रयोग तथा विविध बाह्योपचार तात्कालिक लाभ प्रदायक व तीव्र रोग शमनकर ही हैं, व्याधि नियंत्रण के स्थान पर नए-नए नामों से युक्त रोग चिकित्सा जगत् के सामने चुनौती बनकर खड़े हैं, विसंगतियों से भरा व्याधि नियंत्रण का यह चित्र स्वास्थ्य संशोधन के लिए चिंतनीय है। अंतरमुखी होकर सोचने पर निम्न तथ्य सामने आ रहे हैं-

• सभी चिकित्सा पद्धतियों के चिकित्सक स्थूल शरीर में दिखाई देने वाले रोग लक्षणों के नियंत्रण में लगे हुए हैं, रोगों के कार्य-कारण मीमांसा का विचार नहीं किया जा रहा है।

• रोगियों में स्वास्थ्य लाभ हेतु त्वरित लाभ प्रदायी उपचार औषधी एवं चिकित्सकों पर निर्भरता की प्रवृत्ति बढ़ रही है।

• हमारा शरीर-अंग, उपांग विभिन्न अवयव एवं उनसे बनी प्रणालियां मात्र नहीं है, इस स्थूल शरीर के साथ सूक्ष्म मन व आत्मा भी अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं।

• रोग व आरोग्य का निर्माणकर्ता व नियंत्रक मन ही है। सूक्ष्म मन व स्थूल शरीर के दृढ़ संबंध का विचार इस हेतु अत्यावश्यक है।

• चिकित्सक एवं स्वास्थ्य साधकों के विचारों में एक मानसिकता में परिवर्तन की जरूरत है। सम्पूर्ण आरोग्य ही उपचार का सिद्धान्त होना चाहिए। अतएव शरीर एवं मन दोनों के उपायों का विचारकर योजना करने से ही असाध्य समझे जाने वाले रोग नियंत्रण में आ सकते हैं।

जीवन-शैली रोगों की तह में

• आज पनप रहे असाध्य प्राणहर व्याधियों का कारण अप्राकृतिक रोगमूलक जीवनशैली ही है, परन्तु चिकित्सा करते समय जीवन-शैली के समस्त पहलुओं का विचार नहीं हो रहा है।

• जीवन शैली, आहार-विहार यानी दिनचर्या एवं विचारों से बनती है, आज ये सभी घटक विकृत हो रहे हैं।

• जीवन-शैली के सभी कार्य विचार, भावनाएं एवं संवेदनाओं से चलते हैं, वे मन द्वारा ही सम्पादित होते हैं, बनते बिगड़ते हैं, शरीर स्वास्थ्य पर आहार-विहार, बाह्य वातावरण से अधिक प्रभाव मन का होता है।

• मन में उठने वाले अच्छे बुरे विचार का प्रभाव शरीर की प्रत्येक कोशिका तथा शरीरेन्द्रियों पर होता है। विचार जीवन में क्रिया-प्रतिक्रियाएं उत्पन्न करते हैं, उसके अनुसार मनुष्य की आदतें, स्वभाव जीवन-शैली बनती है।

मन-मस्तिष्क का सम्बन्ध

• मस्तिष्क मन का भौतिक यंत्र है, मस्तिष्क के माध्यम से शरीर में विभिन्न क्रियाएं सम्पादित होती रहती है, स्वास्थ्य का आधार मन ही है, शरीर में समस्त यांत्रिक, जैव रासायनिक क्रिया-प्रक्रियाओं का सम्पादन मन के द्वारा निर्धारित व्यवस्थानुसार चलता रहता है।

• मस्तिष्क , स्थूल शरीर का अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं अभिन्न अंग है, मस्तिष्क स्थूल शरीर व सूक्ष्म मन दोनों के साथ जुड़ा रहकर कार्य करता है।

• शरीर में होने वाली सभी क्रियाएं मन को प्रभावित करती है, जैसे मनोदशा में परिवर्तन होते रहते हैं, उसी अनुरूप मन में उठने वाले विचार, भाव-संवेदनाओं का प्रभाव शरीर पर अवश्य होता है।

• पंचज्ञानेन्द्रियां, पंचकर्मेन्द्रियां एवं शरीर के अवयवों में कार्यरत रहने वाला मन ही है।

• जीवन में संतुलन रखने का कार्य मन का ही है। इन्द्रियों के अतियोग, नियोग या मिथ्यायोग शरीर के माध्यम से मन को असंतुलित कर देते हैं। असंतुलन से ही शारीरिक या मानसिक रोग उत्पन्न होते हैं।

• मन उभयात्मक है। वह शरीर के साथ रहकर तथा स्वतंत्र कार्य भी करता है। मन बुद्धि को शुद्ध रखता है बुद्धि के माध्यम से मनुष्य कार्य करता है।

• विकार रहित देह व विक्षेप रहित मन स्वास्थ्य का आधार है।

मन-मस्तिष्क कार्यप्रणाली

• मस्तिष्क की कोशिकाओं तथा शरीर के प्रत्येक कोष में विद्युत चुम्बकीय प्रवाह उत्पन्न होते रहते हैं।

• इस विद्युत चुम्बकीय शक्ति का प्रवाह ज्ञानतंतुओं के माध्यम से मस्तिष्क द्वारा सम्पूर्ण शरीर में होता रहता है। ज्ञानतंतु विद्युत संवाहक होते हैं। इनका जाल समस्त शरीर में फैला हुआ होता है। सम्पूर्ण शरीर में अनेक जैव रसायन तत्व तैयार होते हैं, जिन्हें न्यूरोपेप्टाईड, हार्मोन्स इत्यादि नामों से जाना जाता है जो एक कोशिका से दूसरी कोशिका तक व मस्तिष्क में जैविक स्वास्थ्य कार्य सम्पादनार्थ संदेश लाने ले जाने का कार्य करते हैं।

• इस हेतु सम्पूर्ण शरीर में न्यूरो- ट्रान्समीटर्स व रिसेप्टर्स का अद्‌भुत नाड़ीजाल बिछा हुआ है, इसी माध्यम से एक सेकण्ड हजारवें समय में सूचनाएँ, संवेदनाएं शरीर के एक हिस्से से दूसरे हिस्से तक व वहां से मस्तिष्क को पहुंचाती है।

• मस्तिष्क में करीब एक खरब न्यूरॉन्स होते हैं जो इस कार्य में सहभाग लेते हैं। शरीर का दो प्रतिशत हिस्सा मस्तिष्क है किन्तु उसके कार्य अद्‌भुत हैं।

• इसी माध्यम से स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर, मन के साथ जुड़कर शरीर के समस्त कार्यों का निर्वहन करता है। कायिक, वाचिक व मानसिक क्रियाकलाप इसी माध्यम से चलते रहते हैं।

मन का स्वभाव

• मनन करना, चिंतन करना, संकल्प तथा विकल्प करना, यह मन का कार्य है। मन में भावनाओं का निर्माण होता है। योग्य, अयोग्य का निर्धारण बुद्धि करती है जो मन की सहायक बनती है, उसी अनुसार स्वास्थ्य प्रभाव घटित होते हैं।

• मन की गति अति तीव्र व चंचल होती है, इसलिए वह एक स्थान या विचार पर अधिक समय तक स्थिर होकर नहीं टिक पाता है। मन की गति वर्तमान,भूत, भविष्य तीनों कालों में होती रहती है।

• मन इन्द्रियों के माध्यम से विषयोन्मुख होकर तरह-तरह की आदि-व्याधियों का निमित्त बनता है। जैसे भाव मन में होते हैं वैसे ही क्रियाएं शरीर में उत्पन्न होती हैं। मन विचारों के मलिन होने से शारीरिक अपराध होते हैं। इस तरह उत्पन्न रोग बाह्य कीटाणुओं के आक्रमण से अधिक घातक साबित होते हैं।

• मन सर्वस्व है, भूख प्यास, आहार, सेवन, पाचन, पोष्य घटकों का आत्मसात होना, मल-विकार निर्हरण, निद्रा, मैथुन इत्यादि समस्त शारीरिक क्रियाएं मन के बिना नहीं होती।

• प्रसन्नता, सुख, दु:ख, भय, क्रोध, प्रेम, विवेक आदि मनोकार्य संवाहक नियंत्रक मन ही है।

• मन इन्द्रियों का स्वामी है, सुख-दुख की अनुभूति मन में होती है। मन तन का भी स्वामी है। समस्त इन्द्रियां मन के अनुसार आचरण करती है, वह इन्द्रियों का प्रेरक व संचालक भी कहलाता है।

मन के कार्य

• शरीर मन का गुलाम है, मन को आदेशानुसार शरीर के अवयव कार्य करते हैं।

• मन कम्प्यूटर की तरह है, विचार, भावनाएं, संवेदनाएं, शरीर प्रक्रियाएं निर्माण होने पर कैसी प्रतिक्रिया होनी चाहिए वह मन में अपने आप होती हैं उन्हें कोई तय नहीं करता।

• मन का कार्य विवेकशीलता है। योग्य, अयोग्य का निर्धारण मन, बुद्धि द्वारा करता है। शरीर की इन्द्रियां सूचनाएं एकत्रित करती है मस्तिष्क को भेजती है, उनके अर्थ निर्धारण का कार्य मन करता है।

• मन में उत्पन्न संवेदनाओं, भावनाओं, स्वभाव व संस्कार बनते हैं उन्हें सही या गलत किया जा सकता है, बदला जा सकता है, संवेदनाएं आती है, तुरन्त नष्ट हो जाती है, जो संवेदनाएं दीर्घकाल तक रहती हैं वे स्वभाव का स्थायी रूप ले लेती है। मन द्वारा स्वास्थ्य संस्कार इसी तरह अपनाए जाते हैं।

• **संवेदनाओं का अर्थ है-** संदेश व आज्ञा, कुछ दिखाई देती है, कुछ नहीं दिखतीं।

• शरीरिक कार्य श्वसन, रक्त परिभ्रमण, आहार, पाचन, पोषण यह न दिखाई देने वाले कार्य हैं जो शरीर में निरन्तर चलते रहते हैं।

• शीत, उष्मा की अनुभूति, निद्रा, कामेच्छा आदि दिखाई देने वाली संवेदनाएं हैं, हमारा स्वास्थ्य इन्हीं से बनता-बिगड़ता है।

• प्रकृति द्वारा इनके संपादनार्थ आदेश निकलते रहते हैं।

• मन भावों द्वारा यह सही- गलत हो सकती है, मन के कारण स्वास्थ्य बनता बिगड़ता है।

• मन पानी की तरह नीचे की ओर बहता है, इसीलिए उसे अधोगामी कहते हैं तब यह विषयोन्मुख होकर आधि-व्याधि विविध यातनाओं का निमित्त बनता है।

मनोविजय स्वास्थ्य आधारशिला

• मन को वश में करना वायु को नियंत्रित करने के भाँति कठिन है, लेकिन असम्भव नहीं है। उसका नियंत्रण अभ्यास एवं संस्कारों से सहज साध्य है।

• मन के संभलने से सब कुछ सुधर जाता है, उससे मात्र स्वास्थ्योन्नति ही नहीं होती, आध्यात्मिक उन्नति होकर मनुष्य नर से नारायण बन जाता है, अत: कहा जाता है कि मन जीता जग जीता।

मनोसाधना द्वारा स्वास्थ्य प्राप्ति

स्वास्थ्य प्राप्ति हेतु जीवन में संयम व्रत, नियमों का धारण करना जरूरी है। ऋषि-मुनियों ने हजारों वर्ष पूर्व यही संदेश-ज्ञान हमें दिया है, वे जानते थे कि मनुष्य गल्तियों का पुतला है। गलतियों के परिमार्जन हेतु व्रत-नियम-संयम को जीवन में अपनाने से व्याधियां दूर होती हैं एवं पुन: व्याधियां उत्पन्न नहीं होती।

• **क्या खाना-** कैसे खाना, क्या सोचना, क्या करना, क्या नहीं करना- इसका अभ्यास संयम मार्ग से ही होता है। यह मन के कार्य हैं।

• मनमानी करने से आदतें, स्वभाव, विचार व उनमें स्वास्थ्य का नाश होता है। मन को नियंत्रित करके जीवन में संतुलन स्थापित करने हेतु संयम का कोई विकल्प नहीं है।

• नियम, संयम पालन के अभ्यास में मन, शरीर शुरू में विद्रोह करते हैं, मन को विचलित करने वाले कुछ कष्टकारी लक्षण उत्पन्न करते हैं। इन संवेदनाओं को सहन करने से थोड़े से समय में वे स्वयं शांत हो जाते हैं, इसके पश्चात् स्वास्थ्यकारी आदतों का अभ्यास स्वत: ही हो जाता है।

मनोग्रन्थियों से बचना

अहंकार, वृथाभिमान, क्रोध, लोभ, द्वेष, ईर्ष्या, उद्वेग, हीन-भावनाएं, निराशा, हताशा यह मनोदोष हैं। निषेधात्मक प्रवृत्तियां होने से स्वास्थ जीवन का नाश हो जाता है। सकारात्मक चिंतन, विवेक संयमयुक्त दिनचर्या, संतोष, प्रेमभाव, विपरीत परिस्थितियों में प्रेक्षक बनकर शान्ति धारण करना, अनासक्ति इत्यादि मनोभावों का प्रयत्नपूर्वक अभ्यास करने से, शरीर की विकृतियां दूर होती हैं, मन निर्मल होकर सम्पूर्ण स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है।

योगाभ्यास का अवलंबन- योगाभ्यास को केवल आसन-प्राणायाम तक सीमित नहीं रखना चाहिए जो आज फैशन की तरह तेजी से प्रचलित हो रहा है। **योगाभ्यास के अष्टपाद-यम, नियम, आसन, प्राणायम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान एवं समाधि-सबका शुरू से क्रमश: अभ्यास मनपूर्वक करना चाहिए। मात्र क्रियाओं के रूप में नहीं। योगाभ्यास का जीवन के हर क्रियाकलाप, उठना, बैठना, सोना, खाना, पारिवारिक व सामाजिक व्यवहार में दृष्टिगोचर होना चाहिए।**

स्वाध्याय, सत्संग, पूजा-पाठ-जीवन में यत्नपूर्वक नित्य करते रहने से मन: शान्ति प्राप्त होती है। मन का व्यवहार संतुलित होता है। ज्ञान का प्रकाश ज्ञाप्त होकर जीवन त्रुटि रहित होता है। प्रभु से प्राप्त अमूल्य

देन मानव देह है। इस अभ्यास से उसका सम्मान होकर जीवन सुखी व परिपूर्ण हो जाता है। इस हेतु मन का आईना स्वच्छ रखना चाहिए। यह वह आईना है जो ज्ञानरूपी प्रकाश से उज्जवलित होता है, जिसमें झांककर देखने हेतु साधारण प्रकाश की जरूरत नहीं होती।

विश्राम की कला- 'शीर्यते इति शरीरम् ' जिसमें क्षरण होता है उसे शरीर कहते हैं। शरीर में क्षरण व नवनिर्माण निरन्तर चलते रहते हैं। रक्त के लालकण नित्य नष्ट होते हैं। किन्तु तीन माह में उनका नवनिर्माण हो जाता है। श्वेत रक्त कणिकाएं एवं पेशियां सात से दस दिनों में नई हो जाती है। पाचन प्रणाली की अन्तर त्वचा प्रति पांचवें दिन नई हो जाती है। इस तरह शरीर के समस्त अवयव समय के अनुसार परिवर्तित होते रहते हैं। यह नित्य नूतनीकरण, स्वास्थ्य, दृढ़ता एवं रोग प्रतिकार शक्ति का आधार है। यह क्रिया, विश्राम की अवस्था में सम्पादित होती है। श्रम एवं विश्राम में संतुलन इस हेतु अत्यावश्यक है। इसके लिए नित्य पर्याप्त निद्रा आवश्यक है।

योग निद्रा का अभ्यास- थके हारे शरीर व मन को विश्राम प्रदान करने का यह उत्तम मार्ग है। इसमें क्रमशः सूचनाएं देकर सम्पूर्ण शरीर के अंग-उपांगों को ध्यानपूर्वक शिथिल करना होता है। तत्पश्चात् उस शांति व शिथिलता की अनुभूति करनी होती है। फलस्वरूप शरीर व मन को शान्ति प्राप्त होती है। इस विश्राम की अवस्था के कारण शक्ति संचय होता है। ऊर्जा का प्रवाह अबाधित होकर मनुष्य ऊर्जावान बनता है। मन की तटस्थता प्राप्त होती है। जीवन के समस्त क्रियाकलाप संतुलित होने लग जाते हैं। इसी अभ्यास के साथ आत्मसूचनाओं द्वारा सकारात्मक चिंतन करने से शरीर, श्वास व भावप्रेक्षा को जोड़ने से सम्पूर्ण स्वास्थ्य सहज प्राप्त होता है। स्थित प्रज्ञता आती है।

जैसा खाएं अन्न, वैसा बने मन- आहार का शारीरिक ही नहीं मानसिक क्रियाओं पर भी गहरा प्रभाव होता है। वेद, उपनिषद्, गीता में कहा है- "सात्विक व शुद्ध आहार से मन शुद्ध होता है। मन शुद्ध होने से स्मृति उन्नत एवं बुद्धि निर्मल व निश्चयात्मक होती है। ऐसा मनुष्य प्रकृतिस्थ (आत्मलीन) होता है। वह मन, बुद्धि से गल्तियां नहीं करता।

स्वास्थ्यकर आहार का सेवन- अधिक खाने की प्रवृत्ति मन चाहे तब कुछ न कुछ खाते रहने की आदतें, प्राकृतिक, परिष्कृत, निकृष्ट व दोषकर खाद्य पदार्थों से बना आहार खाने की वृत्ति, रोगोत्पत्ति का प्रमुख आद्य कारण है। ऐसे आहार के पाचन में शक्ति का अपव्यय होता है। पोष्य घटकों में कमी आ जाती है जो स्वास्थ्य घातक है। ऐसे आहार से स्वादांकुर भ्रष्ट हो जाते हैं। पाचन प्रणाली बिगड़ जाती है। भूख की संवेदनाएं विकृत होती है। नशे की लत की तरह मनुष्य अप्राकृतिक आहार का आदी होकर गुलाम हो जाता है।

सम्पूर्ण सृष्टि में मनुष्य को छोड़कर अन्य जीव बिना भूख के मनमानी से आहार का सेवन नहीं करते। इसी कारण वे अधिकांश समय बीमार नहीं पाए जाते।

मनुष्य मन के वशीभूत आहार सेवन करता है। गलत खाने से उसकी भूख की संवेदना विकृत हो जाती है। झूठी भूख को संतुष्ट करने हेतु आहार सेवन विकारजनक होता है। **ऐसी रोगमूलक वृत्ति पर नियंत्रणार्थ आहार संयम आवश्यक है जो बिना मन के संभव नहीं हो पाता।**

बिना भूख के न खाना, अल्पाहार व मिताहार सेवन का अभ्यास, उत्तेजना रहित प्राकृतिक आहार सेवन की मनोवृत्ति का होना आवश्यक है। प्राकृतिक सात्विक आहार में फल, सब्जियों का सेवन सर्वोपरी है। इस हेतु कुछ फलों का सेवन करना चाहिए। आवश्यक होने पर उपवास, रसाहार का अवलम्बन लेना चाहिए। इससे शरीर दोषरहित होता है। मन के निर्विकार होने से विचारों में शुचिता आती है।

आहार सेवन, तृप्ति एवं संतुष्टि का केन्द्र मस्तिष्क में छोटा मेंदू हायपोथैलेमस में होता है। लगातार गलत आहार सेवन करते रहने से मन भी वैसे अप्राकृतिक आहार के बिना संतुष्ट नहीं होता।

मन को बिसारे स्वास्थ्य बिसरे- आधुनिक भोगात्मक व रोगोत्पादक विषमताओं से भरी जीवन प्रणाली के युग में औषधीय उपचारों की अपेक्षा मन स्वास्थ्य प्रदायी प्रयोगों की अधिक जरूरत है। इस हेतु स्वास्थ्य साधकों को आत्मवान बनना होगा जो चिंतन, विचार, संयम को अपनाएं बिना सम्भव नहीं है। **'मन द्वारा स्वास्थ्य' चिकित्सा ध्येय होने से आदतें, स्वभाव व जीवनशैली में परिवर्तन आते हैं। मनुष्य रोगों के चक्रव्यूह से बाहर निकलता है। स्वास्थ्य का धनी बन जाता है।** मनीषियों ने कहा है- **'मन एवं मनुष्यानाम् बंधन मोक्ष कारी'** जिस चिकित्सा पद्धति में मन को बिसारा जाता है, वह सच्चा स्वास्थ्य प्रदान नहीं कर पाती।

आत्मवलोकन करें- जीवन में अनजाने में गलतियां होती रहती हैं जो आधि-व्याधि या किसी कष्ट रूप में हमें सचेत करती हैं। बीमार होना हमें स्वास्थ्य संचेतना देता है। स्वास्थ्यकारी कार्यों का फल ही स्वास्थ्य होता है। अतएव नित्य आत्मोन्मुखी होकर चिंतन करना चाहिए। आहार-विहार विचारों का जीवन में स्वास्थ्यदायी परिवर्तन करते रहना चाहिए। जिससे शरीर व मन स्वधर्म सम्पूर्ण स्वास्थ्य में अपने आप स्थित हो जाते हैं। इस हेतु दवा-दारू बाह्योपचार की जरूरत नहीं होती है। आत्मावलोकन कर सही का अभ्यास करते रहने से जीवन आरोग्यमय होता है।

मौनं सर्वार्थ साधनम् - मन अनावश्यक व अतिविचारों में उलझा रहने से शरीर में रासायनिक परिवर्तन होकर विकार मूलक अन्तरस्त्रावों के कारण जीर्ण तनाव की स्थिति उत्पन्न होती है। विचारों के झंझावत से मस्तिष्क ऊर्जा अनावश्यक खर्च होती है। मौन एवं निर्विचार रहने का सतत् अभ्यास ऊर्जा का संचय एवं उपाय है।

मस्तिष्क शरीर का छोटा हिस्सा है। किन्तु शरीर व मन के समस्त कार्य उसके द्वारा चलते हैं। इस हेतु उसे सर्वाधिक ऊर्जा की जरूरत होती है। रक्त के माध्यम से आक्सीजन द्वारा उसे यह शक्ति प्राप्त होती है। आधुनिक सभ्यता एवं वैज्ञानिक प्रगति के इस युग में मानसिक अस्थिरता, अनावश्यक विचार इतने बढ़ गए हैं कि मस्तिष्क सदैव उलझा रहता है। ऐसी स्थिति में प्रकृति मस्तिष्क को अतिरिक्त रक्त की पूर्ति शरीर के अन्य अवयव, स्नायु, पाचन प्रणाली आदि से भेजती है।

अन्य शरीर संधारक अवयवों को रक्त कम मिलने से उनके कार्य असंतुलित होकर शरीर में विकार संचित होने लग जाते हैं। नाड़ी शक्ति कमजोर होती है। जो अनेक असाध्य रोगों का कारण बन जाती है। हृदय

रोग, कैंसर इत्यादि के बढ़ने का यही कारण है। मन, शरीर, जीवन शक्ति कमजोर हो जाती है। मौन का अभ्यास भाव-विचारों की निश्छलता को प्रदान करता है। अत: निर्विचार एवं मौन साधना यत्नपूर्वक करनी चाहिए।

मन साधना कैसे करें- किसी योग्य अनुभवी गुरु के मार्गदर्शन में श्रद्धा, विश्वास, धैर्य के साथ नित्य अभ्यास करने से यह सहज साध्य - होता है। जीवन के कोलाहल, प्रदूषित वातावरण से दूर किसी शांत स्थान में जाकर साधना करने हेतु एक से दो सप्ताह का समय निकालना चाहिए। मन व शरीर ऊर्जावान होकर जीवन सफल हो जाता है।

सर्वमन्यत्परित्यज्य शरीमनुपालयेन।
सभ्दावेहिभावाना सर्वाभाव: शरीरिणाम।।

इस कथानुसार सब कुछ छोड़कर स्वास्थ्य को बनाए रखना मनुष्य का आद्य कर्त्तव्य है। निरोगी काया एवं स्वस्थ मन संसार के समस्त सुखों का आधार है। जीवन के क्षण-क्षण में आनन्द, संतोष उत्साह, आशा एवं प्रसन्नता का निर्झर बहते रहना मनोसाधना से ही सम्भव होता है।

प्रेमचंद का शनिश्चरी प्रसंग

उत्तरप्रदेश के जिला प्रतापगढ़ स्थित कालांकाकर रियासत के तत्कालीन राजकुमार श्री सुरेशसिंह जी की अपने बड़े भाई एवं कालांकाकर के राजा श्रीयुत अवधेशसिंह के साथ हिन्दी के प्रख्यात कथाकार एवं उपन्यास लेखक मुंशी प्रेमचन्द के साथ सन् १९२८ में जो मुलाकात हुई थी, उसका एक रोचक एवं सचित्र चित्रण हिन्दी की प्रख्यात मासिका पत्रिका कादम्बिनी के जुलाई १९७० के अंक में प्रकाशित हुआ था।

ज्ञातव्य है कि कालांकाकर के समीपस्थ ही जिला सुल्तानपुर की अमेठी रियासत भी है जिसके राजा रणञ्जयसिंह....एवं उनके पूर्वज भी आर्य समाज से बहुत प्रभावित थे। राजा रणञ्जयसिंह तो वर्षों तक उ.प्र. आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान भी रहे हैं।

कालांकाकर के राजा अवधेशसिंह द्वारा प्रदत्त जमीन पर ही आर्य समाज प्रतापगढ़ आज भी स्थापित है। इस प्रकार ये दोनों राज परिवार आर्य समाज के सिद्धान्तों एवं मान्यताओं पर प्रगाढ़ निष्ठा रखते थे।

हिन्दी के महान् लेखक मुंशी प्रेमचन्द के लेखन पर भी आर्य समाज की तार्किकता, स्वराज भावना तथा कुरीतियों एवं पाखण्डों के निवारण करने वाली विचारधारा का पर्याप्त प्रभाव पड़ा। प्रगतिशील विचारधारा के कारण ही उन्होंने अपना विवाह आर्य समाज बुलानाला (वाराणसी) में एक विधवा के साथ बड़े ही सादगी से किया था।

अस्तु, आर्य समाज के महोपदेशक एवं प्रसिद्ध संस्कृत लेखक डॉ. प्रशस्यमित्र जी शास्त्री ने हिन्दी की सुप्रसिद्ध पत्रिका ''कादम्बिनी'' में लगभग पचास वर्ष पूर्व प्रकाशित यह विवरण हमें उपलब्ध कराया है। हम डॉ. शास्त्री जी का आभार व्यक्त करते हुए यह विवरण अविकल प्रकाशित कर रहे हैं। इसे पढ़कर आप जान सकेंगे कि कैसे आज भी शनिश्चर आदि ग्रहों की पूजा एवं उनका भय दिखाकर पण्डे, पुजारी सामान्य जन को लूटते रहते हैं तथा अन्य विश्वासी लोग इनके फेर में पड़कर दु:ख प्राप्त करते हैं। - सम्पादक

प्रेमचंद जी के प्रथम दर्शन मैंने सन् १९२८ या २९ में किए। तब वे लखनऊ में गणेशगंज मोहल्ले में रहते थे। मेरे पूज्य भाई स्व. राजा अवधेशसिंह कालाकांकर को साहित्य में अधिक रुचि तो नहीं थी, लेकिन उन्हें श्री मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत भारती' और प्रेमचन्द जी की कहानियां बहुत पसंद थी. **'पंच-परमेश्वर' कहानी तो वे हम लोगों को न जाने कितनी बार सुना चुके थे।**

लखनऊ में वे अक्सर प्रेमचंद जी से मिलने उनके घर जाते थे। एक बार मैं भी उनके साथ गया और उस महान् साहित्यकार के दर्शन किए। उस समय वहां अन्य सज्जन भी बैठे थे। हम लोग भी उस गोष्ठी में सम्मिलित हो गए और इधर-उधर की बातें होने लगी। उसी समय एक पंडित जी हाथ में तेल भरा कटोरी लिए आए जिसमें लोहे के शनिश्चर भगवान की मूर्ति आकंठ डूबी थी। वे प्रत्येक दरवाजे पर जाकर शनिश्चर भगवान के आगमन की सूचना देकर लोगों से पैसे वसूल कर रहे थे। प्राय: प्रत्येक घर से स्त्रियां उन्हें कुछ न कुछ दे रही थीं।

मेरे भाई साहब कट्टर आर्य समाजी थे, अत: उन्होंने प्रेमचंद जी कहा- **'आपने शनिश्चर भगवान को कुछ अर्पित नहीं किया, कहीं वे खफा न हो जाएं।'**

प्रेमचंद जी बोले- मेरा शनिश्चर भगवान क्या करेंगे? आपको इसी संबंध में एक किस्सा सुनाता हूं। एक सज्जन के ग्रह खराब थे। साढ़े साती शनिश्चर का प्रकोप था। लोगों ने उन्हें सलाह दी कि वे किसी पण्डित से शांति का उपाय पता करें।

वे एक पण्डित जी के पास गए और अपनी सारी दु:ख गाथा सुनाई। पंडित जी ने यह सोचकर कि अच्छी आसामी है- कहा-**'इसमें तो काली वस्तु का दान लिखा है। गज- दान से आपका संकट टल जाएगा।'**

उन्होंने कहा-**'अरे महाराज! गज दान तो मेरी सामर्थ्य के बाहर की बात है। कुछ ऐसा बताइए जो मैं कर सकूं।'**

पंडित जी ने कहा- तो कौस्तुभ मणि, नीलममणि ऐसी ही किसी मणि का दान करो।

वे इसके लिए भी तैयार न हुए तो पंडित जी ने विचार करके कहा- तो एक भैंस का दान कर दो। संकट टल जाएगा, लेकिन भैंस देने के लिए भी यजमान राजी नहीं हुआ।

पंडित जी ने फिर कुछ सोचकर कहा- 'तब ऐसा करो कि एक बोरा उड़द का दान कर दो, संकट दूर हो जाएगा।' लेकिन उसके लिए एक बोरा उड़द देना भी सम्भव नहीं है।

पंडित जी ने कहा- तब एक काली कमली का प्रबंध करो। लेकिन काली कमली भी आजकल पंद्रह-बीस रुपए से कम में नहीं आती। अतः उन्होंने इससे भी इनकार कर दिया। पंडित जी का धैर्य टूट रहा था, लेकिन वे अपने यजमान को छोड़ना नहीं चाहते थे, इसलिए उन्होंने कहा- तो लोहे की एक छुरी का ही दान कर दो।' लेकिन लोहे की छुरी मुफ्त में तो मिलती नहीं, इसमें भी डेढ़- दो रुपए लगते हैं। यजमान ने उसके लिए भी अपनी असमर्थता प्रकट की।

पंडित जी झुंझलाकर बोले-'तो थोड़ा कोयला ही लाओ और उसी का दान करो' यजमान उसके लिए भी तैयार नहीं हुआ। कोयले में भी कुछ पैसे लगेंगे ही!

अब पंडित जी का धैर्य छूट गया। उन्होंने खीझकर कहा- तो फिर क्यों बेकार में इतना परेशान हो रहे हो? जाकर आराम से अपने घर बैठो। जब तुम थोड़ा सा कोयला भी नहीं दे सकते तो तुम्हारा एक-दो क्या सैकड़ों शनिश्चर भी कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

इतना कहकर प्रेमचंद जी बोले- ' राजा साहब मेरी भी हालत उसी आदमी की तरह है मेरा भला शनिश्चर क्या बिगाड़ेंगे? आप आर्य समाजी हैं, आपको भी कुछ डर नहीं है। उनसे तो धनवानों को डरना चाहिए।

उनके द्वारा बताई इस रोचक कथा के कारण उनका प्रथम दर्शन आज भी मेरी स्मृति में ताजा बना हुआ है।

सुरेश सिंह,
-कादाम्बिनी जुलाई- १९७०

पुस्तक-समीक्षाएं

१. पुस्तक का नाम	वेद पथ
पृष्ठ	२२२
मूल्य	१९५
लेखक	आचार्य शिवकुमार आर्य
प्रकाशक	ब्लूज बुक्स प्राइवेट लि. ए.८/७६ पहली मंजिल सेक्टर-१६, रोहिणी दिल्ली ११००८९

वेद परमेश्वर द्वारा सभी मनुष्यों के कल्याणार्थ उपदेश है वेद ज्ञान से ही मनुष्य का कल्याण हो सकता है। परमात्मा ने संसार के बनाने के साथ-साथ वेद को उत्पन्न किया वेद की परम्परा अनुसार अब तक संसार चलता रहा तब तक संसार में परस्पर प्रेम, एक-दूसरे का सहयोग समाज, राष्ट्र व्यवस्था अच्छी से अच्छी रही जबसे संसार में वेद की परम्परा छूटी तब से सब विपरीत होता गया। वेद की शिक्षा, वेद की निंदा करने अथवा वेद के नाम से मनमाने आचरण करने में लोग प्रवृत्त होने लगे, जिससे संसार में अविद्या, पाखंड, अंधविश्वास आदि बढ़ते चले गए। महर्षि दयानन्द ने मानव की अवनति अविद्या, पाखंड अंधविश्वास आदि का मूल कारण पकड़ा, मनुष्यों का वेद ज्ञान से दूर हो जाना। महर्षि ने वेद ज्ञान को सर्वोपरि मानकर उसकी पुनः परम्परा को चलाया। महर्षि के वेद ज्ञान के प्रति विशुद्ध दृष्टिकोण के कारण ही वेद को पुनः वही प्राचीन गौरव प्राप्त हुआ। **आर्य समाज महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित समाज है। यह समाज और उसके अनुयायी वेद को ही परम प्रमाण मानते हैं। महर्षि ने वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना परम धर्म कहा।** ऐसी ही भावना से प्रेरित हो आर्य समाज के विद्वान आचार्य शिवकुमार आर्य जी ने **'वेद पथ'** वेद ज्ञान के मोती नामक पुस्तक लिखी है। पुस्तक में यजुर्वेद, ऋग्वेद के ५१ मन्त्रों की सरल, सुबोध व्याख्या की गई है। व्याख्या ईश्वर स्तुति, प्रार्थना, उपासना, धर्म, व्यवहार, सिद्धान्त, स्वास्थ्य आदि विषय पर है। पुस्तक को पढ़ने पर लेखक का श्रम विज्ञान का बोध पाठक करेंगे। पाठक गम्भीर विषय को सरल व्याख्या में पढ़ना चाहता है। ऐसा ही पाठक को इस पुस्तक में मिलेगा। अनुशंसा का लेखक पुस्तक के विषय में लिखता है- ' **प्रस्तुत ग्रंथ वेद पथ वास्तव में नित्य बोले जाने वाले मन्त्रों की सरल व्याख्या है। वेद पथ निःसंदेह वेद ज्ञान बहुमूल्य मोतियों का अनमोल संग्रह है।**

'वेद पथ' पुस्तक आकर्षक आवरण से युक्त दृढ़ बंधन व सुन्दर छपाई से युक्त वेद प्रेमी पाठकों के लिए पठनीय है। वेद के पाठक इस पुस्तक को प्राप्त कर लेखक का श्रम सफल करेंगे इसी आशा के साथ...

आचार्य सोमदेव, ऋषि उद्यान, अजमेर

२. नाम पुस्तक	वैदिक भजन मनुहार (रंगीन आवरण)
संकलयिता	सुनील अरोड़ा
पृष्ठ संख्या	४२५
मूल्य	२००/-
प्रकाशक	श्री मुनीश नासा, प्रोपराइटर- मै. जे.के. एसो.
आवृत्ति	प्रथम संस्करण, कार्तिक शु. ६, सं. २०७४ वि. (२५ अक्टूबर सन् २०१७) दयानंदाब्द १९३
सम्पर्क सूत्र	सुनील अरोड़ा ५६/२२ रजत पथ, मानसरोवर, जयपुर- २०, चलभाष- ९७९९३९२९७०

''वैदिक भजन मनुहार'' पुस्तक सेवानिवृत्त बैंक मैनेजर सुनील अरोड़ा द्वारा वैदिक विचारों से ओत-प्रोत भजनों का संग्रह है। सुनील अरोड़ा वर्षों तक मानसरोवर आर्य समाज के मन्त्री रहे, अब स्वतंत्र रूप से चित्रकूट पार्क में दिव्य वैदिक सत्संग मण्डल का संचालन करते हैं।

संग्रह में अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पं. प्रकाश 'कविरत्न', पं. सत्यपाल 'पथिक' नन्दलाल एवं 'बेमोल' आदि की रचनाएं सुव्यवस्थित क्रम से प्रस्तुत है। आर्य समाजों के सत्संग, वार्षिक उत्सव एवं पारिवारिक, मांगलिक आयोजनों एवं महत्वपूर्ण पद्धतियों, पर्वों व वैदिक संदर्भों में इन भजनों की पहुंच है। अतः पुस्तक उपयोगी एवं संग्रहणीय है।

भजन संग्रह **''वैदिक भजन मनुहार''** की शुभाशंसा राष्ट्रस्तरीय वैदिक प्रवक्ता आचार्य उषर्बुद्ध प्रदत्त तथा मंगलकामनाएँ डॉ. कृष्णपालसिंह, डॉ. मुरारीलाल पारीक द्वारा की गई है।

चर्चित पुस्तक का लोकार्पण दिनांक २६.११.२०१७ को राजस्थान लोकायुक्त मा. जस्टिस सज्जनसिंह कोठारी द्वारा महिला आर्य समाज मानसरोवर के वार्षिकोत्सव के अवसर पर किया गया।

ईश्वर दयाल माथुर, सिद्धान्त भास्कर

पूर्णता की ओर अग्रसर हम सब

- पं. उम्मेदसिंह विशारद -
गढ़निवास, मोहक्कमपुर, देहरादून
(उत्तराखण्ड)
चलभाष- ०९४११५१२०१९

संसार के सृष्टिक्रम को चलाने की ईश्वर की अद्‌भुत व्यवस्था है। सृष्टिक्रम का प्रत्येक कार्य नियमित और निर्धारित समय से हो रहा है। ईश्वर की निश्चित व्यवस्थानुसार व विज्ञान के अनुसार सृष्टिक्रम चल रहा है। ज्ञान विज्ञान का समन्वय से संचालन हो रहा है। युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी वेदों के प्रकाण्ड विद्वान थे, उन्होंने ईश्वरीय व्यवस्थानुसार व सृष्टि क्रमानुसार विज्ञान के अनुसार संसार को सत्य ज्ञान कराया है। पूर्णता को प्राप्त करना ही मानव जीवन का परम लक्ष्य है। न केवल चेतन समुदाय अपितु सृष्टि का प्रत्येक कण इसके लिए लालायित और गतिशील है, भौतिक जीवन में जिसके पास स्वल्प सम्पदा है वह अधिक की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील है। बड़े-बड़े सम्राट अपनी इस अपूर्णता को पाटने के लिए दूसरे साम्राज्यों को लूटते रहते हैं। लगता है संसार का हर प्राणी साधनों की दृष्टि से अपूर्ण है और सभी पूर्णता को प्राप्त करना चाहते हैं।

इतिहास का विद्यार्थी अपने आपको गणित या विज्ञान में शून्य पाता है। भूगोल का संगीत में, वकील डॉक्टरी में, यानि जीवन की विद्या में हर कोई अपूर्ण है और हर कोई अगाध ज्ञान का पण्डित बनने को तत्पर दिखाई देता है। नदियां पूर्णता को प्राप्त करने के लिए सागर की ओर वृक्ष आकाश की ओर, धरती भी स्वयं न जाने किस गन्तव्य की ओर अधर में आकाश में भागी जा रही है। अपूर्णता की दौड़ में समूचा सौर मण्डल उससे परे का अदृश्य संसार में भी सम्मिलित है। पूर्णता प्राप्त करने की बैचेनी न होती तो सम्भवत: विश्व ब्रह्माण्ड में रती भर भी सक्रियता न होती। सर्वत्र नीरव व सुनसान पड़ा रहता न समुद्र उबलता, न मेघ बरसते, न वृक्ष उगते, न तारागण चमकते और न वह विराट की प्रदीक्षिणा में मारे-मारे घूमते। जीवन की सार्थकता पूर्णता प्राप्ति में है, इसका तात्पर्य यह हुआ कि अभी हम अपूर्ण है और असत्य और अन्धकार में है। हमारे सामने मृत्यु मुंह बाये खड़ी है। हर कोई अपने आपको अशक्त और असहाय पाता है। अज्ञान के अन्धकार में हाथ-पैर पटकता रहता है।

इस अपूर्णता पर जब कभी विचार आता है तब एक तथ्य सामने आता है और वह है परमात्मा अर्थात् एक ऐसी सर्वोपरि सर्वशक्तिमान सत्ता जिसके लिए कुछ भी अपूर्ण नहीं है, वह सर्वज्ञ है, सर्वव्यापी, सर्वद्रष्टा, नियामक और एकमात्र अपनी इच्छा से सम्पूर्ण सृष्टि में संचरण कर सकने की क्षमता में ओतप्रोत है।

पूर्णमद: पूर्णमिंद पूर्णातपूर्ण मुदच्यते-।
पूर्णस्य पूर्ण मादाय पूर्णमेवावशिष्यते-। (उपनिषद शान्ति पाठ)
ओं पूर्णादर्वि परापत सुपुर्णा पुनरापत-।
वस्नेव विक्रीणा वहा इष्मूर्जशतक तो-।। (यजु. ३-४९)

अर्थात् - पूर्ण परब्रह्मं परमात्मा से पूर्ण जगत् पूर्ण मानव की उत्पत्ति हुई। पूर्ण से पूर्ण निकाल देने पर पूर्ण ही शेष रह जाता है।

जिस प्रकार नदी का एक किनारा समुद्र से जुड़ा रहता है, और दूसरा किनारा उससे दूर रहता है, दूर रहते हुए भी नदी समुद्र से अलग नहीं है। नदी को जल समुद्र द्वारा प्राप्त होता है और पुन: समुद्र में मिल जाता है। जगत् उस पूर्ण ब्रह्म से अलग नहीं है। मनुष्य उसी पूर्ण ब्रह्म से उत्पन्न हुआ इसलिए वह अपने में स्वयं पूर्ण है। यदि इस पूर्णता का भान नहीं होता, यदि मनुष्य कष्ट और दु:खों से त्राण नहीं पाता तो इसका मात्र कारण उसका अज्ञान और अहंकार में पड़े रहना ही हो सकता है। इतने पर भी पूर्णता हर मनुष्य की आन्तिरिक अभिलाषा है और वह नैसर्गिक रूप में हर किसी में विद्यमान रहती है।

प्रगति और पूर्णता का लक्ष्य बिन्दु 'देवत्व' प्राप्त करना है-

क्षुद्रता और परिधि को तोड़ कर पूर्णता प्राप्त कर लेना हर किसी के लिए सम्भव है। मनुष्य की चेतनसत्ता में वह क्षमता मौजूद है, जिसके सहारे वह अपने स्थूल सूक्ष्म और कारण शरीरों को विकसित कर देवत्व को प्राप्त कर सकता है। षटचक्रों एवं पंच कोषों में समाहित विलक्षण क्षमताओं सिद्धियों का स्वामी बन सकता है। यही क्षमता को प्राप्त करना देवत्व की ओर जाना है। जबकि क्षमता की दृष्टि में वह उतना ही परिपूर्ण है जितना उसका सृजेता। इस चरम लक्ष्य की ओर ज्ञात अज्ञात रूप से हर कोई अग्रसर है।

विकास इस सृष्टि की सुनियोजित व्यवस्था है। पदार्थ और प्राणी अपनी-अपनी आवश्यकता के अनुरूप अपने-अपने ढंग से विकास कर रहे हैं। मनुष्य में देवत्व के उदय की यह सम्भावना विचार विज्ञान एवं ब्रह्म विद्या की परिधि में आती है। व्यक्तित्व का परिष्कार अध्यात्म जगत् का परम पुरुषार्थ माना गया है।

'मैं' के जानने में ही ज्ञान की पूर्णता है

मैं के साथ मेरा है। जो घमण्ड के साथ कहता है कि मैंने ऐसे किया, ऐसा कर दूंगा। इस नश्वर शरीर को शोभा नहीं देता। इस शरीर का वास्तविक मालिक ईश्वर है। हम दुनिया को जानने की कोशिश में लगे रहते हैं और संसार के साथ सम्बन्ध कायम करने में लगे रहते हैं, किन्तु स्वयं अपने को जानने का कभी प्रयत्न नहीं करते। हम इस साकार ईश्वर के अंग है साकार से हमारा अभिप्राय: प्रकृति के अंग है, यह सारा विश्व हमारा शरीर है। इस ज्ञान का नाम ही मैं हैं। मैं है वह परमात्मा सत्ता। इस सत्ता को जानना ही आस्तिकता है। अत: अपने आपको जानकर अपना स्वयं का ज्ञान होना आवश्यक है। मैं क्या हूं? मैं कौन हूं? मैं क्यों हूं? इन छोटे से प्रश्न का समाधान न कर सकने के कारण " मैं" को कितनी विषम विडम्बनाओं में उलझना पड़ता है।

यदि मैं शरीर हूं तो उसका अन्त क्या है? लक्ष्य क्या है? परिणाम क्या है? मृत्यु- मृत्यु -मृत्यु। क्या वास्तव में " मैं" की मृत्यु हो जाएगी। " नहीं" क्योंकि जब तक शरीर में आत्मा रहती है तभी तक मनुष्य मैं का उच्चारण करता रहता है। जैसे ही आत्मा शरीर से पलायन हुई मैं का कोई सम्बोधन भी समाप्त हो जाता है।

आत्मा को जानिए- आत्मा ही जरा-मरण, भूख प्यास समस्त भय सन्देह संकल्प-विकल्पों से रहित नित्य, मुक्त, अजर, अविनाशी तत्व है। उसे जान लेने पर ही मनुष्य समस्त भय, शोक, चिन्ता क्लेशों से मुक्त हो जाता है। आत्मा सर्व व्यापी नित्य तत्व है। आत्मा ही मानव जीवन का मूल सत्य है। आत्मा के पटल पर ही संसार और दृश्य जीवन का छाया नाटक बनता बिगड़ता रहता है।

अध्यात्म ब्रंह्म (वृ.उप्र.) सर्वव्यापी विराट आत्म सत्ता ही ब्रह्म है। ऐसा उपनिषदकार ने अपनी अनुभूति के आधार पर कहा है। जिसने आत्मा को जान लिया उसने ईश्वर को जान लिया। आत्म तत्व जब जगत् देह इन्द्रिय तथा संसार के पदार्थों को प्रकाशित करता है जो अनेक रूपों में दिखाई देता है। जैसे जल की बूंदे समुद्र पर गिरते समय अलग-अलग दिखाई देती है, किन्तु गिरने से पूर्व और गिरने पर वह अथाह सिन्धु के रूप में होती है।

सत-चित-आनन्द पूर्णता की ओर ले जाते हैं-

सतः- परमात्मा के अनेक नामों में से एक नाम है, सचिदानन्द सत् अर्थात् - यथार्थता। यथार्थता का अर्थ सत्य को जानना, ऋत सत्य का ज्ञान होना और अपने जीवन को सत्य मार्ग अर्थात् ईश्वरीय आज्ञानुसार चलाना, सतपथ कहा जाता है।

चितः- अर्थात् चेतना ही मनुष्य का स्वरूप है। उसी के साथ कठिन और जटिल उलझनों का निर्माता एवं समाधान से जुड़ा हुआ है। सदैव सत्य की ओर चित्त को ले जाना ही समस्याओं का समाधान है।

आनन्द- जिसमें प्रति प्रसन्नता न्यून या अधिक आनंद का आधार कारण रूप प्रकृति है बस प्रकृति से ऊपर उठ कर चित्त को सचिदानन्द में सदैव लगा देने पर ही परमानन्द की अनुभूति होती है। अतः महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने हमें वेदों की शिक्षा देकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के मार्ग पर चलकर पूर्णता की ओर जाने का मार्ग बताया है।

उपसंहार-मानव को सदा अपने को सत्य ज्ञान में अपूर्ण, सतकर्म में अपूर्ण, सत धर्म में अपूर्ण, सत व्यवहार में अपूर्ण, सत ईश्वर भक्ति में अपूर्ण समझना चाहिए। इससे उसमें अहंकार व अभियान की निवृर्ती होती है और वह सत्य पूर्णता की ओर अग्रसर होता है। वेद और वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थ और आर्य समाज के सिद्धान्त यही शिक्षा देते हैं।

भारत का २२वां राज्य है सिक्किम- २६ अप्रैल स्थापना दिवस पर विशेष प्रस्तुति

• जब भारत १९४७ में स्वतंत्र हुआ तब सिक्किम को अर्द्धस्वतंत्र देश का स्तर दिया गया, क्योंकि उसकी सुरक्षा तथा विदेश नीति का दायित्व भारत के पास रखा गया था।

• सिक्किम का शासक बौद्ध धर्मी था, किन्तु जनता में सनातन धर्मियों का बहुमत था।

• बौद्ध धर्मी शासक दुर्बल-कमजोर प्रवृत्ति का था और वह शासन को चलाने में असमर्थ हो रहा था।

• उसने १९७५ में भारत सरकार से अनुरोध किया कि सिक्किम का विलय भारत में कर लिया जाए।

• २६-४-१९७५ को संसद में सिक्किम के विलय के प्रस्ताव को स्वीकार किया गया और वह देश का २२वां राज्य बन गया।

• विस्तारवादी चीन को यह विलय पसंद नहीं आया और उसने कई वर्षों तक विलय को मान्यता नहीं दी।

• सिक्किम की सीमाएं चीन-भूटान- नेपाल और पश्चिम बंगाल से लगती हैं। राजधानी का नाम गंगटोक है।

• राज्य की अर्थव्यवस्था पर्यटन पर आधारित है। ३५वर्षों में राज्य का अच्छा विकास हुआ है।

• विधानसभा में ३२ सीटें हैं और लोकसभा की एक सीट है।

• अब मुख्यमंत्री नेपाली मूल का सनातन धर्मी ही बनता है।

• इस समय पवन चामलिंग मुख्यमंत्री हैं जो १९९४ से लगातार मुख्यमंत्री बनते आ रहे हैं।

• पूर्वोत्तर परिषद् में सिक्किम ८वां सदस्य बना है।

• मुख्यमंत्री का दावा है कि वे २०१७ तक राज्य से गरीबी का सफाया कर देंगे।

• सिक्किम हिमालय की गोद में बसा खूबसूरत पर्वतीय राज्य है।

• हमने पूर्वोत्तर के सभी ८ राज्यों की स्थिति पर प्रकाश डाला है, जिसमें ५ हिन्दू बहुल तथा ३ ईसाई बहुल हैं।

• चतुर धर्मान्तरित ईसाई नेताओं ने नागालैण्ड, मेघालय और मिजोरम के लिए धारा ३७१ लगवा ली थी। इसके लिए हम मोदी सरकार से मांग करते हैं कि यह धारा हटाई जाए, क्योंकि यह अस्थाई है।

• जब कोई अन्य राज्य का नागरिक इन राज्यों में जाना चाहता है तो उसे लिखकर देना होता है कि वह तीन दिन के लिए जाना चाहता है- क्यों जाना चाहता है? वहां किस-किस जगह ठहरेगा?

• इन ईसाई राज्यों में हिन्दू सहमें हुए हैं। खुलकर निडर होकर ऊंचे स्वर में पूजा-पाठ-हवन नहीं कर सकते हैं।

• ईसाई मिशनरी-चर्च के नेता सदैव जिला प्रशासन पर अपना दबदबा-प्रभाव बनाए रखते हैं।

• सी.आर.पी.- सेना के जवान यदि वहां से हटा लिए जाएं तो ईसाई नेता इन राज्यों को भारत से अलग करके स्वतंत्र ईसाई देश बनाने में देरी नहीं करेंगे। ऐसी विचित्र स्थिति वहां क्यों है? मोदी सरकार को इस ओर उचित कार्रवाई करनी चाहिए।

- इन्द्रदेव गुलाटी -
संस्थापक-सावरकरवाद प्रचार सभा
बुलन्दशहर, (उ.प्र.)
चलभाष- ०८९५८७७८४४३

स्वर्ग कामो यजेत

- नरेंद्र आहूजा 'विवेक' -
६०२ जी.एच. ५३, सेक्टर-२०
पंचकूला, हरियाणा
चलभाष- ९४६७६०८६८६

'स्वर्ग कामो यजेत' अर्थात् जिसको स्वर्ग की कामना हो वह यज्ञ करे। इस मन्त्र में आदेश स्पष्ट है और हम सभी मनुष्यों को मिलकर एक साथ यज्ञ, कर्म, स्वर्ग अर्थात् सुख विशेष की कामना से करना चाहिए। यहां यज्ञ कर्म को स्वर्ग अर्थात् सुख विशेष की प्राप्ति का साधन बताया गया। इसे पूरी तरह से समझने के लिए हमें यज्ञ और स्वर्ग दोनों शब्दों के विस्तृत यौगिक अर्थों को उनके सही स्वरूप और परिपेक्ष्य में समझना होगा। साथ ही इन दोनों शब्दों यज्ञ और स्वर्ग के बारे में फैली भ्रान्तियों को भी दूर करना होगा। तभी हम **स्वर्ग कामो यजेत** के आदेश को यथावत जान कर मानते हुए पालन कर पाएंगे।

प्रथम यज्ञ को समझने का प्रयास करते हैं। यज्ञ को मनुष्य जीवन का सर्वश्रेष्ठ कर्म **यज्ञौ वै श्रेष्ठतमम् कर्म** बतलाया गया, साथ ही **यज्ञौ वै भुवनस्य नाभि** कहकर इस समस्त संसार का आधार माना गया। परमपिता परमेश्वर को भी यज्ञरूप प्रभो हमारे कहा गया। इनसे स्पष्ट है कि यज्ञ एक बहुत महान् पुनीत श्रेष्ठतम कर्म है। परन्तु प्रश्न वहीं रह जाता है कि आखिर इतना महान् कार्य यज्ञ क्या है। क्या केवल अग्निहोत्र ही यज्ञ है या अग्निहोत्र उस जीवन यज्ञ का प्रारम्भ है। क्रान्तदर्शी देव दयानन्द ने आर्योद्देश्य रत्नमाला में यज्ञ को परिभाषित करते हुए इसकी यौगिक परिभाषा बतलाई है- **''अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेघ प्रयन्त जो भी शिल्प व्यवहार वा पदार्थ विज्ञान है और जो दूसरों के उपकार के लिए किया जाता है उसे यज्ञ कहते हैं।''** इस परिभाषा पर चिंतन करें तो स्पष्ट होता है कि मनुष्य द्वारा जीवन में किया गया परोपकार का प्रत्येक कार्य यज्ञीय कार्यों की श्रेणी में आता है। इस परिभाषा पर चिंतन करें तो स्पष्ट होता है कि मनुष्य द्वारा जीवन में किया गया परोपकार का प्रत्येक कार्य यज्ञीय कार्यो की श्रेणी में आता है। इस परिभाषा के प्रथम भाग पर चिंतन करे तो पाते हैं कि देव दयानन्द ने अग्निहोत्र से अश्वमेघ पर्यन्त कह कर समस्त प्रकार के वैदिक कर्मकाण्डों को इसमें समाहित करके और जो भी शिल्प व्यवहार वा पदार्थ विज्ञान लिखकर सृष्टि में होने वाली प्रत्येक क्रिया प्रतिक्रिया को वैज्ञानिक आधार देते हुए शामिल किया और अन्त में इसे दिशा देते हुए लिखा जो दूसरों के उपकार के लिए है। इतनी बड़ी विस्तृत व्यापक और यौगिक परिभाषा से स्पष्ट हो जाता है कि परोपकार का प्रत्येक कार्य यज्ञीय कार्यों की श्रेणी में आता है। **परोपकार का महत्व और इसकी पुष्टि करते हुए देव दयानन्द ने संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य लिखा है।** ईश्वर को भी यज्ञरूप इसलिए कहा जाता है, क्योंकि ईश्वर के सभी कार्यों सृष्टि के निर्माण पालन न्याय और संहार सभी में रहने वाले सभी प्राणियों के कल्याण और परोपकार की भावना ही निहित है और इसमें ईश्वर का स्वयं का कोई स्वार्थ नहीं है।

इससे स्पष्ट हो जाता है कि अग्निहोत्र जिसे नित्य कर्म बताया गया एक प्रारम्भ है अन्त नहीं। यदि हम गाड़ी का टिकट तो आनलाईन बुक करवा ले परन्तु घर से स्टेशन समय पर जाकर गाड़ी पकड़ने का पुरुषार्थ ना करे तो अपने लक्ष्य या गन्तव्य तक नहीं पहुंच पाएंगे। और इस प्रकार टिकट लेना भी व्यर्थ हो जाएगा। ठीक इसी प्रकार अग्निहोत्र दैनिक यज्ञ के उपरांत इसे अपने जीवन के प्रत्येक कार्य में धारण करने का पुरुषार्थ करने से ही हम जीवन को यज्ञमय बना सकते हैं। संक्षेप में जिस प्रकार हवन कुण्ड में यज्ञ की अग्नि को स्थापित करते हैं ठीक उसी प्रकार अपने आत्मा में सत्य ज्ञान की अग्नि को उद्बुद्ध करना होगा। जिस प्रकार हम दैनिक यज्ञ से पूर्व उस स्थान, प्रत्येक सामग्री और अपनी स्वयं की शारीरिक, सामाजिक और आत्मिक बल की शुद्धता तय करते हैं। ठीक उसी प्रकार जीवन यज्ञ में हमें अपने समस्त कलुषित भावनाओं काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष आदि के पूर्वाग्रहों पर झाड़ू मार कर साफ करना होता है। जैसे अग्निहोत्र में हम प्रज्जवलित यज्ञ की अग्नि में घृत सिंचित समिधा दान करते हैं, ठीक इसी प्रकार जीवन यज्ञ में हमें खुद जीवन से समस्त बुराइयों, स्वार्थ को दूर करके काष्ठ से समिधा बनाकर अपने सर्वस्व को अग्निस्वरूप परमपिता परमेश्वर को समर्पित करना होगा। जीवन यज्ञ करते हुए जब हम ईश्वर के प्रति पूर्णतया समर्पित हो जाएंगे तो समिधा की भांति अग्निस्वरूप हो जाएंगे। ऐसा होने पर हम न केवल माँ की गोद में खेल रहे बच्चे की भांति निर्भय हो जाएंगे, अपितु संसार का कोई भी दुगुर्ण, दुर्व्यसन हमें परेशान नहीं कर पाएगा जैसे यज्ञ में आहूत अग्नि को समर्पित समिधा को कोई छू नहीं सकता, वैसे जीवन यज्ञ में सत्य ज्ञान से प्रकाशित आत्मा में विराजमान सर्वान्तर्यामी परमात्मा को हम सम्पूर्ण दुर्गुणों को त्याग समिधा बनकर पूर्णतया समर्पित कर देंगे तो कोई सांसारिक कष्ट व्यथा हमें छू भी नहीं पाएगी। इसके उपरांत जल प्रसेचन की प्रक्रिया हमें जीवन में जल से शान्ति और यज्ञाग्नि से क्रान्ति का संदेश देती है। हमारे जीवन में प्रत्येक क्रान्ति अर्थात् प्रगतिशीलता उर्ध्वगामी दिशा शान्तिपूर्वक यानि समन्वयता से होनी चाहिए। अग्निहोत्र में औषधियुक्त सामग्री की आहुतियां वेद मन्त्रों सहित हमें संदेश देती है कि जीवन यज्ञ में हमारा प्रत्येक कार्य ईश्वरीय आज्ञा की यथावत पालन करते हुए परोपकार की दृष्टि से करेंगे तो निश्चित रूप से हम अपने जीवन को यज्ञमय बनाने में सफल हो जाएंगे।

हमारे जीवन के यज्ञमय बनते ही हमारा प्रत्येक कार्य सामाजिक, सर्वहितकारी होने के कारण ईश्वरीय न्याय व्यवस्था में कर्मफल सिद्धान्त के अनुरूप वांछित सुख विशेष अर्थात् स्वर्ग के सच्चे अधिकारी हो जाएंगे। यह स्वर्ग जीवन के उपरांत मृत्यु के बाद किसी सातवें लोक की परिकल्पना नहीं होगी, अपितु मिलकर संगतिकरण से परोपकार के यज्ञीय कार्यों के सम्पादन से हमारा जीवन परिवार, समाज और राष्ट्र स्वर्ग बन जाएगा जिसमें सभी को वांछित सुख विशेष प्राप्त होंगे, क्योंकि स्वर्ग मृत्यु के उपरान्त किसी लोक की कल्पना नहीं है, अपितु अपने परिवार, समाज, राष्ट्र में सभी को सुख विशेष देकर इसे ही अपने जीवन में स्वर्ग बनाने की अवधारणा है, इसलिए यह यज्ञ परोपकार के सामाजिक सर्वहितकारी कार्य हम सभी को एकसाथ मिलकर यज्ञ के अवयव संगतिकरण करते हुए करने चाहिए।

जलाओ दिये पर, रहे ध्यान इतना अंधेरा धरा पर, कहीं रह न जाये। - नीरज

क्या आपने नेत्रदान किया?

हमारे देश में प्रत्येक वर्ष प्रकाश पर्व दीपावली के रूप में मनाया जाता है, जिसका एक ही भाव होता है अंधकार को दूर भगाना। प्रत्येक मनुष्य को अपने जीवन में ऐसा दीप जलाना चाहिए, जिससे प्रत्येक मनुष्य के जीवन का अंधकार दूर हो सके, क्योंकि प्राय: देखा जाता है कि प्रत्येक दीपक तले अंधेरा होता है, जिसको दूसरा दीपक ही स्वयं जलकर उस दीप के तले के अंधकार को दूर कर देता है। और एक दीप से दूसरा दीप जलाया जा सकता है। इस प्रकार यदि श्रृंखलाबद्ध तरीके से दीप से दीप जलाते चले जाएं तो हर दीप का प्रकाश, प्रकाश की ओर बढ़ता चला जाता है। जिससे सब ओर प्रकाश ही प्रकाश होगा और सम्पूर्ण संसार से अंधकार समूल नष्ट हो जाएगा।

यहां कहने का तात्पर्य है कि जिनके जीवन में नेत्र ज्योति नहीं है उनके जीवन में ज्योति लाई जाए, जिससे सब कुछ देखा जा सकता है और उनका जीवन प्रकाशमय हो जा सकता है, अन्यथा यदि उनके जीवन में नेत्र ज्योति ही नहीं है तो उनकी दुनिया में अंधेरा ही अंधेरा है

अपने जीवन में खुशियों के दीप जलाते हो तो यह भी ध्यान रखो कि संसार में अन्य ऐसे अनेक प्राणी हैं जिनके जीवन में अंधकार है। उनको भी अपनी खुशियों में सम्मिलित कर लो। इस प्रकार जब तुम दूसरों को भी खुशियां प्रदान कर उनके जीवन के अंधकार को दूर करो तो उनके जीवन में तो खुशियां आएंगी ही तुम्हारी भी आत्मा को संतोष प्राप्त होगा।

आज भारत नहीं बल्कि विश्व में नेत्रांधता बढ़ती जा रही है। नेत्रांधता बढ़ने के विभिन्न कारण हो सकते हैं जैसे- जन्मान्धता, मोतियाबिन्द, ग्लुकोमा, ट्राकोमा, रिवर ब्लाइंडनेस, मधुमेह नेत्रान्धता, दुर्घटनावश नेत्रान्धता आदि। नेत्रान्धता को रोकने के लिए वैज्ञानिकों द्वारा विज्ञान के माध्यम से दिन-प्रतिदिन नए-नए अविष्कार किये जा रहे हैं। आपरेशन की नई-नई विधियां वैज्ञानिकों द्वारा खोज ली गई है, जिससे नेत्रान्धता को दूर किया जा सकता है। इसके लिए सरकार एवं सामाजिक संस्थाओं द्वारा भी सजग होकर समय-समय पर विभिन्न उपाय किये जा रहे हैं। अनेक चिकित्सालय तथा शिविर स्थापित किये जा रहे हैं, जिनमें डॉक्टरों द्वारा नेत्र रोगियों को नि:शुल्क चिकित्सा प्रदान की जा रही है। परन्तु अभी तक नेत्रों का विकल्प अर्थात् कृत्रिम नेत्र वैज्ञानिकों द्वारा तैयार नहीं किया जा सका है। यद्यपि वे इसके लिए प्रयासरत् है। सम्भव है भविष्य में नेत्रों का कोई विकल्प निकल आए और किसी से नेत्रदान लेना ही न पड़े।

नेत्रान्ध लोगों को ज्योति प्रदान करने का एक ही विकल्प है नेत्रदान। दान के लिए हमारा देश विश्वविख्यात है। विश्वकल्याण की भावना से दिया हुआ दान कैसा भी हो सकता है- विद्यादान, अन्नदान, अस्थिदान, देहदान आदि-आदि। दानदाताओं में ऐसे दानी हुए हैं जो दान देकर संसार में सदैव के लिए अमर हो गए हैं, जिनमें महर्षि दधीचि, महाराज शिव, महाराज कर्ण, महाराज बलि, महाराज हरिशचन्द्र आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय है और इतिहास में उनका नाम स्वर्णाक्षरों से लिखा हुआ है। इसी श्रृंखला में धामपुर (जनपद बिजनौर) के एक समाज सेवी स्व. हरीशचन्द्र आत्रेय ने भी नेत्रदान हेतु प्रेरित कर लोगों में जागरूकता उत्पन्न की थी। उनकी प्रेरणा से प्रेरित होकर १९८४ से २००९ तक सात हजार से अधिक व्यक्तियों ने अखिल भारतीय नेत्र अनुसंधान केन्द्र, दिल्ली में अपने नेत्रदान दिए थे।

दु:ख का विषय तो यह है कि हमारे देश में अभी नेत्रदान के लिए लोगों में जागरुकता नहीं है। दूसरे उनमें अंधविश्वास की भावना भी व्याप्त है कि मृत्यु के पश्चात नेत्र निकाल लेने के पश्चात् दूसरे जन्म में व्यक्ति नेत्रहीन होगा। इसके साथ ही साथ यह कि शरीर कुरूप हो जाएगा। जबकि वास्तविकता इसके विपरीत है। इसके अतिरिक्त अभी हमारे देश में सरकार द्वारा भी प्रचार-प्रसार नहीं किया जा रहा है।

नेत्रदान के लिए कोई व्यक्ति मृत्यु उपरान्त अपने नेत्रदान कर सकता है, इसके लिए नेत्रदान संस्था के माध्यम से नेत्रदान द्वारा इच्छापत्र भरा जाता है, जिसमें नेत्रदाता अपने नेत्रदान करने का संकल्प लेता है। इसके लिए उसको एक प्लास्टिक का अभिलेख पत्र (प्लास्टिक परिचय कार्ड) दे दिया जाता है। जिस समय उसकी मत्यु होती है तो परिवार के सदस्य उसकी सूचना नेत्रदान संस्था को दे देते हैं जो हर जनपद में होती है। सूचना पर डॉक्टर आता है और नेत्रदाता की दोनों आँखें निकाल कर ले जाता है। सबसे विशेष बात यह है कि नेत्र निकाल लेने के पश्चात् नेत्रदाता का चेहरा विकृत नहीं होता है। यह निकाली गई आंखें रसायन में सुरक्षित रख ली जाती है और जिन नेत्रहीनों को आवश्यकता होती है उनके शरीर में एक निश्चित अवधि में प्रत्यारोपित कर दिया जाता है और वे नेत्रहीन उन प्रत्यारोपित आंख से दृष्टि पा जाते हैं और उनका अंधकारमय जीवन ज्योतिर्मय हो जाता है, इसी कारण यह नेत्रदान अमूल्य निधि है और नेत्रदाता इस लोक में तो पुण्यनिधि प्राप्त करता है, हमारा शरीर मृत्यु के पश्चात् या तो जलकर राख होना है या फिर जमीन में दफन होकर मिट्टी में परिवर्तित होना है तो क्यों न हम मृत्यु पश्चात् अपने शरीर के अंगों को दान कर जायें, जिससे सभी को लाभ हो।

- श्रीमती विमला देवी
ए-११/ एफ.डी.डी.ए. मुनीरका, नई दिल्ली

लघु बालकथा- बिजली

निशांत बोला- पापा मेरे कमरे में बल्ब ही नहीं है। कैसे पढ़ूं? कमलकांत ने कहा- बेटे जब पढ़ना हो तो तब स्टूल पर चढ़कर स्वयं लगा लेना, पढ़ाई समाप्त होने पर उतार देना। निशांत समझ गया कि कमरे में नहीं होने पर लाईट, पंखे, कूलर बन्द करने के पापा के कहने पर ध्यान नहीं देने के कारण ही पापा ने यह नया तरीका निकाला है। निशांत बोला- सॉरी पापा, आगे से बिजली बर्बाद नहीं करूंगा, आपका कहना मानूंगा, कमलकांत मुस्करा रहे थे।

दिलीप भाटिया, रावतभाटा, चलभाष- ९१९४६१५९१४९८

''ठूंठ के ठाट और बन्दर बाँट''

- देवनारायण भारद्वाज -
'वरेण्यम्' अवन्तिका (प्रथम)
रामघाट मार्ग, अलीगढ़ (उ.प्र.
चलभाष -०५७१-२७४२०६१

एक ग्राम था, जिसके उत्तर में रामगंगा नदी बहती थी, ग्रीष्म ऋतु में उसकी धार क्षीण हो जाती थी, सभी लोग उसे पैदल पार कर लेते थे, अन्य ऋतुओं में उसे नौका द्वारा पार किया जाता था। वर्षा ऋतु में उसका रूप बड़ा भयंकर हो जाता था, लगता था मानो वह समुद्र बन गई हो, दूर-दूर तक जल ही जल होता था। दूसरा किनारा दिखाई ही नहीं देता था। किनारे की भूमि कटती रहती थी और गिरती हुई किनारों की मिट्टी की धड़ाम-धड़ाम की ध्वनियां इतनी भयंकर हो जाती थीं कि सुनकर रात्रि में सोते हुए लोग भी डर जाते थे। वर्षानुवर्ष इस कटाव के कारण कई ग्राम लुप्त हो जाते थे, जिसके निवासी पीछे हटकर अपनी नई बस्ती बसा लेते थे। इतने पर भी एक ग्राम ऐसा था जिस पर बाढ़ का प्रकोप, बस इतना ही होता था कि ग्राम में पानी घुसता था, कुछ दिन टिकता था, फिर वापस हो जाता था।

ग्राम के उत्तर में जो बाग था, वह कटकर एक बड़े बंजर भूमि के मैदान में बदल गया था। एक वृक्ष का ठूंठ वहां पर खड़ा-खड़ा अपने बाग की बुलन्दी की याद दिलाता रहता था। बच्चे जो यहां खेलने आते थे, वे उस पर चढ़ते-उतरते-दौड़ते हुए खेल खेलते रहते थे। एक दिन वहां पर बूढ़ी गाय आई और ठूंठ से रगड़ कर अपने शरीर की खुजली मिटाने लगी। वृक्ष के इस ठूंठ से निकली लकड़ी की नोंक ने गाय के शरीर में घाव कर दिया और कुछ ही दिनों बाद गाय की मृत्यु हो गई। बूढ़ी गाय को तो मरना ही था, किन्तु उसके मरने का बहाना वृक्ष का वह ठूंठ बन गया। ग्राम के क्षत्रिय, जमींदार समझदार जागरुक थे। वे संस्कार-जागरण के लिए ब्राह्मणों के योग्य पुत्रों को काशी भेजकर संस्कृत शिक्षा की व्यवस्था करते थे। जब-जब ये बालक ग्राम में अवकाश पर लौटते थे, तब जमींदार लोग उनकी वार्ता सुनकर आनंदित होते थे। मैदान में खड़े उस ठूंठ को देखकर दार्शनिक ग्रन्थ कादंबरी के रचयिता महाकवि बाणभट्ट के पुत्रों के वाक्य अवश्य दोहराते थे, जो किसी सूखे वृक्ष ठूंठ से ही जुड़े होते थे। एक का अनुवाद था-**'शुष्को वृक्षः तिष्ठति अग्रे'** तो दूसरे ने किया- **'नीरस तरुरिह विलसति पुरत'** दूसरे के अनुवाद को श्रेष्ठ मानकर पिता बाणभट्ट ने अपने अधूरे काव्य को पूर्ण करने का अधिकार प्रदान कर दिया था। दोनों ब्राह्मण किशोर अन्य श्लोक सुनाकर भी ग्रामवासियों को सुख पहुंचाते रहते थे। यहां पर चूंकि वृक्ष के ठूंठ का प्रसंग है, अस्तु यहीं तक सीमित.रखा गया है।

ग्राम के बाल-युवा-वृद्धजनों को उस दिन बड़ा आश्चर्य हुआ कि बाप-दादों की पीढ़ियों से खड़ा वह ठूंठ हरा होने लगा और कुछ ही महीनों में वह हरा-भरा वृक्ष बन गया। वर्ष व्यतीत होते-होते ऊंचा उठकर वह वृक्ष आसमान से बातें करने लगा। ग्रामवासी इस वृक्ष को छाया के साथ फलों की आश लगाये रहते थे। उनकी यह आशा एक प्रभात में निराशा मैं बदल गई थी, जब उन्होंने देखा कि रात्रि में आई आंधी से वह वृक्ष जड़-मूल से उखड़ कर मैदान में लोट-पोट हो रहा है। वृक्ष के धराशायी होने पर शायद ही किसी को दुःख हुआ हो, क्योंकि उस वृक्ष को तना-टहनी-पत्ते सभी उनके काम में आ गए और वहां बच रहा केवल एक गहरा गड्ढा, जिसकी मिट्टी भी खोद-खोद कर ग्रामवासी अपने काम में लाने लगे थे। काशी से अपनी शिक्षा पूर्ण कर ग्राम के ब्राह्मण बालक अब युवा पण्डित बनकर घर लौट आए और पूजा-पाठ-कथा-वार्ता के द्वारा परिवारों में संस्कार जागरण का कार्य करने लगे। उन्होंने ठूंठ से बने वृक्ष के आँधी से विनष्ट होने के कारण बने गड्ढे को देखकर एक वेद मन्त्र सुनाया-

असद् भूम्याः समभवत् तद्यामेति महद् व्यचः।
तद् वे ततो विधूपायत् प्रत्यक कर्त्तारमृच्छतु।।

अथर्व ४.१९.६

अन्याय असद् सब पाप कृत्य, उठता है भूमि तलातल से।
आकाश तलक उठ जाता है, पाकर हरियाली छल बल से।।
वह लौट भूमि पर फिर आता, कर्ता को विनष्ट कर जाता,
यहां न कोई बच सकता है, कृत कर्म न्याय फल चंगुल से।।

उन्होंने समझाया कि फलता-फूलता राष्ट्र, राजा-प्रजा के पास्परिक अन्याय-अत्याचार-दुराचार-दुष्कर्म के प्राबल्य से

प्रा. अखिलेश शर्मा को पी.एच.डी. उपाधि

आर्य जगत् के उद्भट विद्वान स्वामी अमृतानन्द जी के सुपुत्र वैदिक विद्वान प्रा. **श्री अखिलेश जी शर्मा** को हाल ही में औरंगाबाद स्थित डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय ने पी.एच.डी. उपाधि प्रदान की है। श्री शर्माजी ने इसी विश्वविद्यालय की संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. क्रान्ति व्यवहारे के निर्देशन में **'डॉ. हरिशचन्द्र रेणापुरकर के साहित्य का परिशीलन'** इस विषय पर शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किया था। उन्होंने लगभग ५ वर्ष तक संबंधित विषय पर शोधकार्य किया, जिसमें डॉ. रेणापुरकरजी विरचित विभिन्न संस्कृत काव्यग्रन्थों का गहराई से चिन्तन कर उनकी लेखनशैली के विभिन्न पहलुओं पर मौलिक रूप से प्रकाश डाला है। ज्ञातव्य है कि दिवंगत श्री रेणापुरकर जी संस्कृत साहित्य के राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त विख्यात कवि रहे हैं। तीन राज्यों ने उन्हें संस्कृत साहित्य अकादमी पुरस्कारों से गौरवान्वित किया था।

डॉ. श्री शर्माजी ने लातूर स्थित राजर्षि शाहू महाविद्यालय में संस्कृत प्राध्यापक के रूप में १५वर्ष कार्य किया है। सम्प्रति वे धुलिया के एस.एस.व्ही.पी.एस. महाविद्यालय में संस्कृत विभाग प्रमुख के रूप में कार्यरत हैं।

सूखकर ठूंठ मात्र रह जाता है, और जहां गौ माता की रक्षा न होकर उसका रुधिर बहता है, तो उसकी संस्कृति जड़-मूल से नष्ट होकर कवि की इन पंक्तियों को चरितार्थ करने लगती है-

अन्धकार है वहीं जहां आदित्य नहीं है।
मृतवत है वह देश जहां साहित्य नहीं है।।
जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।

उस ठूंठ को गो हत्या का ऐसा अभिशाप लगा कि पहले तो फूलता-फलता ठांठे मारता दिखाई दिया, किन्तु बाद में अस्तित्वहीन हो गया।

उपस्थित ग्रामवासियों ने उन शास्त्रज्ञ युवकों से इस परिस्थिति को दूर करने का उपाय जानना चाहा तो उन्हें महाभारत ग्रन्थ के अनुशासन पर्व से एक कहानी सुनाकर संतुष्ट कर दिया। एक था तोता, जो बियाबान जंगल के एक वृक्ष की खोह में रहता था, उसके हरे पंख, लाल चोंच, गर्दन में सुनहरी कंठी और लालिमा लिए पंजे मनोहारी लगते थे। उसकी मीठी बोली सुनकर सब पक्षी ठगे से रह जाते थे। इस पेड़ पर और भी अनेक प्रजातियों के पक्षी रहते थे। प्रभात होते ही सभी पक्षी चहचहाकर अपना कलरव गान सुनाते हुए दूर दिशाओं में उड़ जाते और दाना-पानी का प्रबन्ध करते। लौटकर इसी पेड़ पर आकर बसेरा करते। पेड़ इतना विशाल था कि यात्री ग्वाले, हिरण आदि इसके नीचे बैठकर विश्राम करते।

एक शिकारी हिरण के शिकार की नियत से इधर आ निकला। उसने हिरण को मारने के लिए विष बुझा तीर छोड़ा, हिरण भाग गया, किन्तु तीर पेड़ पर जाकर लग गया। शिकारी तो निराश होकर लौट गया, किन्तु पेड़ विष के मारक प्रभाव से सूखने लगा। कुछ ही दिनों में पेड़ सूख कर ठंकर बन गया। सब पक्षी किनारा कर गए। पर तोता कहीं नहीं गया। उसी खोह में बैठा रहा। पेड़ की दुर्दशा देखकर तोते की आंखों में आंसू आ जाते। तोता इतना खिन्न रहने लगा कि वह अपना चुग्गा लेने के लिए भी बाहर नहीं जाता।

होना क्या था पेड़ की भांति तोता भी सूखता चला गया। उसका मांसल सुन्दर शरीर हड्डियों का ढांचा बनकर रह गया। किसी को क्या पड़ी थी, कि यहां आकर उसकी दयनीय दशा को देखे। पर उसकी त्याग, तपस्या की सुधि देवराज इन्द्र को लग गई। उन्हें आभास हुआ कि दृढ़ व्रती तोता अपने जन्मवृक्ष का इतना भक्त है कि वह अपने प्राणों की आहुति देने को उद्यत है। इन्द्र विचलित हो गए। देवता न तो आंखों के मोहताज होते हैं न कानों के, वे तो भावना की सुगन्धि दूर से ही ले लेते हैं। इन्द्र से रहा नहीं गया। वे ब्राह्मण का रूप धारण कर तोते के पास आ गए। तपस्या के कारण उसकी चेतना तीव्र एवं मानवीय बन गई थी। उसने देवराज को पहचान लिया। उन्हें प्रणाम किया और अपनी दुर्बल किन्तु नम्रवाणी से उनका स्वागत किया।

इन्द्र ने तोता को बहुत समझाया कि वह एक सूखे पेड़ के लिए अपने प्राण न गंवाये। पर तोता अपने संकल्प से टस से मस नहीं हुआ। उसने इन्द्र से कहा- यह पेड़ मेरा जन्मतरू ही नहीं सब कुछ है। मैं इसी पर जन्मा, पला-बड़ा हुआ और आज तक की अवस्था तक पहुंचा हूं। इसके हरे-हरे पत्तों की सुखद छाया में मैंने अपनी थकान मिटाई व विश्राम पाया। इसके फूलों की सुगन्ध से मेरी आत्मा तृप्त हुई है। इसके फल खाकर मेरा शरीर पोषित हुआ है। मां-बाप ने तो मुझे जन्म ही दिया था। पाला-पोसा तो इसी ने। इसके उपकारों को भला मैं कैसे भूल सकता हूं। आप राजाओं के राजा होकर कैसे यह अनीति की बात कहते हैं। मुझे इसी के साथ मर जाने दो, देवराज!

इन्द्र तोते की दृढ़ भक्ति एवं अडिग संकल्प को देखकर चकित रह गए और बोले- 'पक्षिवर! मैं तुम्हारी जन्मतरू के प्रति इस अचल भक्ति से बहुत प्रसन्न हूं। वर मांग लो जो मांगोगे दे दूंगा। ऐसा जन्म स्थल प्रेम यदि सबके मन में आ जाए तो जीवन की कोई समस्या व भेदभाव ही न रहे। मांगों क्या मांगते हो। तोता बोला- देवराज! यदि देना चाहते हो तो यह वरदान दो- मेरा जन्मतरु फिर हरा भरा हो जाए। पूर्ववत हरे-हरे पत्ते, पीले-पीले फूल और रस भरे फल फिर से आ जाएं। इन्द्र को तथास्तु कहना पड़ा। पेड़ फिर पहले जैसा हो गया। पक्षियों के मेले लगने लगे। हिरणों के झुण्ड सजने लगे और ग्वाल-बालों का क्रीड़ा स्थल फिर से हंसने लगा। यही नहीं तोता भी फिर पहले जैसा हृष्ट-पुष्ट मांसल और प्रसन्न मन हो गया। **राष्ट्र प्रजा का वंशवृक्ष होता है।**

ग्राम के उन वेद विद्वान युवकों ने ग्रामवासियों को **प्रथम कथानक में युगों-युगों से खड़े ठूंठ का गोवध के शाप से पहले बढ़ने फिर समूल नष्ट-भ्रष्ट होने की बात बताई। दूसरे कथानक में आतंकी शिकारियों द्वारा विखण्डित कर दिए गए राष्ट्र को त्याग, तपस्वी, मातृभक्त नागरिकों के बलिदान से पुनर्प्रतिष्ठित कर दिए जाने का सन्देश है।** इन्द्र राष्ट्र नायक के रूप में अपने नागरिकों का प्रेरणा स्त्रोत होता है। ईश्वर भी **'इन्द्रस्यः युज्यः सखा'** (ऋ. १.२२.१९) अनेक ऐश्वर्य युक्त होने योग्य प्रजा का समर्थ सखा बन जाता है। ऐसी उज्जवल स्थिति होने पर वाममार्गी व विरोधी शान्त रहते हैं। अन्यथा वहां हर विभाग व उपक्रम में बन्दर-बाँट प्रारम्भ हो जाता है। यह कथा तो बच्चे भी जानते हैं। **एक रोटी के लिए दो बिल्लियां लड़ पड़ीं। बन्दर महोदय ने देखा तो बंटवारा करने आ गए। रोटी के दो टुकड़े किए और तराजू के दोनों पलडों में रख दिए। ऊंचे-नीचे पलड़ों का सन्तुलन बनाने के बहाने शनैः शनैः पूरी रोटी स्वयं खा गया। त्यागी, तपस्वी, शासक वर्ग ऐसे बन्दरों को पकड़ते हैं वे कारागार जाते-जाते बन्दर, घुड़की लगाने में चूकते नहीं पर तोते पेड़ पर फुदकते और माफिया जेल के पिंजरों में तड़पते रह जाते हैं।**

आर्य समाज कोटा ने राष्ट्र समृद्धि यज्ञ कर मनाई लाला लाजपतराय जयंती

लाला लाजपतराय भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के महानायक थे। इनसे प्रेरणा पाकर भगतसिंह जैसे सैकड़ों नौजवानों ने क्रांति को आगे बढ़ाया उक्त विचार कोटा की पूर्व महापौर सुमन श्रृंगी ने आर्य समाज द्वारा आयोजित लाजपतराय जयंती समारोह के अवसर पर व्यक्त किए।

इस अवसर पर आर्य समाज जिला सभा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने अपने उद्बोधन में कहा कि लाला लाजपतराय आर्य समाज को अपनी माता और स्वामी दयानंद सरस्वती को अपना गुरु मानते थे। उनका व्यक्तित्व बहुमुखी प्रतिभा का धनी था। इससे पूर्व कार्यक्रम का प्रारंभ आचार्य अग्निमित्र शास्त्री के ब्रह्मत्व में राष्ट्र समृद्धि यज्ञ के साथ हुआ।

बाँझ कार्यशैली; दिखावटी व्यस्तता

- रामनिवास गुणग्राहक-
वैदिक प्रवक्ता एवं पुरोहित
आर्य समाज श्रीगंगा नगर (राजस्थान)
चलभाष- ०७५९७८९४९९१

आर्य समाज के हित चिन्तकों के मन और मस्तिष्क में आज एक बहुत बड़ा प्रश्न विविध रूपों में उठ रहा है कि कामी (भवनों) और माया (संसाधनों सम्पत्तियों) के खूब बढ़ जाने के बाद भी आर्य समाज का आत्मा क्यों निरन्तर दुर्बल हो रहा है? क्या कारण है कि आर्य समाज को सिद्धान्त निष्ठ, ऊर्जावान, कर्त्तव्य परायण, बात के धनी, जीवनदानी युवक नहीं मिल रहे? डगमगाती गर्दन, जकड़ चुके घुटने, सूखी काया के धनी, कांपते हाथों को लटकाये रखने से ही दुखने (दर्द करने) वाले कमजोर कन्धे आर्य समाज के महान् उद्देश्यों के भार को भला कब तक ढोयेंगे? सच को झूठलाने के लिए सदैव तत्पर रहने वाले कुछ महानुभव हमारे ऊपर निराशा फैलाने के आरोप लगाते हुए प्रमाण स्वरूप कुछ युवा नेताओं के नाम उछाल सकते हैं, लेकिन आर्य समाज में प्राण फूंकने वाला पराक्रम उन कथित नेताओं के जीवन को कभी छूकर भी गया हो, ऐसा न उनके व्यवहार में मिलता है, न इतिहास में। कुल मिलाकर आन्तरिक शक्ति- सिद्धान्त-निष्ठा-सत्यनिष्ठा और ईश्वर भक्ति (संध्या, स्वाध्याय) जैसे बलदायी सद्गुणों के अभाव में समृद्धि व संसाधनों के भार से हॉफ और कॉप रही आर्य समाज की स्थिति भारी-भरकम शरीर को ढोने में असमर्थ एक रोगी व्यक्ति जैसी हो गई है। किसी कवि ने भारतीय जनमानस में व्याप्त संकीर्ण बिखराव पर बड़ी तीखी चुटकी लेते हुए लिखा है- **''यहां कोई हिन्दू है, कोई मुसलमान, कोई ईसाई है। इन सबने मिलकर मानव न बनने की कसम खाई है।''** आर्य समाज पर भी यह पूर्णत: चरितार्थ हो रही है। **आर्य समाज में प्रधान हैं, मन्त्री हैं, संरक्षक हैं, महामन्त्री हैं, आचार्य हैं, धर्माचार्य हैं, विद्वान हैं, पुरोहित हैं, उपदेशक हैं और न जाने क्या-क्या हैं, लेकिन इन सबने आर्य न बनने का एक अघोषित अटूट संकल्प ले रखा है। आज आर्य समाज में आर्य होना एक अपवाद बनकर रह गया है।**

अगर हम अपनी पुरानी पीढ़ी के आर्यों के जीवन पर दृष्टि डालें तो पता चलता है कि हर चमकदार व्यक्ति के जीवन में संध्यापोसना, स्वाध्याय, सहिष्णुता, धर्माभाव और परोपकार वृत्ति जैसे आर्योचित गुणों के कारण एक विशेष आकर्षण दिखाई देता था। वास्तविकता और भोगवादी जीवन के जटिल दोषों, दुर्व्यसनों को हराकर उन्होंने अपने जीवन को जैसे निखारा और संवारा था, वैसे ही अन्य लोगों के जीवन में सुधार लाने की विलक्षण क्षमता भी उनके अन्दर थी। आज भी अगर कोई आर्य पुरुष अपने जीवन पर दृष्टि डालकर यह कहने का साहस करता हो कि आर्य समाज में आकर मैंने अपने कुछ दोष दूर करके कुछ सद्गुण प्राप्त किए हैं। तो उसे यह शिकायत हो ही नहीं सकती कि दूसरे लोगों पर उसकी वाणी व व्यवहार का सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता। जिसने अपना जीवन संवार लिया वो और भी जीवन संवार सकता है। आज हमने जीवन संवारने की कला भूला दी है। मैं मेरा जीवन नहीं बदल सकता तो मुझसे किसी का जीवन कभी नहीं बदला जा सकता। हमारे प्रचार-अभियान की सफलता-असफलता हमारे इसी एक गुण पर आधारित है। चूंकि आज हमारे प्रचार-अभियान में जुटे हुए महानुभाव अपने जीवन को आर्योचित गुणों से सुभूषित किए बिना अन्यों को आर्य बनाने का असम्भव कार्य करने की योजना बनाकर चल रहे हैं, इसलिए एक लम्बे समय से हमारा प्रचार अभियान कोई सार्थक परिणाम नहीं दे पा रहा है। **सीधे-सपाट शब्दों में कहें तो हमारे कर्णधारों ने एक बांझ कार्यशैली को आर्य समाज के ऊपर थोप कर ऋषि मिशन को नि:सन्तान बना दिया है।**

मनुष्य जीवन भर जो कुछ भी करता है वह सुख पाने की भावना व कामना से ही करता है। दु:ख पाने के लिए किसी ने कभी कुछ किया हो ऐसा कोई नहीं कहता, फिर भी दु:ख बिना सूचना दिये ही आ जाते हैं सुख बुलाने पर भी नहीं आते। कारण यह है कि हमने जाने-अनजाने में सुख की भावना और कामना के साथ जो कर्म किए थे, ईश्वरीय व्यवस्था व राजनियम के अनुसार उनमें से कई कर्मों के फल दु:ख रूप में, दण्ड के रूप में मिलने थे। चूंकि हमने ईश्वरीय व्यवस्था को जाने बिना केवल अपनी बुद्धि के बल पर निर्णय लेकर कर्म किए थे। हमारे निर्णय ईश्वरीय विधान के विरुद्ध होने से उनके परिणाम भी हमारी भावना और कामना के विरुद्ध आएंगे ही ठीक इसी प्रकार **आर्य समाज के प्रचार-अभियान के कर्णधार अपने वातानुकूलित कमरों में बैठकर चाय-बिस्कुट की चुस्कियों के साथ वेद प्रचार की योजनाएं बनाकर अपने मन पसंद शब्द वित सज्जनों (विद्वानों) के बल पर प्रभावकारी प्रचार की कामनाओं को सफल नहीं बना सकते।**

बातें कुछ कड़वी लग सकती हैं, मगर सच का सामना करना सबके लिए सदैव सुहावना भी नहीं होता। **ब्रह्मा से लेकर जैमिनी मुनि तक के समस्त ऋषि मुनियों के तप, त्याग और जीवन दर्शन को इस धराधाम पर पुनर्जीवित करने के लिए अपने सम्पूर्ण जीवन की आहुति देकर देव दयानन्द ने जो वेद ज्योति संसार के मार्गदर्शन के लिए जलाई थी उस पावन प्रखर ज्योति के प्रताप को अपनी मूढ़ता (भूल या अज्ञानता नहीं) व अकर्मण्यता की धूल से जो निरन्तर बुझाने के प्रयास में लगे हुए हैं, उनके किए कर्ण प्रिय भाषा बोलना निश्चित रूप से ऋषि के साथ अन्याय होगा।** सत्य कहना व सत्य सहना (सुनना) जिन्होंने अपने स्वभाव व कार्य योजना से

निकाल रखा हो, व्यवहारिकता और कथित संगठन के नाम पर सिद्धान्तों की बलि देना जिनके लिए अनिवार्य हो, उनके लिए जो कर्णप्रिय होगा, वह प्रभु की कर्मफल व्यवस्था के अनुसार पुण्यकर्म की कोटि में तो नहीं आएगा। सत्य और सिद्धान्तनिष्ठ आर्यों! जागो! विचार करो कि अगर हमारे कथित कर्णधार ऋषि की मान्यताओं व वैदिक आदर्शों के अनुसार ही सब कुछ कर रहे हैं तो हमारा निरन्तर पतन क्यों हो रहा है? कौन है हमारी इस दुर्दशा के लिए जिम्मेदार? कर्णधारों के सिद्धान्तहीन कारनामे इस दुर्दशा के लिए जिम्मेदार हैं, हमारा मौन होकर सब कुछ सहन करते रहना भी कुछ कम जिम्मेदार नहीं है? इस बांझ कार्यशैली व माला डालने की प्रवृत्ति को समाप्त करके सिद्धान्तनिष्ठ सज्जनों को सम्मान व प्रोत्साहन देकर हमें स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम और पं. गुरुदत्त विद्यार्थी वाला युग लौटाना होगा। अपने पूर्वजों के तप, त्याग व पुण्य कर्मों की रक्षा करना हमारा कर्त्तव्य है। लो सुनो-

''वनेरणे शत्रु जलाग्नि मध्ये, महार्णवे पर्वत मस्तके वा।
सुप्तं प्रमत्तं विषमस्थितिंवा, रक्षन्तु, पुण्यानि पुराकृतानि।।

हम चाहे वन में हो या युद्ध क्षेत्र में, चाहे हम शत्रुओं, जलधारा या अग्नि से घिरे हुए हो। चाहे समुद्र तल में हो या पर्वत शिखर पर। चाहे हम सुप्त या प्रमत्त जैसी विषम स्थिति में ही क्यों न हो, इन सब परिस्थिति में हों अपने पूर्वजों के पुण्य कर्मों की रक्षा करनी चाहिए। आर्यों! विचार कर निर्णय लो कि हम उनकी रक्षा करेंगे या नष्ट होते हुए यूं ही देखते रहेंगे?

विघटनवादी जातिवाद सर्वोपरि अथवा राष्ट्रवाद?

- आचार्य सोमेन्द्र श्री -
शास्त्री सदन, ग्राम नित्यानन्दपुर,
पोस्ट- शाहजहांपुर, जिला-मेरठ (उ.प्र.)
चलभाष- ९४१०८१६७२४

महाराष्ट्र के भीमा-कोरे गांव में जातीवाद के नाम पर जो संघर्ष हुआ, वह किसी भी मायने में सही नहीं है। आज भारत में जातिवाद के नाम पर लोगों को भड़काया जा रहा है। इस प्रकार की घटनाएं भारत के आपसी भाईचारे, प्रेम, सौहार्द्र को बिगाड़ती है। भीमा-कोरेगांव में आयोजित विजय दिवस विगत १०० वर्षों से मनाया जाता है। माना जाता है कि भीमा नदी के किनारे १ जनवरी १८१८ को अंग्रेजी सेना और पेशवाओं के बीच युद्ध हुआ था। अंग्रेजी-मराठा युद्ध में पेशवाओं की पराजय तथा अंग्रेजों की जीत हुई। युद्ध की खास बात यह थी कि अंग्रेजी सेना का साथ महार जाति के लोगों ने दिया था। जिसमें ४०० महार (सैनिक) मारे गए थे। अंग्रेजों ने उनकी याद में १८१८ में उस स्थल पर 'विजय स्तम्भ' बनवाया था। विजय स्तम्भ पर अंग्रेज-पेशवा युद्ध में मारे गए सैनिकों के नाम उत्कीर्ण हैं। तब से लेकर आज तक दलित वर्ग के लोग उस स्थल पर विजय दिवस का उत्सव मनाते हैं। डॉ. अम्बेडकर ने भी सन् १९२७ में इस स्थल का भ्रमण किया था। उनके भ्रमण के कारण यह स्थान दलितों के लिए एक तीर्थ स्थान जैसा हो गया। डॉ. अम्बेडकर द्वारा इस घटना को दलित शौर्य के प्रतीक की संज्ञा देने पर उस समय असहज स्थिति पैदा हो गई थी, लेकिन तब जातीवाद के नाम पर रोटियां सेंकने वाले नेताओं की एक नहीं चली तथा यह मामला शांत हो गया था। भारत में दलित विमर्श के जनक ज्योतिबा फूले ने १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम के विद्रोह को असफल हो जाने पर पुणे में सार्वजनिक रूप से महार सैनिकों का सम्मान किया था, जिन्होंने अंग्रेजों की सेना का साथ देकर ईस्ट इण्डिया कंपनी की जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। तत्कालीन वायसराय को पत्र लिखकर ज्योतिबा फूले ने अंग्रेजों का आभार जताया था, जिसमें उन्होंने तर्क दिया था कि अंग्रेजों ने दलितों को ब्राह्मणवाद से बचाया है। सन् १८१८ का दलित आन्दोलन डॉ. अम्बेडकर से ही पूर्ण होता है। डॉ. अम्बेडकर पर भी यह आरोप लगा था कि वे अंग्रेजों की बात ज्यादा मानते हैं। उस आरोप का आधार उन्होंने डॉ. अम्बेडकर के लेखन और भाषणों को बनाया था। जिससे आगे चलकर यह विचार उपजा कि अंग्रेज देरी से आए और जल्दी चले गए।

इन लोगों पर आरोप शायद इसलिए भी लगे हो कि ये दलितों के लिए काम कर रहे थे। कमजोर वर्ग उसी का सहारा ढूंढता है, जहां से उसे आश्रय मिलने की आशा होती है। उसके लिए भी हमारी समाज व्यवस्था दोषी थी, जिसने मानव को कीड़े-मकोड़े से बदतर जीवन जीने को मजबूर कर दिया था। यही ज्वाला इन घटनाओं के रूप में समाज के सामने आई थी। हमें दर्द की इस घटिया व्यवस्था को आमूलचूल बदलने की जरूरत है। इस सब के बावजूद देश के स्वतंत्रता संग्राम में सभी ने प्राणों की आहुति देकर देश को आजाद कराया। इन बातों पर चर्चा करने का मात्र आशय यह है कि उस समय दलित वर्ग अत्याचारों से त्रस्त था वह मुक्ति के लिए छटपटा रहा था। उस समय के समाज सुधारकों ने दलितों के लिए कार्य किए जिससे उनकी आर्थिक , सामाजिक शैक्षिक स्थिति में सुधार हुआ। विजय दिवस, ज्योतिबा फूले, अम्बेडकर के विचारों को हिन्दू समाज अपनाता रहा है। उसी का परिणाम है कि आज तक कार्यक्रम होते रहे तथा अम्बेडकर, ज्योतिबा फूले को भारत पूजता रहा है। मात्र दलितों पर अत्याचार की चर्चा करके अन्य दबे कुचले, पिछड़े वर्ग को नजर अंदाज करना है जो आज भी दो जून की रोटी के लिए तसरता है।

दलितों के नाम पर संविधान की दुहाई देकर राजनीति करने वालों को समझना चाहिए, संविधान में दलित शब्द का प्रयोग नहीं है, दलित का अर्थ है पीड़ित शोषित, दबा हुआ, खिन्न, उदास, टुकड़ा, खण्डित, रौंदा हुआ जिसे अस्पृश्य समझा जाता हो, इस प्रकार की सैकड़ों जातियों को अनुसूचित जाति में रखा गया है। संविधान में अनुसूचित जाति शब्द का प्रयोग है न कि दलित शब्द का। दलित तो किसी भी वर्ग, समाज, जाति में हो सकता है। आज दलित शब्द कुछ विशेष जातियों को इंगित करता है जो कि अन्य जातियों के खिलाफ अन्याय है। मीडिया तथा राजनेताओं को दलित-हिन्दू संघर्ष शब्द का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

दलित-हिन्दू शब्द के प्रयोग से आप दलितों को हिन्दू धर्म से अलग कर देते हैं। जबकि दलित वर्ग हिन्दू समाज का अभिन्न अंग है। भारत में दलित १६.६ प्रतिशत यानि २०.१४ करोड़, बांग्लादेश में ६५ लाख, नेपाल में ५० लाख, श्रीलंका में ५० लाख पाकिस्तान में ३० लाख, ब्रिटेन में ५ लाख हैं। ये विभिन्न जातियों में विभाजित हैं। अनुसूचित जातियों के सम्मानजनक जीवन के लिए संविधान में अनुच्छेद १७ में अस्पृश्यता के उन्मूलन का प्रावधान किया गया है। आज जातिवाद के नाम पर समाज को बांटकर राजनैतिक रोटियां सेंकी जा रही है। जाति का अर्थ है अपने समान सन्तान को उत्पन्न करना, '**समान प्रसवात्मिक जाति**' मनुष्य से मनुष्य उत्पन्न होता है, दलित, जाट-गुर्जर या ठाकुर नहीं, उसे तो हमारा समाज बांटता है। इसी का विकराल रूप संघर्ष के रूप में हमारे सामने है। यदि जातिवाद को खत्म करना है वैदिक मान्यताओं को अपनाना होगा। वर्ण व्यवस्था को अपनाना होगा कर्म आधारित वर्ण व्यवस्था जातिवाद से ठीक विपरीत व्यवस्था। जातिवाद विशुद्ध रूप से जन्म पर आधारित एक ऐसा सड़ा-गला और दमघोटूवाद है जिसका कोई सामाजिक, आर्थिक, औचित्य नहीं है। इसके विपरीत वर्ण व्यवस्था समाज के प्रत्येक व्यक्ति के गुण कर्म एवं स्वभाव पर आधारित एक वैज्ञानिक ढंग की श्रम विभाजन प्रणाली है। जातिवाद के झगड़ों से निकलकर समाज को सुदृढ़ एवं सभ्य समाज बनाने का प्रयास करना चाहिए। अनुसूचित जाति (दलित) हिन्दू धर्म का अभिन्न अंग था, है और रहेगा उसे समाज की कोई विघटनकारी शक्तियां नहीं तोड़ सकती। शिवाजी महाराज की सेना से लेकर संभा जी महाराज की अंतिम क्रियाक्रम तक करने वाला महार समाज वीरता, भक्ति, शक्ति की मिसाल है। उसकी गरीमा को कोई नहीं मिटा सकता। हिन्दुओं को आपस में छुआछूत के भेदभाव को समाप्त करने की जरूरत है। नहीं तो जातिवाद के नाम पर समाज को बांटने वाले इसी प्रकार समाज को बांटते रहेंगे। समाज सुधारकों, विद्वानों, देशभक्तों को जाति में बांधकर उनका अपमान न करें। क्योंकि वह समस्त समाज के लिए कार्य करते हैं। वे जाति से ऊपर उठकर देश के लिए कार्य करते हैं। उनका सही सम्मान तभी होगा जब हम समाज में एक समानता पैदा करें। जातिवाद को समाप्त कर राष्ट्रवाद को स्थापित करें। यदि जातिवाद को खत्म करना है तो वैदिक संस्कृति को अपनाना होगा। उसके मूल्यों को धारण करके हम एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं। जिसका शुभ संदेश है- ' **वसुधेव कुटुम्बकम्** ' यह सारा संसार एक परिवार के समान है। उसी परम्परा का निर्वाह करने की आवश्यकता है। तभी भारत तरक्की के रास्ते पर चलकर प्रगति कर सकता है।

गलत सोच

- श्रुति भास्कर -
धार्मिक प्रवक्ता एवं साम गायनाचार्य
सहारनपुर (उ.प्र.)
चलभाष-०९४१२७४२५५७

गलत सोच समाज एवं राष्ट्र के उत्थान एवं विकास में बाधक होता है। अत: गलत सोच का खण्डन राष्ट्र एवं समाज हित में होता है। किसी भी सम्बन्ध में सही सोच एक ही होती है यानि सत्य मत एक ही होता है। दो नहीं हो सकते। दो और दो मिलकर चार होते हैं यह सही सोच है, किन्तु दो और दो मिलकर पाँच होते हैं या तीन होते हैं यह गलत सोच है। सही सोच के लिए सुतर्कपूर्ण एवं विद्वतापूर्ण विचार आवश्यक है।

इस्लाम मत का केन्द्र दारूल उलूम, देवबन्द द्वारा यह मत व्यक्त किया गया कि बैंकों में कार्यरत लोगों के पास हराम की कमाई होती है, ऐसा विचार रखने वाले मुल्लाओं को मालूम होना चाहिए कि बैंकिंग क्षेत्र में कार्यरत कर्मचारी के पास हराम की कमाई नहीं होती है। क्योंकि कर्मचारी या अधिकारी सुबह १० बजे से सायं ५ बजे तक ड्यूटी देता है तब उसे वेतन मिलता है। ब्याज का पैसा भी हर प्रकार से गलत नहीं कहा जा सकता है। उदाहरण के लिए एक व्यक्ति के पास खाली मकान है दूसरे के पास रहने के लिए मकान नहीं, पहला व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की जरूरत यानि मकान में रहने की सुविधा देता है। बदले में पहले व्यक्ति को उचित पैसा (किराया) देता है, इसी प्रकार एक व्यक्ति के पास पैसा है, दूसरे व्यक्ति के पास पैसा नहीं है, पहला व्यक्ति बैंक में अपने पैसे को सुरक्षित जमा कराकर दूसरे व्यक्ति की जरूरतों को पूरा करता है तो बैंक भी जमाकर्ता को उसकी मेहनत के पैसे का किराया (ब्याज) देता है, तो इसे हराम की कमाई कहना निम्न विचारधारा, संकुचित एवं कट्टरवादी दृष्टिकोण का द्योतक है।

लोगों के द्वारा कमाया धन को सुरक्षित रखने एवं चोरी से बचाने में भी बैंक एवं बैंक कर्मचारियों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

अपवाद हर क्षेत्र में है, यहां भी अगर कोई व्यक्ति कर्ज लेने के बाद उसके ब्याज को देने की सामर्थ्य नहीं है तो उसे जबरदस्ती ब्याज लेना अनुचित है और उसके प्रति सहानुभूति पूर्वक व्यवहार एवं सम्भव हो तो कर्जमाफी की प्रक्रिया अपनाना चाहिए।

अत: सफल एवं उत्कृष्ट जीवन जीने के लिए एवं अंधविश्वास और कट्टरवाद से बचने के लिए सही सोच अति आवश्यक है। इस प्रसंग में भारतीय संस्कृति के गौरव रूप ऋग्वेद में कहा गया है-**आनो भद्रा क्रतवो** अर्थात् हमें जीवन में सदैव सही सोच (सत्य विचार) को अपनाना चाहिए।

सहयोगार्थ अनुरोध

गुरुकुल रामलिंग येडशी, जिला- उस्मानाबाद (महाराष्ट्र) के संस्थापक प्रधानाचार्य सुभाषचन्द्र जी गत तीन महीने से अकस्मात् गम्भीर रोग से ग्रस्त हो गए हैं। उनका उपचार चल रहा है और उपचार में आर्थिक संकट बाधा उत्पन्न कर रहा है, अत: आर्यजनों से अनुरोध है कि आर्थिक सहयोग करने की कृपा करें।

सम्पर्क- भाऊराव आमदाबादे- ८६६८४८६९३४
उत्तमलाल जी तोष्णीवाढ- ९४२१६५५११४
निवेदक- आर्य मुनि वानप्रस्थी- गुरुकुल अध्यक्ष

खुशहाल लेखावली-संक्षिप्त परिचय

यह खुशहाल लेखावटी मेरे चालीस वर्ष के परिश्रम का प्रतिफल है। मैं इसे प्रकाशित कर पूर्ण सन्तुष्ट हूं। मैं इस ग्रन्थ के सम्बन्ध के कुछ लिखूं इससे पहले मैं अपने जीवन व परिवार पर प्रकाश डालना उचित समझता हूं।

मेरा जन्म सन् १०.१०.१९३३ में एक उच्च अग्रवाल, आर्य परिवार में स्व. पिता गोविन्द राम आर्य (प्रधानजी) स्व. माता मेवा देवी के घर पर हुआ। मेरे पिता जी एक वृद्ध आर्य समाजी होने के साथ-साथ एक बड़े परोपकारी, समाज सुधारक, गो-भक्त व एक कर्मशील व्यक्ति थे। इन्होंने अपने जीवन में अनेक परोपकारी कार्य किए। इन्होंने सन् १९५० में करीब डेढ़ लाख रुपए दानदाताओं व कुछ अपने पास से देकर एक हाई स्कूल की विशाल बिल्डिंग बनाकर सरकार को दी, जिसमें दसवीं क्लास तक की पढ़ाई चालू हो गई। जो बच्चे गांव में स्कूल के अभाव में नहीं पढ़ पाते थे, वे इस स्कूल से पढ़कर, आज सरकारी बड़े-बड़े पदों पर काम करके देश की सेवा कर रहे हैं। पिताजी ने बीस वर्ष तक एक आर्य कन्या पाठशाला छह क्लास तक की चलाई, जिसमें एक चरित्रवान, अच्छी पढ़ी-लिखी अध्यापिका लाकर गांव की सब जाति की बच्चियों को पढ़ाया। अपने विशेष प्रयास से हरिजनों की काफी बच्चियों को पढ़ाया। हवन के समय गांव की बूढ़ी माताएं भी शामिल होती थी, जिसमें गांव का वातावरण बहुत शुद्ध व पवित्र बन गया। पिताजी ने १९५७ में हिन्दी रक्षा आन्दोलन और ७ नवम्बर १९६६ को गो-रक्षा आन्दोलन में खूब बढ़-चढ़ कर भाग लिया और जेल की यातनाएं भी सही। पिता जी बाल-विधवाओं का पुनर्विवाह करवाने के बड़े पक्षधर थे और अपने जीवन में १०-१२ बाल विधवाओं का पुनर्विवाह अच्छे लड़कों से करवाकर सुखी जीवन बनाया। पिताजी ने यह काम करके अग्रवाल समाज में उदाहरण पेश किया कि तीन बाल विधवाओं का अपने एक पुत्र, दो पौत्रों से विवाह करके अपने घर की बहुएँ बनाई। ईश्वर की कृपा से आज वे पुत्र-पौत्र, धन, ऐश्वर्य से पूर्ण सुखी हैं। पिताजी एक काम यह किया करते थे कि जब भी इलाके में अकाल पड़ा तब दूर-दूर रहने वाले परिचित लोगों से दान मंगवाकर कुल गांव में एकत्रित करके गउओं के लिए चारे का प्रबन्ध करके सैकड़ों भूखी, कमजोर बिना दूध देने वाली गाउओं को बचाया करते थे। इसीलिए जब उनकी मृत्यु २७ अप्रैल १९८७ में हुई तब भी अकाल पड़ा हुआ था, तब गउओं को बचाने के लिए एक योजना बनाई और डेढ़ लाख रुपए तुरन्त इकट्ठे किए। जिसमें पूज्य चाचा रतिराम शर्मा का विशेष हाथ था और उन रुपयों से चारे का प्रबन्ध करके सैकड़ों गो-वंश को बचाया। इस प्रकार राम बिलास शर्मा (भाजपा-अध्यक्ष) हरियाणा और धर्मवीर (संसदीय मन्त्री हरियाणा) आए हुए थे। उन्होंने सरकार से बहुत सहायता दिलवाई, जिससे वर्षा होने तक चारा का काम सुचारू रूप से चलता रहा। इसके बाद कुछ लूली-लंगड़ी व कमजोर गाय बच गई और १५-२० हजार रुपए बच गए तब यह दोनों चीजें भिवानी गोशाला को देकर इस पवित्र योजना को समाप्त किया। मेरी स्व. माताजी बड़ी समझदार, सुयोग्य, मृदुभाषी, दयालु व अतिथि सेवाभावी थी। इसीलिए पिताजी इतने परोपकारी कार्य कर सके।

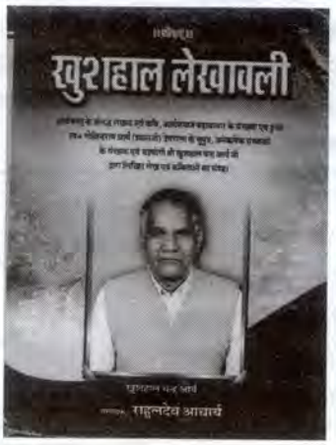

मेरे पिता जी के दो छोटे भाई थे जिनके नाम स्व. बनवारी लाल आर्य व स्व. जवाहरलाल आर्य था। मेरे ये दोनों चाचाजी भी बड़े भाई का अनुशरण करते हुए पक्के आर्य समाजी थे। चाचा बनवारीलाल अपने अन्तिम दिनों में कन्या गुरुकुल पंचग्राम को उन्नीस वर्ष तक प्रधान रहकर गुरुकुल की काफी उन्नति की और हरियाणा की अच्छी कन्या गुरुकुलों में उसको स्थान दिला दिया। चाचा जवाहरलाल ने चाचा रतिराम शर्मा के सहयोग से सिलीगुड़ी में आर्य समाज की स्थापना की और करीब बीस वर्ष तक उसमें सभी उच्च पदों पर रह कर आर्य समाज सिलीगुड़ी को भारत की मुख्य आर्य समाजों में स्थान दिलवा दिया। चाचा रतिराम शर्मा को भी मेरे पिता जी अपना तीसरा धर्म का भाई मानते थे। उनको आर्य समाजी बनाने का श्रेय पिताजी को ही है। उसने भी चाचा जवाहर लाल के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर आर्य समाज सिलीगुड़ी को काफी ऊंचाइयों तक पहुंचाया। आज हम चारों परिवारों के पुत्र व पौत्र जहां कहीं पर भी हैं आर्य समाज के ऊँचों पदों पर रहकर आर्य समाज व राष्ट्र की सेवा कर रहे हैं। ऐसे परिवार आपकों आर्य जगत् में कम ही मिलेंगे।

मेरे परिवार सन्बन्धी तो संक्षिप्त परिचय दे दिया। मेरे जीवन सन्बन्धी परिचय यह है कि मैं सन् १९४३ तक गांव देवराला (हरियाणा) की सिर्फ चार क्लास तक के स्कूल में पढ़ा, फिर १९४३ के अप्रैल मास में मै बिरला हाई स्कूल पिलानी में तीसरी कक्षा में भर्ती हुआ। कारण वहां अंग्रेजी तीसरा कक्षा से आरम्भ होती है। वहां मै १९५१ में मार्च मास में मैट्रिक पास करके देवराला आ गया। देवराला में डेढ़ वर्ष रह कर सन् १९५२ की दीपावली के दूसरे दिन चलकर सिलीगुड़ी मेरे स्व. चाचा जवाहरलाल, स्व. बड़े भाई गजानन्द आर्य के पास आ गया जो किराने की दुकान करते थे। मेरे स्व. सबसे बड़े भाई प्रकाशचन्द्र आर्य ने २१ अप्रैल १९५३ में शिवदत्त राय राम गोपाल की गद्दी से अलग होकर अपनी स्वयं की ९४ लोअर चितपुर रोड (सियांकटरा) में एक तल्ला में तेजराम गोविन्दराम के नाम से कर ली। गद्दी करते ही मुझे सिलीगुड़ी से बुला लिया । मैं २४ अप्रैल १९५३ को गद्दी में पहुंच गया। हम दोनों भाइयों ने खूब परिश्रम व ईमानदारी से काम करके गद्दी के कार्य को खूब बढ़ाया। ५-६ वर्ष बाद हमने अपने सबसे छोटे भाई चि. जयदेव आर्य को भी कलकत्ता बुला लिया और हम तीनों भाइयों ने मेहनत, ईमानदारी

व लगन के साथ काम करने से हमारी गद्दी का नाम अच्छी गद्दियों में आने लगा। इसी बीच मेरा विवाह ३१ मई १९५६ में एक दृढ़ आर्य समाजी व परम साहसी स्व. लाला भालाराम खरैंटी (रोहतक) वाले की पौत्री विमलादेवी आर्य से हो गया। इस विवाह में किसी प्रकार का दहेज, दान दिखावा न होने से तथा दोनों तरफ से कट्टर आर्य समाज होने से एक आदर्श विवाह माना जाता है।

हम चारों भाई सन् १९७३ में अलग-अलग हो गए। मैं २५ दिसम्बर १९७३ में अपनी अलग गद्दी- ८० महात्मा गांधी रोड (दो तल्ला) कोलकात्ता-७ में, गोविन्द राम आर्य अण्ड संस के नाम से कर ली। गद्दी करने के साथ ही मैंने निश्चिय किया कि मैं कभी झूठ नहीं बोलूंगा, किसी को धोखा नहीं दूंगा, समय और वचन का पालन करूंगा और आर्य समाज बड़ा बाजार के रविवारीय सत्संग में जहां तक सम्भव होगा जरूर-जरूर जाऊंगा। ईश्वर की कृपा से मैं इन सब बातों का पूरा पालन कर रहा हूं। कुछ लोग कहते हैं, झूठ बोले बिना व्यापार का काम नहीं चलता, परन्तु उनका यह कहना झूठ है। ईश्वर की अपार कृपा से मेरा काम दिन दुगना रात चौगना बढ़ा। अब मैं चारों बच्चों को काम सम्भलवा कर आर्य समाज, राष्ट्र व गो रक्षा का कार्य कर रहा हूं। साथ ही पढ़ने-लिखने का कार्य भी चलता रहता है।

मैं आर्य समाज का बड़ा बाजार का करीब ६५ वर्ष से सदस्य हूं और इधर ४०-४२ वर्ष से तो मैं समाज के सभी ऊच्च पदों पर रहकर सेवा की है, विशेषकर धन संग्रह का काम खास जिम्मेवारी से किया है। अब मैं इस समाज का संरक्षक व ट्रस्टी हूँ। मैं आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल का तीन साल तक सफल कोषाध्यक्ष रहा और वरिष्ठ उप प्रधान, उप प्रधान, संगठन मन्त्री, उप-मन्त्री रह कर भी सराहनीय कार्य किया है। कुछ दिनों के लिए मुझे प्रधान पद भी सम्भालना पड़ा। अब मैं अन्तरंग सदस्य हूं। मैं २०-२५ वर्ष से श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर का ट्रस्टी हूं और हर वार्षिक उत्सव पर २०-२२ हजार रुपए दानदाताओं से लेकर तथा कुछ मेरे मिलाकर भेजता हूं। ऋषिबोध उत्सव पर टंकारा को भी १५-२० वर्षों तक २०-२० हजार रुपए भेजता रहा अब कुछ वर्षों से बन्द है। सन् २०१० में स्वर्ण जयन्ती दिवस के अवसर पर टंकारा में पूज्य रामनाथ जी सहगल ने विजय मल्हौत्रा (भाजपा नेता) के कर कमलों से मेरा सम्मान करवाया। गुरुकुल हरिपुर का मैं संरक्षक हूं। इस पद पर रह कर मैंने गुरुकुल की काफी सेवा की। नौ कमरे साढ़े तेरह लाख के, एक हॉल पांच लाख का तथा ८-९ लाख रुपए गउओं, ब्रह्मचारियों व अल्मारियों के लिए भेजे। इस प्रकार २७-२८ लाख रुपए का सहयोग गुरुकुल को दिलवाया। जिसमें एक कमरा एक लाख का और ४०-४५ हजार रुपए नगदी मैंने दिए। बाकी दानदाताओं से दिलवाए। खुशहाल लेखावली की कुल ५०० प्रतियां बनवाई थी, जिसमें मेरे लिए ३२५ लेख, ७८ कविताएं, ४३ आर्य जगत् के महान् पुरुषों की शुभकामनाएँ, प्रशंसकों के पत्र और मैं २०-२२ जगहों से सम्मानित हुआ हूं। ये सब चित्र सहित इस ग्रन्थ में छपे हुए हैं। ४७५ प्रतियां आर्य जगत् के अधिकतर वैदिक विद्वान, सम्पादक, गुरुकुलों के आचार्य व परिचित लोगों को भेज दिए है। अब केवल २५ प्रतियां बाकी है। जरूरत समझेंगे तो और छपवा लेंगे। ग्रन्थ काफी आकर्षक व पठनीय है। मेरा सभी पाठकों से विनम्र निवेदन है कि वे ग्रन्थ को जरूर-जरूर पढ़े तथा प्रतिक्रिया लिखें। - खुशहालचन्द्र आर्य, कोलकाता

बीसवां आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

दिनांक ६ मई २०१८
स्थान- आर्य समाज, कीर्ति नगर नई दिल्ली

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्णय एवं निर्देशानुसार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्य परिवार युवक-युवति वैवाहिक परिचय सम्मेलन आगामी ६ मई २०१८, रविवार को प्रात: १० बजे से आर्य समाज कीर्ति नगर, नई दिल्ली में आयोजित किया जा रहा है। नई दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री विनय आर्य ने बताया कि इससे पूर्व १९ आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन आयोजित किए जा चुके हैं, जिसके अच्छे परिणाम सामने आए हैं।

आर्य परिवार युवक-युवति वैवाहिक परिचय सम्मेलन को लेकर आर्य परिवारों में भारी उमंग और उत्साह है। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुसार युवक-युवतियों के युवावस्था में परस्पर समान गुण, कर्म और स्वभाव वाले युवक एवं युवती से ही विवाह करना चाहिए। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए जाति बंधनों को तोड़कर वर्ण के अनुसार आर्य संस्कारों से युक्त नई पीढ़ी के निर्माण के लिए इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया है जिसमें आर्य परिवारों को एक ही स्थान पर आर्य संस्कारों से युक्त वर और वधु के चयन का अवसर प्राप्त हो सके।

आर्य परिवारों से आग्रहपूर्वक अनुरोध है कि अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से संबंध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्रतिशीघ्र रजिस्ट्रेशन करवाने का कष्ट करें। रजिस्ट्रेशन फार्म हेतु अपनी आर्य समाज अथवा आर्य समाज कीर्ति नगर नई दिल्ली से सम्पर्क करें। साथ ही हमारी वेबसाइट www.thearysamaj.org से भी डाउनलोड कर सकते हैं तथा ऑनलाईन लिंक matrimony.thearyasamj.org पर भी फार्म भर सकते हैं।

रजिस्ट्रेशन फार्म २० अप्रैल २०१८ तक भरकर साथ में निर्धारित पंजियन शुल्क ३००/- (तीन सौ रुपए) का ड्राफ्ट संलग्न कर अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम एक्सिस बैंक खाता सं. ९१००१०००१८१६१६६ करोल बाग शाखा IFSC-UTIB0000223 में जमा कराकर रसीद इस फार्म के साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली- ११०००१ को भिजवायें। जिससे आशार्थी का नाम परिचय विवरण पुस्तिका में प्रकाशित किया जा सके। सम्मेलन में भाग लेने बाहर से आने वाले आर्य परिवारों के आवास, चाय-नाश्ते व दोपहर भोजन की नि:शुल्क व्यवस्था कार्यक्रम स्थल पर रहेगी। अधिक जानकारी के लिए इन महानुभावों से सम्पर्क करें-

राष्ट्रीय संयोजक:अर्जुनदेव चड्ढा	प्र. दिल्ली आ.प्र.स. :धर्मपाल आर्य
०९४१४१८७४२८	०९८१००६१७६३
संयोजक दिल्ली: एस.पी. सिंह	महामन्त्री: विनय आर्य
०९५४००४०३२४	०९९५८१७४४४१

वैदिक सत्संग एवं चतुर्वेद शतकम

दिनांक १६ से २० अप्रैल २०१८ तक

आर्य समाज मोहन बड़ोदिया, जिला-शाजापुर (म.प्र.) के तत्वावधान में बाम्बे-आगरा राष्ट्रीय राजमार्ग क्र. ३ पर स्थित सारंगपुर (गुना-मक्सी रेलवे लाईन पर) से १३ किलोमीटर दूरी पर सारंगपुर-आगर मार्ग पर स्थित मोहन बड़ोदिया तहसील मुख्यालय पर आर्य जगत् की सुविख्यात भजनोपदेशिका सुश्री अंजलि आर्या तथा मालवा क्षेत्र के सुविख्यात भजनोपदेशक, आर्य वीर दल मध्यप्रदेश के सिरमौर पं. काशीराम जी अनल के मुखारविन्द से चतुर्वेद शतकम तथा वैदिक सत्संग आयोजित किया जा रहा है। उपरोक्त आयोजन में समस्त धर्मनिष्ठजनों की उपस्थित सादर प्रार्थनीय है।

निवेदक एवं सम्पर्क

गोकुल आर्य- ७८६९०५४३४२, गोपाल सोनी- ९९८१२३४१३५

प्रवेश प्रारम्भ-सत्र- २०१८-२०१९

उत्तम शिक्षा संस्कार एवं स्वास्थ्य के लिए अपने बच्चों को गुरुकुल शिक्षा पद्धति पर आधारित विद्यालयों में प्रवेश करायें, इसी आधार पर वेदयोग महाविद्यालय छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु अग्रसर है। स्वच्छ एवं शान्त वातावरण हरे-भरे वृक्षों के मध्य केहलारी के निकट खण्डवा-मूंदी मार्ग पर स्थित है। प्रवेश कक्षा पांच से लेकर आठ तक के छात्रों की सामान्य परीक्षा लेकर किया जाता है। प्रवेश तिथि एक मई से लेकर ३० जून तक।

आचार्य सर्वेश 'सिद्धान्ताचार्य'

वेदयोग महाविद्यालय

आवासीय वेदयोग संस्कृत उच्च माध्यमिक विद्यालय,

गुरुकुल आश्रम मार्ग केहलारी, जिला- खण्डवा (म.प्र.)

चलभाष- ९१७९१८३८३३, ९१६५१६८१५८

१०८ कुण्डीय विश्व कल्याण महायज्ञ के साथ स्वर्ण जयन्ती वर्ष समारोह का शुभारम्भ

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द सेवाश्रम थांदला जिला झाबुला म.प्र. के स्थापना को पचास वर्ष पूर्ण होने पर स्वर्ण जयन्ति समारोह वर्ष का शुभारम्भ ग्राम पिपलोदा बड़ा, तह.-मेघनगर जिला- झाबुआ (म.प्र.) में धर्म रक्षा समिति के माध्यम से दिनांक २०,२१,२२ फरवरी को आचार्य दयासागर जी के कुशल नेतृत्व में १०८ कुण्डीय वैदिक विश्व कल्याण महायज्ञ व भक्ति सत्संग का विराट आयोजन धूम-धूम के साथ ५ हजार लोगों के उपस्थिति के साथ सम्पन्न हुआ।

आज से ५०वर्ष पूर्व थांदला में हमारे पूर्वज आर्यजनों ने ईसाइयों के प्रकोप से जिले में बड़ी तेजी से हो रहे धर्मान्तरण पर अंकुश लगाने व जन-जन में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम-योगेश्वर श्री कृष्ण- महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारों का स्वजीवन, स्वपरिवार, स्वसमाज व स्वदेश बनाने की दृष्टि से महर्षि दयानन्द सेवाश्रम थांदला की स्थापना की थी।

इन पचास वर्षों में सेवाश्रम द्वारा चलाए गए बालक आश्रम, कन्याश्रम, छात्रावास, बालवाड़ी, शिक्षा केनद्र, स्वास्थ्य केन्द्र, वैचारिक क्रान्ति शिविर, कन्या जागृति शिविर, मद्य निषेध शिविर, अस्पृष्यता निवारण शिविर, आर्य वीर दल व चरित्र निर्माण शिविर, वैदिक पद्धति से बड़े स्तर पर विवाहों का आयोजन, वेद प्रचार आयोजन, भजन मण्डली आदि अभियानों से अेक सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक सुधार हुए। १९६८ से संचालित सेवाश्रम के पचास वर्ष पूर्ण होने पर आगामी वर्ष २०१९ के जनवरी में महर्षि दयानन्द सेवाश्रम थांदला झाबुआ (म.प्र.) में अखिल भारतीय स्तर पर विशाल वेद एवं वैदिक संस्कृति सम्मेलन, वैदिक जन जातिय सम्मेलन व महायज्ञ करने का निर्णय लिया गया है। जिसका शुभारम्भ उपरोक्त कार्यक्रम के माध्यम से किया गया है।

विशाल आयोजन को सम्पन्न करने की जिम्मेदारी सेवाश्रम के कोषाध्यक्ष श्री गुलाब सिंह आर्य, सेवाश्रम सदस्य श्री कैलाश गेहलोत, सेवाश्रम उपाध्यक्ष वरिष्ठ समाज सुधारक व राजनैतिक कार्यकर्ता भुरका भाई, राकेश भूरिया व साथियों के मजबूत कन्धों पर संयोजकत्व का भार देकर हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ आयोजन में अत्यन्त पीछड़े क्षेत्र व ईसाइयत के कुचक्र से प्रभावित चार ग्रास पंचायत पिपलोदा बड़ा, पीपल खूंटा, काजली डुंगरी, विसलपुर तथा आसपास के क्षेत्र को सम्मिलित किया गया।

महायज्ञ के अन्तिम दिन २२ फरवरी को मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के विद्वान व कर्मठ महामन्त्री माननीय प्रकाश जी आर्य ने आयोजन को सफल बनाने वाले कार्यकर्ताओं को फूल माला पहनाकर आशीर्वाद दिया तथा अपने प्रेरणास्पद व सारगर्भित उद्बोधन तथा आर्थिक सहयोग प्रदान करते हुए धर्म रक्षा के लिए चलाए जा रहे सभी अभियानों में सहयोग देने का आश्वासन दिया।

विगत २५ वर्षों से मध्यप्रदेश व राजस्थान में सेवाश्रम की सामाजिक व सांस्कृतिक गतिविधियों को पूर्णतः समर्पित जीववर्धन जी शास्त्री ने सेवाश्रम के इतिहास की ओर इंगित करते हुए पूजनीय माता प्रेमलता शास्त्री व ईश्वर रानी माताजी के योगदान की चर्चा करते हुए आपसी भाई चारे से प्रेम पूर्वक स्वधर्म में रहने का संदेश दिया।

जिसमें आचार्य सुरेशचन्द्र जी शास्त्री के अत्यन्त सारगर्भित प्रवचन हुए। पं. दिलीप आर्य. पं. विनोद आर्य व पं. सुरेश आर्य के द्वारा गाए गए गीत व वैदिक भजनों ने श्रृंखला की उत्साह का वातावरण बना दिया।

पं. धर्मवीर शास्त्री, पं. रणवीर शास्त्री, पं. संजय शास्त्री, पं. पंकज शास्त्री आदि विद्वानों ने याज्ञिक कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महर्षि दयानन्द सेवाश्रम थांदला के शिक्षक महानुभाव एवं काकनवानी छात्रावास व विद्यालय के शिक्षक महानुभावों का प्रयास सराहनीय रहा।

सेवाश्रम के अध्यक्ष विश्वास जी सोनी व संगीता सोनी ने १५० साड़ी व ७५ किलो घी की व्यवस्था कर अनुकरणीय कार्य किया तथा नगर पालिका परिषद् थांदला के अध्यक्ष माननीय भाई बंटी डामोर ने यज्ञ व्यवस्था में आर्थिक सहयोग दिया। आर्य समाज रतलाम ने यज्ञपात्रों की विशेष व्यवस्था की तथा आर्य समाज सैनिक विहार दिल्ली के पूर्व मन्त्री माननीय विनय अग्रवाल जी से चार क्विंटल हवन सामग्री का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ। पिपलोदा बड़ा के सरपंच श्री नाथूसिंह निनामा, दीपेश निनामा, बदिया वारिया, श्री दिनेश जी, श्री नाथ जी, श्री बाबूभगत जी, शिक्षक नरेन्द्र पारगी, शिक्षक महेन्द्र जी, डॉ. जामुसिंह आदि का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ।

गायत्री मन्त्र और वैदिक भजनों का गान करते हुए हजारों ग्रामवासियों को देखकर ऐसा लग रहा था मानो श्री राम युग व वैदिक स्वर्ग यहीं हैं। आचार्य दयासागर के कुशल नेतृत्व व ब्रह्मत्व में सम्पादित यह कार्य युगों-युगों तक याद रहेगा।

संयोजक - गुलाबसिंह आर्य

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस मनाया गया

आर्य समाज खेड़ाअफगान, सहारनपुर (उ.प्र.) पर महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्म दिवस उपलक्ष्य में आयोजन किया गया। यज्ञ पश्चात् संस्था प्रधान आदित्य प्रकाश जी गुप्त ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि समय-समय पर अनेक आत्माएं इस धरती पर अवतरित होकर हमें मानव सेवा और प्रभु भक्ति का पाठ पढ़ाती हैं। स्वामी दयानन्द एक दार्शनिक, अद्‌भुत समाज सुधारक और साधक थे। कौन जानता था सन १८२४ के गुजरात के टंकारा ग्राम में जन्मा बालक मूलशंकर एक दिन अपने वैदिक ज्ञान के प्रचार, नारी शिक्षा आन्दोलन, विधवा विवाह, पाखण्ड खण्डन और आर्य समाज जैसी आदर्श संस्था का जन्मदाता बनेगा।

स्वामी दयानन्द जी ने अपने गुरु विरजानन्द जी महाराज को ढूंढने में लगभग पंद्रह वर्ष व्यतीत किए। सारा बाल्यकाल जीवन कष्टपूर्ण साधना में बिताया और विरजानन्द जी जैसे दिव्य गुरु को पाकर जो समस्याएं जीवन में आई थी उन समस्याओं का समाधान खोज लाए और जन साधारण के सामने आध्यात्मिक, सामाजिक और सांसारिक समस्याओं का हल प्रस्तुत किया। शंकाओं का संतोषजनक उत्तर दिए। अंग्रेज मिशनरी हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन कर रही थी, हिन्दुओं को उनकी श्रीराम और श्रीकृष्ण जी की गौरवमयी संस्कृति से अवगत कराकर ईसाई बनने से रोका। बड़े से बड़े पादरी तथा वायसराय के समक्ष निर्भिकता पूर्वक ईसाई धर्म की कमियों को उजागर किया। स्वामी जी के पास भयनाम की वस्तु नहीं थी। स्वराज्य, स्वतंत्रता, स्ववेष भूषा, स्वसंस्कृति और स्वदेशी यह सभी हमें स्वामीजी की देन है। सत्यार्थ प्रकाश जैसा अमूल्य ग्रन्थ हमें देकर जो हिन्दू धर्म कच्चे धागे की तरह कच्चा था उसे सभी मतों का मूल और सभी से सच्चा और पक्का सिद्ध कर गए।

आज युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज का जन्मदिन मना रहे हैं। स्वामीजी महाराज ने सन. १८७५ई. में आर्य समाज की स्थापना मुम्बई में की थी और आर्य समाज में अपना स्थान माली का बताया स्वयं उन्हीं के शब्दों में ''**मैंने आर्य समाज का उद्यान लगाया है, इसमें मेरी अवस्था माली की सी है। पौधों में खाद डालते समय खाद और मिट्टी माली के सिर पर पड़ ही जाया करती है। मुझ पर राख और धूल जितनी चाहे पड़े, मुझे इसका कुछ भी ध्यान नहीं परन्तु वाटिका हरी भरी रहे और निर्विघ्न फूले फले।**''

स्वामीजी लिखते हैं कि सत्य भाषण और सत्य आचरण से उत्तम धर्म का कोई लक्षण नहीं है। **वेदोऽखिलो धर्म मूलम्** अर्थात् वेद अखिल धर्म का मूल है। हमें **वेदों की ओर लोटो** का नारा दिया। वेद सभी ज्ञान विज्ञान कर्म उपासना की पुस्तक है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जयंती पर रैली

उदयपुर। आर्य समाज हिरण मगरी, आर्य समाज पिछौली एवं महर्षि दयानन्द कन्या विद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में महर्षि दयानन्द सरस्वती की जयन्ति के अवसर पर समाजजनों, छात्राओं, अध्यापिकाओं ने सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ जागरण रैली निकाली। बालिका पढ़ाओ, बेटी बचाओ, छूआछूत मिटाओ, मद्यपान, धूमपान निषेध के खिलाफ घोष लगा जागरुकता का संदेश दिया। आर्य समाज के संरक्षक डॉ. अमृतलाल तापड़िया के निर्देशन में निकाली गई इस रैली में सर्वश्री प्रेमचंद गुप्त, भंवरलाल आर्य, सत्यप्रिय शास्त्री, सुरेश चौहान, कृष्णकुमार सोनी, श्रीमती शारदा गुप्त, पूषा सिंधी, प्रकाश श्रीमाली, इन्द्र प्रकाश यादव, राजकुमार गुप्ता, सरला गुप्ता आदि ने उत्साह से भाग लिया एवं वैदिक धर्म एवं देश भक्ति के उद्‌घोष लगाये।

ऋषि बोध दिवस मनाया गया

शिवरात्रि पर आर्य समाज में सर्वप्रथम यज्ञ किया गया। आज के यज्ञमान निश कुमार सपत्नीक थे। इस अवसर पर आर्य समाज खेड़ा अफगान के प्रधान आदित्य प्रकाश गुप्त ने कहा कि संसार में नाना प्रकार की घटनाएं प्रत्येक मनुष्य के समक्ष घटती रहती हैं। उन पर कोई ध्यान नहीं देते, उन्हें भुला देते हैं, परन्तु यही घटनाएं महापुरुषों के जीवन में परिवर्तन कर देती है। क्रान्ति उत्पन्न कर देती है। इसी प्रकार की शिवरात्रि की घटना ने वर्तमान शताब्दी धार्मिक इतिहास की अभूतपूर्व क्रान्ति उत्पन्न कर दी। गुजरात प्रान्त के मोरवी राज्य में टंकारा ग्राम है, इसी ग्राम के पंडित कृष्णलालजी के यहां जन्मे मूलशंकर को पांचवे वर्ष की अवस्था में देवनागरी सीखाकर बहुत से स्त्रोत और श्लोक कण्ठाग्र करा दिए थे। मूलशंकर का आठवें वर्ष में यज्ञोपवित संस्कार हुआ। मूलशंकर को यजुर्वेद कण्ठाग्र कराया गया। चौदहवें वर्ष में शिवरात्रि के पर्व पर शैवमत की दीक्षा देने की तैयारी की गई। मूलशंकर जी को नियमपूर्वक व्रत रखकर इनके महात्मय को बताया गया पिताजी आदि सभी भक्त गाढ़ निद्रा में सो गए, किन्तु श्रद्धालु बालक मूलशंकर भक्ति के आवेश में आकर आंखों में छींटे मार-मार कर जागता रहा। कुछ देर पश्चात् वह बालक मूलशंकर देखता क्या है कि एक मूषक (चूहा) पिण्डी पर आकर चढ़ावे को आकर खाने लगा और उछल कूद मचाने लगा। बालक मूल शंकर के मन में उसको देखकर शंकाओं का समुद्र उमड़ पड़ा। वह सोचने लगा शिव तो पुराण में अस्त्र, त्रिशूल से युक्त समर्थ सर्वशक्तिमान वर्णित है। यह कैसे सम्भव है वह अपने ऊपर से इस चूहे को नहीं हटा सकता। मन को बड़ी शंका उत्पन्न हुई, पिता जी को जगाया अपनी शंका का उनसे निवेदन किया, परन्तु मूलशंकर का सन्देह निवृत्त न हुआ तभी उसने मन में निश्चय कर लिया कि मैं सच्चे शिव का साक्षात्कार इस घटना के कारण दयानन्द जी ने मूर्तिपूजा के विरुद्ध संग्राम किया।

देश के अनेक विद्वानों से मिलकर इस सत्य को जानने का प्रयास किया। भारत के मठों-मन्दिरों का भ्रमण किया और सच्चे गुरु को जानने के लिए दिन रात एक कर दिया। छत्तीस वर्ष की अवस्था होने पर मथुरा में गुरु विरजानन्द जी के पास जाकर मन की शंकाओं का निवारण किया। वेदाध्ययन किया। उन्होंने बताया वेदों में मूर्ति पूजा नहीं है। इस बीच दयानन्द जी को अनेक प्रकार के लालच दिए गए। गुरु जी का आदेश पाकर नाना प्रकार की कुरीतियों को दूर करने का बीड़ा उठाया और '**वेदों की ओर लौटो**' हमें सन्देश दिया। अमित कुमार जी ने सारगर्भित भजन सुनाये। सभी आर्य महाशयों को यह शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। आज से दयानन्द के बताए रास्ते पर चलने का संकल्प लें। अन्त में प्रधान आदित्य प्रकाश जी ने सभी का धन्यवाद दिया। प्रसाद वितरण किया गया।

इस अवसर पर वेदमुनिजी, चरणसिंह, वीरेन्द्र कुमार, शशिकान्त, संजय कुमार, कुंवर पालसिंह, सुरेन्द्र कुमार, सन्नी कुमार, सोनू कुमार, श्रवण कुमार, ब्रह्मसिंह, यशपाल, महीपाल, वेदान्त कुमार, सुमित कुमार, वेद भूषण, रविकुमार, संदीप कुमार आदि बड़ी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित थ

प्रभात आश्रम के विद्यार्थी को प्रथम स्थान

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के बोधोत्सव के उपलक्ष्य में उनकी जन्मभूमि टंकारा गुजरात में महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित स्वामी विरजानन्द पुरस्कार (योगदर्शन एवं वेदभाष्य प्रतियोगिता) में प्रभात आश्रम के विद्यार्थी तरुण कृष्ण ने प्रथम स्थान प्राप्त कर पांच सहस्त्र की प्रतियोगिता जीती। प्रभात आश्रम की परम्परानुसार इस अवसर पर हर्षोल्लासपूर्वक सम्मान-सभा का आयोजन किया गया और तरुण कृष्ण को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर परमपूज्य विवेकानन्द सरस्वती जी ने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि- यह सम्मान सभा इसलिए आयोजित की जाती है कि इससे प्रेरित होकर विभिन्न प्रतियोगिताओं में सहभागिता हेतु अन्य छात्रों को भी उत्साहपूर्वक आगे आने का प्रयास करना चाहिए।

गणतन्त्र दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया

आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर द्वारा संचालित दयानन्द कन्या विद्यालय में गणतन्त्र दिवस हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. (डॉ.) प्रेमचंद गुप्ता ने ध्वजारोहण किया। समारोह में श्री रामचन्द्र सोनी, बैंक ऑफ बड़ौदा के उप क्षेत्रीय प्रबंधक श्री एस.के. राठी, लायन्स क्लब एवं लायनेस क्लब मेवाड़ गौरव की श्रीमती रेणु चौधरी, श्रीमती चन्द्रकला चौधरी, श्रीमती कल्पना शर्मा, डॉ. एस.के. भारद्वाज, श्री राम निवास गादिया, विशिष्ट अतिथियों के रूप में उपस्थित हुए।

इस अवसर पर विद्यालय की छात्राओं ने देश भक्ति से सराबोर लोकगीत, लोकनृत्य, नृत्य नाटिका, बुलबुल, शारीरिक प्रदर्शन एवं भारतीय गणतंत्र पर हिन्दी एवं अंग्रेजी में भाषण, आर्य समाज के नियम आदि प्रस्तुतियां दी। विद्यालय के संरक्षक डॉ. अमृत लाल तापड़िया, श्रीमती शारदा गुप्ता, प्रधान श्री भंवरलाल आर्य एवं श्रीमती ललिता मेहरा ने अतिथियों का स्वागत सम्मान किया। विद्यालय की मानद निदेशक श्रीमती पुष्पा सिंधी ने गतिविधियों का परिचय कराया। मंत्री कृष्ण कुमार ने अतिथियों का आभार प्रदर्शित किया। कार्यक्रम का संचालन भूपेन्द्र शर्मा द्वारा किया गया।

ऋषि बोध दिवस पर यज्ञ, सत्संग सम्पन्न

आर्य समाज हिरण मगरी उदयपुर (राज.) की ओर से महर्षि दयानन्द सरस्वती के बोध दिवस (महाशिवरात्रि) पर विशेष यज्ञ सत्संग सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि वक्ता आर्य समाज पिछोली के मन्त्री वैदिक विद्वान डॉ. सत्यप्रिय शास्त्री ने महाशिवरात्रि पर्व बोध दिवस की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रतिदिन हम सबके सामने अनेक घटनाएं घटित होती है, किन्तु हम सामान्यजन पर उनका कोई प्रभाव नहीं होता, किन्तु महापुरुषों के जीवन पर छोटी सी घटनाएं क्रांतिकारी परिवर्तन लाकर जगत् का कल्याण करती है। ऐसी ही घटना आज के दिन महर्षि दयानन्द के जीवन में घटित हुई और उन्होंने समाज में व्याप्त अंधविश्वास, कुरीतियों को दूर करने के साथ स्वराज्य की अवधारणा को सबसे पहले समाज के सामने रखा। उसी की परिणीति में हमें स्वतंत्रता के रूप में प्राप्त हुई। सभा के अध्यक्ष डॉ. अमृतलाल तापड़िया ने महाशिव रात्रि पर महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन पर घटित घटना का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन भूपेन्द्र शर्मा ने किया।

पं. नन्दलाल निर्भय को पुत्र शोक

आर्य जगत् के प्रख्यात वैदिक विद्वान्, सिद्धहस्त लेखक, ओजस्वी कवि. पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य ग्राम बहीन (पलवल) हरियाणा के ज्येष्ठ पुत्र श्री ब्रह्मदेव आर्य का गत दिनों हृदयगति रुक जाने से पार्क अस्पताल फरीदाबाद (हरियाणा) में निधन हो गया, जिसका शान्तियज्ञ आचार्य श्री नेतराम शास्त्री होडल (हरियाणा) ने तिथि १८.२.२०१८ को पूरा कराया तथा बताया कि आत्मा अमर है तथा शरीर नश्वर है। मानव तन सबसे कीमती है इसलिए हमें इसका महत्व समझते हुए सदैव शुभ कर्म करने चाहिए। आचार्य जी के प्रवचन के पश्चात् श्रद्धांजलि सभा हुई।

श्रद्धांजलि सभा में श्री उदयभान विधायक होडल (हरियाणा) ने कहा कि पं. नन्दलाल निर्भय जैसे ईश्वर भक्त धर्मात्मा देशभक्त हैं ऐसे ही श्री ब्रह्मदेव शर्मा थे। हमें भी सच्चा देशभक्त बनना चाहिए। श्री बालकिशन आर्य वेद प्रचारक ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा भेजा गया शोक पत्र एवं सांत्वना संदेश पढ़कर सुनाया। हरियाणा के प्रसिद्ध अधिवक्ता चौ. राजेन्द्रसिंह पलवल ने दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा पं. नन्दलाल निर्भय के परिवार को इस आघात को सहन करने की शक्ति प्रदान करने को ईश्वर से प्रार्थना की।

इस अवसर पर श्री भगतसिंह आर्य मथुरा, श्री श्याम सुन्दर शर्मा खाम्बी (पलवल), श्री वेदप्रकाश आर्य, श्री सत्यप्रकाश आर्य दिल्ली, श्री तुलसीराम आर्य, श्री धर्मदेव आर्य दिल्ली, श्री खजानसिंह शर्मा बहीन (पलवल), श्रीमती सावित्री देवी, श्रीमती अंगुरी देवी, श्रीमती ब्रह्मा देवी, श्रीमती शकुन्तला देवी, श्रीमती प्रभावती आर्या, श्रीमती दुर्गा बाई आर्या, श्री जयदेव आर्य, श्री सुभाष चन्द्र आर्य, श्री उत्तमप्रकाश आर्य तथा मान्यता देवी उपस्थित थे। शान्ति पाठ के पश्चात् श्रद्धांजलि सभा का समापन हुआ।

- जगदीशचन्द्र आर्य, बहिन

डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डे जी को मातृशोक

आर्य जगत् के विद्वान एवं साहित्यिक डॉ. चंद्रशेखर लोखण्डे जी की माता श्रीमती त्रिवेणी बाई लोखण्डे का दिनांक ३१-०१-२०१८ को रात ३ बजे हृदयावरोध के कारण निधन हो गया। वे ८६वर्ष की थीं। वे एक धर्म परायण तथा वैदिक सिद्धान्तों में श्रद्धा रखने वाली थीं। उनके पति स्व. रामस्वरूप लोखण्डे हैदराबाद मुक्ति संग्राम के सेनानी रहे हैं।

उन्होंने रेणापुर तथा आसपास के महिला एवं नागरिकों की मुस्लिम रजाकारों से रक्षा की इस संघर्ष के समय १९४८ में त्रिवेणीबाई ने डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डे को जन्म दिया। माता त्रिवेणी बाई का दिनांक १-०२-२०१८ को लातूर के मारवाड़ी श्मशानभूमि में वैदिक पद्धति से अन्त्येष्टि संस्कार किया गया। अनेक कार्यकर्ताओं ने उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी।

वैदिक संसार परिवार ज्ञात-अज्ञात समस्त दिवंगत आत्माओं के प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित करता है।

आर्य जगत् की सम्पन्न विविध गतिविधियों की चित्रावली

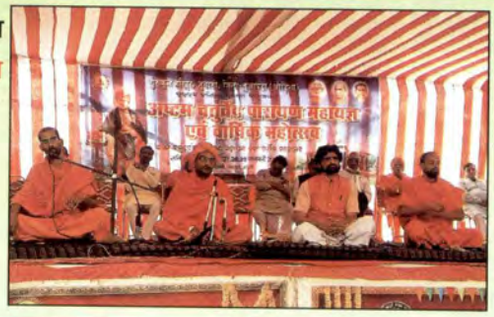

गुरूकुल हरीपुर, उड़ीसा के अष्टम चतुर्वेद पारायण यज्ञ एवं वार्षिकोत्सव में स्वामी शान्तानन्द जी सरस्वती, गुरूकुल भवानीपुर (गुज.) प्रवचन करते हुए

स्वामी अमृतानन्द जी सरस्वती द्वारा गुरूकुल केहलारी (खण्डवा,में पतंजलि योग-साधना कुटी का निर्माण, भूमि पूजन आ.विद्यादेव जी द्वारा किया गया

महर्षि दयानन्द सेवाश्रम थांदला, जिला- झाबुआ,म.प्र. का स्वर्ण जयन्ति वर्ष समारोह का शुभारम्भ १०८ कुण्डिय यज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ

आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर द्वारा गणतंत्र दिवस पर ध्वजारोहण किया गया इस अवसर पर बालीकाओं द्वारा राष्ट्रगान तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये

उदयपुर की आर्य संस्थाओं द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ति पर सामाजिक कुरितियों के विरूद्ध जन जागरण रैली का आयोजन किया गया इस अवसर पर डा.सत्यप्रिय शास्त्री जी ऋषि जीवन पर प्रकाश डालते हुवे

१९ वें आर्य युवक-युवति परिचय सम्मेलन का मुख्य अतिथि महाशय धर्मपाल जी द्वारा दीप प्रज्वलन द्वारा शुभारम्भ

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा (राज.) द्वारा महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव पर रोगी बच्चों को बिस्कीट फल वितरित किये गए तथा लाला लाजपत राय जयन्ति पर राष्ट्र समृद्धि यज्ञ किया गया

वैदिक संसार के संरक्षक सदस्य बनकर आर्थिक सहयोग कर पूण्यार्जन कीजिए

वैदिक संसार के निर्बाध गति से प्रकाशन हेतु आर्थिक सहयोग करने निमित्त एकमुश्त २५ हजार रुपए प्रदान करें अथवा प्रतिवर्ष ५१०० रुपए नकद देने या अन्यों को सदस्य बनाकर प्रतिवर्ष ५१०० रुपए के सहयोग का व्रत (संकल्प) धारण कर वैदिक संसार के संरक्षक सदस्य बनकर पुण्यार्जन कीजिए। - **सम्पादक**

वैदिक संसार के सम्माननीय संरक्षक महानुभाव

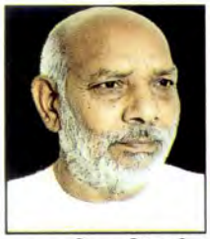
ठाकुर विक्रम सिंह जी
अध्यक्ष-राष्ट्र निर्माण पार्टी, दि

श्री नेमीचन्द जी शर्मा
भामाशाह-राज. सरकार
गान्धीधाम (गुजरात

श्री पूनाराम जी बरनेला
विश्वकर्मा चेरि.ट्रस्ट
जोधपुर (राजस्थान)

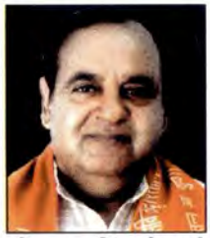
श्री रामफलसिंह जी आर्य
प्रांतीय वरिष्ठ उप प्रधान
सुन्दर नगर, हिमाचल

अधि.रतनलाल जी राजौरा
उपमन्त्रीः आर्य समाज
निम्बाहेड़ा (राजस्थान)

आ.आनन्द पुरूषार्थी
अ.वैदिक प्रवक्ता
होशंगाबाद (म.प्र.)

श्री वेदप्रकाश जी आर्य
आई.ओ.सी.एल.
सवाई माधोपुर (राज.)

श्री लेखराज जी शर्मा
टी.पी.टी. कॉन्ट्रेक्टर
भरतपुर (राज.)

श्री सुनील जी शर्मा
जा.ब्रा.प्रदेशाध्यक्ष
पौण्डा (गोवा)

श्री नानूराम जी जांगिड
जा.ब्रा.जिलाध्यक्ष
धूलिया, महाराष्ट्र

श्रीमती सुमित्रा जी शर्मा
योग प्रशिक्षिका
अहमदाबाद, गुजरात

सुश्री अंजलि आर्या
वैदिक भजनोपदेशिका
घरोंडा, हरियाणा

श्री आदित्यप्रकाश जी गुप्त
खेड़ा अफगान (उ.प्र.)

आचार्य सर्वेश जी
गुरुकुल केहलारी, म.प्र.

श्री रमेशचन्द्र जी दीक्षित
गाधी, बागपत, उ.प्र.

चि. आर्य आदित्य सुपुत्र श्री रामफल सिंह आर्य (संरक्षक वैदिक संसार एवं प्रख्यात वैदिक साहित्यकार) एवं श्रीमती रानी देवी आर्या, भिवानी (हरियाणा) का विवाह दिनांक ११ फरवरी २०१८ को **सौ.कीर्ति** सुपुत्री श्री रामविलास जी एवं श्रीमती सुधा देवी, चरखी दादरी के साथ पूर्ण वैदिक रीति से बिना किसी दहेज के सम्पन्न हुआ। विवाह की कुछ झलकियाँ।

बधाई

यह विवाह एक आदर्श विवाह के रूप में करने का प्रयास किया गया जिसमें आर्य जगत् के उच्च कोटि के विद्वान् आचार्य आर्य नरेश जी ने विशेष रूप से पधार कर वर-वधु को आशीर्वाद प्रदान किया और अन्य उपस्थित लोगों को भी ऐसे ही विवाह करने की प्रेरणा दी। उल्लेखनीय है कि यह विवाह दिन के समय किया गया। बिना किसी दिखावे के अत्यन्त सादगीपूर्ण केवल एक रुपया एवं नारियल शगुन के रूप में लेकर होने वाले इस विवाह पर सभी लोग मुग्ध थे।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक - सुखदेव शर्मा 'जांगिड'-इन्दौर, इन्दौर ग्राफिक्स-२४ कुंवर मण्डली खजुरी बाजार से मुद्रित,१२/३, संविद नगर-इन्दौर-४५२०१८ से प्रकाशित
संपादक - गजेश शास्त्री, एम.पी.एच.आई.एन.- २०१२/४५०६६,डाक पंजीयन-एम.पी./आई.सी.डी./१४०५/२०१५-१७